

पुष्प

भाग ३

कक्षा आठवीं के लिए हिन्दी की
पाठ्यपुस्तक



जम्मू-कश्मीर विद्यालयी शिक्षा परिषद
Jammu and Kashmir Board of School Education

संशोधित संस्करण

Reprint : jan.2024 : 23.2T

सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक:

न्यू प्रिन्ट इण्डिया प्रा लि 8/4Bसाइट-4 इण्डस्ट्रियल एरिया साहिबाबाद, गाजियाबाद (उ.प्र.)



JAMMU AND KASHMIR BOARD OF SCHOOL EDUCATION

जम्मू—कश्मीर विद्यालयी शिक्षा परिषद

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का सुझाव है कि विद्यार्थियों के विद्यालयी जीवन को उनके परिवेश से जोड़ा जाना चाहिए। यह पारंपरिक सोच से हटकर घर और विद्यालय को आपस में जोड़ने का काम करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या इस बुनियादी विचार को व्यवहार में लाने का प्रयास करती है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि यह कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति में वर्णित छात्र केंद्रित व्यवस्था की भावना को साकार करने में सहायक सिद्ध होगा।

शिक्षण का मानव जीवन में अतुलनीय महत्व है। प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थी कुछ नया सीखते हैं। शिक्षा विद्यार्थियों के लिए ज्ञान और व्यवहार के नवीनतम गवाक्ष खोलकर, उनके सपनों को साकार करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मुख्य ध्येय छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर, उनमें नैतिक मूल्यों को जागृत करना है। हमारी शिक्षा नीति निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति कर सके, इसके लिए हमें विद्यार्थियों में सीखने की ललक बढ़ानी होगी। उनकी प्रतिभा और कल्पना-शक्ति पर विश्वास करना होगा। उनमें सृजनात्मक, तर्कसंगत, वैज्ञानिक और सामूहिक चेतना पैदा करनी होगी। उन्हें शिक्षा के विभिन्न माध्यमों से उदात्त जीवन मूल्यों को आत्मसात् करने की प्रेरणा देनी होगी। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए भाषा और साहित्य एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन मायनों में हिंदी एक समृद्ध और सक्षम भाषा है।

इस पाठ्यपुस्तक में ऐसी रचनाओं का संकलन है, जिनके द्वारा छात्रों के हृदय में मानवता और राष्ट्रीय-एकता के प्रति चेतना एवं आस्था उत्पन्न हो और उनका चरित्र-निर्माण हो। यह पुस्तक छात्रों को अपने परिवेश से परिचित करवाने के साथ-साथ उनके अंदर रुचि उत्पन्न करते हुए, भारतीय जीवन-परिस्थितियों को समझने में सहायक सिद्ध होगी और उन्हें एक नवीन दृष्टि प्रदान करेगी।

जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड का मुख्य उद्देश्य परीक्षाओं का आयोजन करने के साथ-साथ शिक्षा में सुधार लाना भी है। इन्हीं सभी बिंदुओं को ध्यान में रखकर इस पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया गया है। जम्मू-कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड उन सभी विद्वज्जनों का धन्यवाद करता है, जिनका इस पुस्तक के निर्माण में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में योगदान रहा।

पुष्प भाग-3 विद्यार्थियों के हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। अपने प्रकाशनों को हम उच्च स्तरीय बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। पुस्तक के अगले संस्करण हेतु आपके अमूल्य सुझाव एवं टिप्पणियां आमंत्रित हैं।

प्रोफेसर (डॉ॰) परीक्षित सिंह मन्हास

अध्यक्ष

जम्मू-कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड



आभार

राष्ट्रीय स्तर पर नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जिस प्रकार की शिक्षण सामग्री की आवश्यकता महसूस की गई थी, ठीक उसी प्रकार की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड ने अनेक शिक्षकों, विषय-विशेषज्ञों, शिक्षा-शास्त्रियों तथा विद्वज्जनों की विभिन्न कार्यशालाएं आयोजित करके अभीष्ट सामग्री को आठवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक 'पुष्प' भाग-3 में संग्रहीत किया है।

पाठ्यपुस्तक 'पुष्प' भाग-3 कक्षा आठवीं को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार विकसित एवं परिवर्धित करने के लिए सी.डी.आर.विंग द्वारा आयोजित कार्यशाला को सफल एवं सार्थक बनाने में निम्नलिखित विद्वानों का योगदान रहा :-

1. श्री केवल कृष्ण शर्मा – व्याख्याता, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मुबारक मंडी, जम्मू।
2. डॉ. बंसी लाल शर्मा – व्याख्याता, विद्यालयी शिक्षा निदेशालय, जम्मू
3. श्री श्याम लाल शर्मा – सेवानिवृत्त व्याख्याता।
4. श्रीमती कांता शर्मा – व्याख्याता, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मुबारक मंडी, जम्मू।
5. श्रीमती शक्ति शर्मा – अध्यापिका, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, रिहाड़ी, जम्मू।

सन् 2020 में पाठ्यपुस्तक संशोधन समिति की कार्यशाला में पाठ्यपुस्तक में सुधार किया गया है। विद्वानों के विभिन्न सुझावों का, पाठ्यपुस्तक में अशुद्धियों का एवं विद्यार्थियों की अनुकूलता का ध्यान रखा गया है। सी.डी.आर.विंग इस पाठ्यपुस्तक के संशोधन के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक संशोधन समिति के परिश्रम के लिए उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है। निम्नलिखित विद्वानों के सहयोग से नवीन सुधार किए गए हैं :-

1. डॉ. रत्नेश कुमार यादव – केंद्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू।
2. डॉ. जसपाल सिंह – जम्मू विश्वविद्यालय।
3. डॉ. शबनम – एस.सी.ई.आर.टी, श्रीनगर।
4. डॉ. वन्दना शर्मा – गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल राबता जम्मू।
5. सुश्री लवली शर्मा – एस.सी.ई.आर.टी, जम्मू।
6. डॉ. रजनी पीर – सेवानिवृत्त (मास्टर)

प्रस्तुत पुस्तक के निर्माण एवं संशोधन के लिए कार्यशाला का आयोजन करने वाले

अधिकारियों के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूं, जिनके सराहनीय योगदान से यह कार्य सफल हुआ।

मैं जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड की पूर्व अध्यक्षा, पूर्व सचिव एवं पूर्व निदेशक अकादमिक का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। जिनके करकमलों द्वारा आरंभ किए गए कार्य को हम पूर्णता की ओर ले जाने में सफल हुए हैं।

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड के प्रकाशन विभाग के संयुक्त सचिव का हृदय से धन्यवाद व्यक्त करता हूं।

इस महान कार्य में उपनिदेशक अकादमिक डॉ॰ यासिर हमीद सिरवाल ने भी अपेक्षित सहयोग दिया, इसके लिए उनका आभारी हूं। अंत में अकादमिक अधिकारी डॉ॰ अनुराधा शर्मा जी का विशेष धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने 'पुष्प' भाग-3 के निर्माण एवं संशोधन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पुस्तक-निर्माण संबंधी कार्यों में तकनीकी सहयोग के लिए जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड के सभी सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

डॉ॰ सुधीर सिंह
निदेशक अकादमिक
जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

यह पुस्तक (पुस्तक परिचय)

उपर्युक्त पाठों का चयन छात्रों का सर्वस्व विकास करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। साहित्य की कहानी, उपन्यास, निबंध, रिपोर्टाज, संस्मरण, लेख, नाटक आदि विधाओं का संकलन किया गया है। इन सभी विधाओं से छात्रों को परिचित करवाना, बौद्धिक विकास, रोचकता, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों का यथार्थबोध कराना भी इन पाठों का मूल उद्देश्य है। कविता के प्रति रुचि, कविता का अध्ययन व सृजन भी बच्चों में उपर्युक्त कविताओं के माध्यम से होता है। छायावादी कवि निराला, प्रगतिवादी कवि दिनकर और प्रयोगवादी कवि रामेश्वर शुक्ल अंचल की कविताओं में युगीन बोध की समस्याओं और आधुनिकीकरण का उल्लेख भी हुआ मिलता है। अन्ततः वर्तमान मूल्यों, सहनशीलता, उदारवादिता, न्यायप्रियता, धार्मिक भावनाओं, समाज के प्रति संवेदना इत्यादि संस्कारों की प्रेरणा पाठ्य-पुस्तक में विविध पाठों के माध्यम से पूरी हो जाती है।

इस कार्य प्रणाली में सभी शिक्षकविदों के सुझाव व चयन प्रक्रिया में सराहनीय योगदान रहा है।

शिक्षक से

विभिन्न विषयों का चयन करते हुए प्रत्येक विधा को यथासम्भव स्थान दिया गया है। इस गुलदस्ते में यदि एक विषय निबंध है तो मन को आनन्द देने वाली कविता के चयन का भी प्रयास किया गया है। विविध भाषा विधाओं से विद्यार्थियों को परिचित कराना भाषा शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। पुस्तक में इसकी पूर्ति करने का प्रयास किया गया है। पाठ-केंद्रित प्रश्नों के साथ-साथ अन्य भाषा

ज्ञान—क्षेत्रों और शब्दों को भी इसमें सम्मिलित किया गया है।

पाठ्यपुस्तक के बीस पाठों में विविध विषय तथा विधाएँ समाहित हैं। प्रथम पाठ **निराला** की कविता **ध्वनि** का संपादित अंश है, इस कविता में प्रकृति के प्रति मानवीय संवेदना को व्यक्त किया है। कहानियों में **कामतानाथ** की कहानी **लाख की चूड़ियाँ** शहरीकरण और औद्योगिक विकास से ग्रामोद्योग के उजड़ने की पीड़ा को चित्रित करती है। यह कहानी नाते—नेह में रचे बसे गाँवों के सहज संबंधों में बिखराव और सांस्कृतिक ह्रास के आर्थिक कारणों को स्पष्ट करती है। **अपराजिता** विकलांग—जीवन से सम्बंधित एक लड़की की कहानी है, जो बच्चों में प्रेरणा—स्रोत के सुदृढ़ स्तंभ का काम करेगी। उनमें से नकारात्मक सोच को समाप्त करेगी, जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण के प्रति प्रेरित कर, उनमें उत्साह का संचार करेगी। **दीवानों की हस्ती** कविता में उत्साह और अलमस्ती का चित्रण है। **चिट्ठियों की अनूठी दुनिया** में संवाद—माध्यमों की विकास यात्रा का रोचक विवरण है। **दिनकर** की कविता **भगवान के डाकिए** में कवि ने बादल और पक्षियों को डाकिए कहा है। **प्लास्टिक जनित प्रदूषण** लेख में प्रदूषण रहित वातावरण का संदेश दिया है। प्लास्टिक के कारण हमारे वातावरण में बढ़ते प्रदूषण से अवगत करवाया है। इसका प्रयोग अनेक बीमारियों का कारण है। इसके दुष्प्रभाव से बचने के लिए प्रेरित किया गया है।

क्या निराश हुआ जाए विभिन्न दुर्व्यवस्थाओं और चारित्रिक मूल्यों की गिरावट के बीच सकारात्मक तथ्यों को रेखांकित करता है। **कामचोर** कहानी एक पारिवारिक समस्या को आधार बनाकर लिखी गई है, जिसमें ऊधम मचाने वाले बच्चों से होने वाली परेशानी की रोचक प्रस्तुति है। यह कहानी एक सुव्यवस्थित परिवार की माँग पैदा करती है। **जीवन नहीं मरा करता है** कविता में बच्चों को कभी न हारने की प्रेरणा दी गई है और हर परिस्थिति में उत्साहित रहने के लिए

प्रेरित किया है।

जब सिनेमा ने बोलना सीखा में भारतीय सिनेमा के इतिहास के एक महत्वपूर्ण पड़ाव को उजागर किया गया है। यह निबंध मूक सिनेमा के सवाक सिनेमा में विकसित होने की कहानी बयान करता है, जो शिक्षा की नज़र से भी अर्थवान है। प्रसिद्ध पत्रकार पी. साईनाथ की अंग्रेजी से अनुदित रिपोर्टाज जहाँ पहिया है में स्त्री – सशक्तिकरण का एक सजीव उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

अन्नपूर्णानंद की कहानी अकबरी लोटा हास्य–व्यंग्य से भरी हुई अत्यंत रोचक कहानी है। ओ नभ के मंडराते बादल नामक कविता बच्चों में स्वाभाविक उल्लास का संचार करने में सक्षम है। बच्चे वर्षा में खूब मस्ती करते हैं। इसलिए यह कविता उनके स्वभाव के अनुरूप होते हुए आकर्षण का केन्द्र रहेगी और वे बादलों के निर्माण और बरसने के ज्ञान से भी अवगत होंगे। प्रेमचन्द नागार्जुन द्वारा रचित जीवनी है। जिसमें प्रेमचन्द के जीवन को उभारा गया है कि किस तरह मनुष्य अगर चाहे तो अपने जीवन में चारों तरफ से अभाव ग्रस्त होने पर भी अपना धैर्य नहीं छोड़ता और अपने आत्मबल से सब कुछ पा लेता है। निर्मल वर्मा की कहानी बाज और साँप एक बोध कथा है।

संजय की कहानी टोपी लोककथा का पुनर्सृजन है। इस कहानी में गहरा सामाजिक सरोकार है। यह सत्ता से जनता के संबंधों की समीक्षा करती है। सूरदास के पद में उनका कृष्ण के प्रति वात्सल्य, सुदामा चरित में मित्रता आदि है। विद्यार्थी जीवन में योग का महत्त्व लेख के द्वारा विद्यार्थियों को वर्तमान परिस्थिति में योग के महत्त्व को प्रस्तुत किया गया है।

पाठ—सूची

क्र०	विषय	विधा	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	ध्वनि — कविता		सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	1 — 4
2.	लाख की चूड़ियाँ—कहानी		कामतानाथ	5 — 13
3.	अपराजिता — कहानी		शिवानी	14 — 21
4.	दीवानों की हस्ती — कविता		भगवती चरण वर्मा	22 — 24
5.	चिट्ठियों की अनूठी दुनिया — निबंध		अरविंद कुमार सिंह	25 — 34
6.	भगवान के डाकिए — कविता		रामधारी सिंह दिनकर	35 — 37
7.	प्लास्टिक जनित प्रदूषण — लेख			38 — 47
8.	क्या निराश हुआ जाए — निबन्ध		हजारी प्रसाद द्विवेदी	48 — 57
9.	कामचोर — कहानी		इस्मत चुगताई	58 — 67
10.	जीवन नहीं मरा करता — कविता		गोपाल दास 'नीरज'	68 — 72
11.	जब सिनेमा ने बोलना सीखा — लेख		प्रदीप तिवारी	73 — 79
12.	जहाँ पहिया है — रिपोताज		पी. साईनाथ 'अनु'	80 — 88
13.	अकबरी लोटा — कहानी		अन्नपूर्णानंद शर्मा	89 — 102
14.	ओ नभ में मंडराते बादल — कविता		रामेश्वर शुक्ल अंचल	103 — 106
15.	प्रेमचन्द — जीवनी		नागार्जुन	107 — 121
16.	बाज और साँप — कहानी		निर्मल वर्मा	122 — 129
17.	टोपी — कहानी		संजय	130 — 144
18.	सूरदास के पद — कविता		सूरदास	145 — 148
19.	विद्यार्थी जीवन में योग का महत्त्व — लेख			149 — 156
20.	सुदामा चरित — कविता		नरोत्तमदास	157 — 161
	शब्दकोश			162 — 173

¹[भाग 4क

मूल कर्तव्य

51क. मूल कर्तव्य--भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह--

- (क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे ;
- (ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे ;
- (ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे ;
- (घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे ;
- (ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है ;
- (च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे ;
- (छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणि मात्र के प्रति दयाभाव रखे ;
- (ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे ;
- (झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे ;
- (ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू ले ;
- ²[(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक हैं, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे]]

टिप्पणी : मौलिक कर्तव्यों वाला अनुच्छेद 51(क) संविधान (42वां संशोधन) अधिनियम, 1976 (3 जनवरी 1977 से प्रभावी) द्वारा डाला गया था।

* (ट) संविधान (86वां संशोधन) अधिनियम, 2002 (1 अप्रैल 2010 से प्रभावी) द्वारा डाला गया था।
2010 से प्रभावी) द्वारा डाला गया था।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक ¹[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की स्वतंत्रता,

प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और ²[राष्ट्र की एकता

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को एतद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) “प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य” के स्थान पर प्रतिस्थापित।

2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) “राष्ट्र की एकता” के स्थान पर प्रतिस्थापित।

ध्वनि

1

अभी न होगा मेरा अंत
अभी—अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसंत—
अभी न होगा मेरा अंत ।

हरे—हरे ये पात,
डालियाँ, कलियाँ, कोमल गात ।
मैं ही अपना स्वप्न—मृदुल कर
फेरूँगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्यूष मनोहर ।

पुष्प—पुष्प से तंद्रालस लालसा खींच लूँगा मैं,
अपने नव जीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं,

द्वार दिखा दूँगा फिर उनको ।
हैं मेरे वे जहाँ अनंत—
अभी न होगा मेरा अंत ।

—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'



शब्दार्थ

मृदुल	—	कोमल
पात	—	पत्ता
गात	—	शरीर
निद्रित	—	सोया हुआ
प्रत्यूष	—	प्रातःकाल
तंद्रालस	—	नींद से अलसाया हुआ
लालसा	—	कुछ पाने की चाह, अभिलाषा, इच्छा

प्रश्न—अभ्यास

1. कवि को ऐसा विश्वास क्यों है कि उसका अंत अभी नहीं होगा ?
2. फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि कौन-कौन सा प्रयास करता है?
3. कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए क्या करना चाहता है ?

कविता से आगे

1. वसंत को ऋतुराज क्यों कहा जाता है ? आपस में चर्चा कीजिए ।
2. वसंत ऋतु में आनेवाले त्योहारों के विषय में जानकारी एकत्र कीजिए और किसी एक त्योहार पर निबंध लिखिए ।
3. "ऋतु परिवर्तन का जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है" इस कथन की पुष्टि आप किन-किन बातों से कर सकते हैं ? लिखिए ।

अनुमान और कल्पना

1. कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ पढ़कर बताइए कि इनमें किस ऋतु का

वर्णन है ?

फूटे हैं आमों में बौर

भौर वन—वन टूटे हैं ।

होली मची ठौर—ठौर

सभी बंधन छूटे हैं ।

2. स्वप्न भरे कोमल—कोमल हाथों को कलियों पर फेरते हुए कवि कलियों को प्रभात के आने का संदेश देता है, उन्हें जगाना चाहता है और खुशी—खुशी अपने जीवन के अमृत से उन्हें सींचकर हरा—भरा करना चाहता है । फूलों—पौधों के लिए आप क्या—क्या करना चाहेंगे ?
3. कवि अपनी कविता में एक कल्पनाशील कार्य की बात बता रहा है । अनुमान कीजिए और लिखिए कि उसके बताए कार्यों का अन्य किन—किन संदर्भों से संबंध जुड़ सकता है? जैसे नन्हे—मुन्ने बालक को माँ जगा रही हो.... ।

भाषा की बात

1. 'हरे—हरे', 'पुष्प—पुष्प' में एक शब्द की एक ही अर्थ में पुनरावृत्ति हुई है । कविता के 'हरे—हरे ये पात' वाक्यांश में 'हरे—हरे' शब्द युग्म पत्तों के लिए विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं । यहाँ 'पात' शब्द बहुवचन में प्रयुक्त है । ऐसा प्रयोग भी होता है जब कर्ता या विशेष्य एक वचन में हो और कर्म या क्रिया या विशेषण बहुवचन में; जैसे — वह लंबी—चौड़ी बातें करने लगा । कविता में एक ही शब्द का एक से अधिक अर्थों में भी प्रयोग होता है— "तीन बेर खाती है ।" जो तीन बार खाती थी वह तीन बेर खाने लगी है । एक शब्द 'बेर' का दो अर्थों में प्रयोग करने से वाक्य में चमत्कार आ गया । इसे यमक अलंकार कहा जाता है । कभी—कभी उच्चारण की

समानता से शब्दों की पुनरावृत्ति का आभास होता है जबकि दोनों दो प्रकार के शब्द होते हैं; जैसे—मन का/मनका।

ऐसे वाक्यों को एकत्र कीजिए जिनमें एक ही शब्द की पुनरावृत्ति हो। ऐसे प्रयोगों को ध्यान से देखिए और निम्नलिखित पुनरावृत्त शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए— बातों—बातों में, रह—रहकर, लाल—लाल, सुबह—सुबह, रातों—रात, घड़ी—घड़ी।

2. 'कोमल गात, मृदुल वसंत, हरे—हरे ये पात'

विशेषण जिस संज्ञा (या सर्वनाम) की विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं। ऊपर दिए गए वाक्यांशों में गात, वसंत और पात शब्द विशेष्य हैं, क्योंकि इनकी विशेषता (विशेषण) क्रमशः कोमल, मृदुल और हरे—हरे शब्दों से ज्ञात हो रही है।

हिंदी विशेषणों के सामान्यतः चार प्रकार माने गए हैं— गुणवाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण और सार्वनामिक विशेषण।

कुछ करने को

1. वसंत पर अनेक सुंदर कविताएँ हैं। कुछ कविताओं का संकलन तैयार कीजिए।
2. शब्दकोश में 'वसंत' शब्द का अर्थ देखिए। शब्दकोश में शब्दों के अर्थों के अतिरिक्त बहुत—सी अलग तरह की जानकारियाँ भी मिल सकती हैं। उन्हें अपनी कॉपी में लिखिए।

लाख की चूड़ियाँ

2

सारे गाँव में बदलू मुझे सबसे अच्छा आदमी लगता था क्योंकि वह मुझे सुंदर—सुंदर लाख की गोलियाँ बनाकर देता था। मुझे अपने मामा के गाँव जाने का सबसे बड़ा चाव यही था कि जब मैं वहाँ से लौटता था तो मेरे पास ढेर सारी गोलियाँ होतीं, रंग—बिरंगी गोलियाँ जो किसी भी बच्चे का मन मोह ले।

वैसे तो मेरे मामा के गाँव का होने के कारण मुझे बदलू को 'बदलू मामा' कहना चाहिए था, परंतु मैं उसे 'बदलू मामा' न कहकर बदलू काका कहा करता था। जैसा कि गाँव के सभी बच्चे उसे कहा करते थे। बदलू का मकान कुछ ऊँचे पर बना था। मकान के सामने बड़ा—सा सहन था, जिसमें एक पुराना नीम का वृक्ष लगा था। उसी के नीचे बैठकर बदलू अपना काम किया करता था। बगल में भट्ठी दहकती रहती, जिसमें वह लाख पिघलाया करता। सामने एक लकड़ी की चौखट पड़ी रहती



जिस पर लाख के मुलायम होने पर वह उसे सलाख के समान पतला करके चूड़ी का आकार देता। पास में चार—छह विभिन्न आकार की बेलननुमा मुँगेरियाँ रखी रहतीं जो आगे से कुछ पतली और पीछे से मोटी होतीं। लाख की चूड़ी का आकार देकर वह उन्हें मुँगेरियाँ पर चढ़ाकर गोल और चिकना बनाता और तब एक—एक कर पूरे हाथ की चूड़ियाँ बना चुकने के पश्चात वह उन पर रंग करता।

बदलू यह कार्य सदा ही एक मचिये पर बैठकर किया करता था जो बहुत ही पुरानी थी। बगल में ही उसका हुक्का रखा रहता जिसे वह बीच—बीच में पीता रहता। गाँव में मेरा दोपहर का समय अधिकतर बदलू के पास बीतता। वह मुझे 'लला' कहा करता और मेरे पहुँचते ही मेरे लिए तुरंत एक मचिया मँगा देता। मैं घंटों बैठे—बैठे उसे इस प्रकार चूड़ियाँ बनाते देखता रहता। पूरा जोड़ा बना लेने पर वह उसे बेलन पर चढ़ाकर कुछ क्षण चुपचाप देखता रहता मानो वह बेलन न होकर किसी नव—वधू की कलाई हो।

बदलू मनिहार था। चूड़ियाँ बनाना उसका पैतृक पेशा था और वास्तव में वह बहुत ही सुंदर चूड़ियाँ बनाता था। उसकी बनाई हुई चूड़ियों की खपत भी बहुत थी। उस गाँव में तो सभी स्त्रियाँ उसकी बनाई हुई चूड़ियाँ पहनती ही थीं आस—पास के गाँवों के लोग भी उससे चूड़ियाँ ले जाते थे। परंतु वह कभी भी चूड़ियों को पैसों से बेचता न था। उसका अभी तक वस्तु—विनिमय का तरीका था और लोग अनाज के बदले उससे चूड़ियाँ ले जाते थे। बदलू स्वभाव से बहुत सीधा था। मैंने कभी भी उसे किसी से झगड़ते नहीं देखा। हाँ, शादी—विवाह के अवसरों पर वह अवश्य ज़िद पकड़ जाता था। जीवन भर चाहे कोई उससे मुफ्त चूड़ियाँ ले जाए परंतु विवाह के अवसर पर वह सारी कसर निकाल लेता था। आखिर सुहाग के जोड़े का महत्त्व ही और होता है। मुझे याद है, मेरे मामा के यहाँ किसी लड़की के विवाह पर ज़रा—सी किसी बात पर बिगड़ गया था और फिर उसको मनाने में लोहे लग गए थे। विवाह में इसी जोड़े का मूल्य इतना बढ़ जाता था कि उसके लिए उसकी घरवाली को सारे वस्त्र मिलते, ढेरों अनाज मिलता, उसको अपने लिए पगड़ी मिलती और रुपये जो मिलते सो अलग।

यदि संसार में बदलू को किसी बात से चिढ़ थी तो वह थी काँच की चूड़ियों से। यदि किसी भी स्त्री के हाथों में उसे काँच की चूड़ियाँ दिख जाती तो वह अंदर—ही—अंदर कुढ़ उठता और कभी—कभी तो दो—चार बातें भी सुना देता।



मुझसे तो वह घंटों बातें किया करता। कभी मेरी पढ़ाई के बारे में पूछता, कभी मेरे घर के बारे में और कभी यों ही शहर के जीवन के बारे में। मैं उससे कहता कि "शहर में सब काँच की चूड़ियाँ पहनते हैं तो वह उत्तर देता, "शहर की बात और है, लला! वहाँ तो सभी कुछ होता है। वहाँ तो औरतें अपने मरद का हाथ पकड़कर सड़कों पर घूमती भी हैं और फिर उनकी कलाईयाँ नाजुक होती हैं न! लाख की चूड़ियाँ पहनें तो मोच न आ जाए।"

कभी—कभी बदलू मेरी अच्छी खासी खातिर भी करता। जिन दिनों उसकी गाय के दूध होता वह सदा मेरे लिए मलाई बचाकर रखता और आम की फसल में तो मैं रोज़ ही उसके यहाँ से दो—चार आम खा आता। परंतु इन सब बातों के अतिरिक्त जिस कारण वह मुझे अच्छा लगता, वह यह था कि लगभग रोज़ ही वह मेरे लिए एक—दो गोलियाँ बना देता।

मैं बहुधा हर गर्मी की छुट्टी में अपने मामा के यहाँ चला जाता और एक—आध महीने वहाँ रहता, स्कूल खुलने के समय तक वापस आ जाता। परंतु दो—तीन बार ही मैं अपने मामा के यहाँ गया होऊँगा तभी मेरे पिता की एक दूर के शहर में बदली हो गई और एक लंबी अवधि तक मैं अपने मामा के गाँव न जा सका। तब लगभग आठ—दस वर्षों के बाद जब मैं वहाँ गया तो इतना बड़ा हो चुका था कि लाख की गोलियों में मेरी रुचि नहीं रह गई थी। अतः गाँव में होते हुए भी कई दिनों तक मुझे बदलू का ध्यान न आया। इस बीच मैंने देखा कि गाँव में लगभग सभी स्त्रियाँ काँच की चूड़ियाँ पहने हैं। विरले ही हाथों में मैंने लाख की चूड़ियाँ देखीं। तब एक दिन सहसा मुझे बदलू का ध्यान हो आया। बात यह हुई कि बरसात में मेरे मामा की छोटी लड़की आँगन में फिसलकर गिर पड़ी और उसके हाथ की काँच की चूड़ी टूटकर उसकी कलाई में घुस गई और उससे खून बहने लगा। मेरे मामा उस समय घर पर न थे। मुझे ही उसकी मरहम—पट्टी करनी पड़ी। तभी सहसा मुझे बदलू का ध्यान हो आया और मैंने सोचा कि उससे मिल आऊँ। अतः शाम को मैं घूमते—घूमते उसके घर चला गया। बदलू वहीं चबूतरे पर नीम के नीचे एक खाट पर लेटा था।

नमस्ते बदलू काका। मैंने कहा।

नमस्ते भइया। उसने मेरी नमस्ते का उत्तर दिया और उठकर खाट पर बैठ गया। परंतु उसने मुझे पहचाना नहीं और देर तक मेरी ओर निहारता रहा।

मैं हूँ जनार्दन, काका! आपके पास से गोलियाँ बनवाकर ले जाता था। मैंने अपना परिचय दिया।

बदलू फिर भी चुप रहा। मानो वह अपने स्मृति पटल पर अतीत के चित्र उतार रहा हो और तब वह एकदम बोल पड़ा, आओ—आओ, लला बैठो! बहुत दिन बाद गाँव आए।

हाँ, इधर आना नहीं हो सका, काका! मैंने चारपाई पर बैठते हुए उत्तर दिया।

कुछ देर फिर शांति रही। मैंने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई। न तो मुझे उसकी मचिया ही नजर आई, न ही भट्टी।

आजकल काम नहीं करते काका ? मैंने पूछा।

नहीं लला, काम तो कई साल से बंद है। मेरी बनाई हुई चूड़ियाँ कोई पूछे तब तो। गाँव-गाँव में काँच का प्रचार हो गया है। वह कुछ देर चुप रहा, फिर बोला, मशीन युग है न यह, लला। आजकल सब काम मशीन से होता है। खेत भी मशीन से जोते जाते हैं और फिर जो सुंदरता काँच में हाती है, लाख में कहाँ संभव है ?

लेकिन काँच बड़ा खतरनाक होता है। बड़ी जल्दी टूट जाता है, मैंने कहा। नाजुक तो फिर होता ही है लला। कहते-कहते उसे खाँसी आ गई और वह देर तक खाँसता रहा। मुझे लगा उसे दमा है। अवस्था के साथ-साथ उसका शरीर ढल चुका था। उसके हाथों पर और माथे पर नसें उभर आई थीं।

जाने कैसे उसने मेरी शंका भाँप ली और बोला, “दमा नहीं है मुझे। फसली खाँसी है। यहाँ महीने-दो-महीने में आ रही है। दस-पंद्रह दिन में ठीक हो जाएगी।”

मैं चुप रहा। मुझे लगा उसके अंदर कोई बहुत बड़ी व्यथा छिपी है। मैं देर तक सोचता रहा कि इस मशीन युग ने कितने हाथ काट दिए हैं। कुछ देर फिर शांति रही जो मुझे अच्छी नहीं लगी।

आम की फसल अब कैसी है, काका ? कुछ देर पश्चात मैंने बात कर विषय बदलते हुए पूछा।

अच्छी है लला, बहुत अच्छी है, उसने लहककर उत्तर दिया और अंदर अपनी बेटी को आवाज़ दी, अरी रज्जो, लला के लिए आम तो ले आ। फिर मेरी ओर मुखातिब होकर बोला, माफ़ करना लला, तुम्हें आम खिलाना भूल गया था।

नहीं, नहीं काका आम तो इस साल बहुत खाए हैं।

वाह-वाह, बिना आम खिलाए कैसे जाने दूंगा तुमको ?

मैं चुप हो गया। मुझे वे दिन याद हो आए, जब वह मेरे लिए मलाई बचाकर रखता था।

गाय तो अच्छी है न काका ? मैंने पूछा।

गाय कहाँ है, उसकी बेटी, अंदर से एक डलिया में ढेर से आम ले आई। यह तो बहुत हैं काका! इतने कहाँ खा पाऊँगा ? मैंने कहा।

वाह—वाह— वह हँस पड़ा ? शहरी ठहरे न! मैं तुम्हारी उमर का था तो इसके चौगुने आम एक बखत में खा जाता था।

आप लोगों की बात और है। मैंने उत्तर दिया।

अच्छा, बेटी, लला को चार—पाँच आम छाँटकर दो। सिंदूरी वाले देना। देखो लला कैसे हैं ? इसी साल यह पेड़ तैयार हुआ है।

रज्जो ने चार—पाँच आम अंजुली में लेकर मेरी ओर बढ़ा दिए। आम लेने के लिए मैंने हाथ बढ़ाया तो मेरी निगाह एक क्षण के लिए उसके हाथों पर ठिठक गई। गोरी—गोरी कलाइयों पर लाख की चूड़ियाँ बहुत ही फब रही थीं।

बदलू ने मेरी दृष्टि देख ली और बोल पड़ा, यही आखिरी जोड़ा बनाया था जमींदार साहब की बेटी के विवाह पर। दस आने पैसे मुझको दे रहे थे। मैंने जोड़ा नहीं दिया। कहा, शहर से ले आओ।

मैंने आम ले लिए और खाकर थोड़ी देर पश्चात चला आया। मुझे प्रसन्नता हुई कि बदलू ने हारकर भी हार नहीं मानी थी। उसका व्यक्तित्व काँच की चूड़ियों जैसा न था कि आसानी से टूट जाए।

—कामतानाथ

शब्दार्थ

- | | | |
|------------|---|--|
| स्मृति—पटल | — | याददाश्त, याद की तस्वीर |
| चाव | — | चाह, रुचि, तीव्र इच्छा |
| पगड़ी | — | सिर पर लपेट कर बाँधा जाने वाला लंबा कपड़ा, पाग |

सलाख	— सलाई, धातु की छड़
मुँगरी	— गोल, मुठियादार लकड़ी जो ठोकने-पीटने के काम आती है
मरहम-पट्टी	— जख्म का इलाज, घाव पर दवा लगाकर पट्टी बाँधना
पैतृक	— पूर्वजों का, पिता से प्राप्त या पुश्तैनी
मचिया	— बैठने के उपयोग में आने वाली सुतली आदि से बुनी छोटी/चौकोर खाट
खपत	— माल की बिक्री
वस्तु विनिमय	— पैसों से न खरीदकर एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेना
मुखातिब	— देखकर बात करना
डलिया	— बाँस का बना एक छोटा पात्र
कसर	— घाटा पूरा करना, कमी
नाजुक	— कोमल
फबना	— सजना, शोभा देना
मनिहार	— चूड़ी बेचने वाला
सहन	— आँगन

प्रश्न अभ्यास

कहानी से

1. बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था और बदलू को 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' क्यों कहता था ?
2. वस्तु-विनिमय क्या है ? विनिमय की प्रचलित पद्धति क्या है ?
3. 'मशीनी युग ने कितने हाथ काट दिए हैं।' —इस पंक्ति में लेखक ने किस

व्यथा की ओर संकेत किया है ?

4. बदलू के मन में ऐसी कौन—सी व्यथा थी जो लेखक से छिपी न रह सकी ।
5. मशीनी युग से बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया ?

कहानी से आगे

1. आपने मेले—बाज़ार आदि में हाथ से बनी चीज़ों को बिकते देखा होगा । आपके मन में किसी चीज़ को बनाने की कला सीखने की इच्छा हुई हो और आपने कोई कारीगरी सीखने का प्रयास किया हो तो उसके विषय में लिखिए ।
2. लाख की वस्तुओं का निर्माण भारत के किन—किन राज्यों में होता है ? लाख से चूड़ियों के अतिरिक्त क्या—क्या चीज़ें बनती हैं ? ज्ञात कीजिए ।

अनुमान और कल्पना

1. घर में मेहमान के आने पर आप उसका अतिथि—सत्कार कैसे करेंगे ?
2. आपको छुट्टियों में किसके घर जाना सबसे अच्छा लगता है ? वहाँ की दिनचर्या अलग कैसे होती है ? लिखिए ।
3. मशीनी युग में अनेक परिवर्तन आए दिन होते रहते हैं । आप अपने आस—पास से इस प्रकार के किसी परिवर्तन का उदाहरण चुनिए और उसके बारे में लिखिए ।
4. बाज़ार में बिकने वाले सामानों की डिज़ाइनों में हमेशा परिवर्तन होता रहता है । आप इन परिवर्तनों को किस प्रकार देखते हैं ? आपस में चर्चा कीजिए ।
5. हमारे खान—पान, रहन—सहन और कपड़ों में भी बदलाव आ रहा है । इस बदलाव के पक्ष—विपक्ष में बातचीत कीजिए और बातचीत के आधार पर लेख

तैयार कीजिए।

भाषा की बात

1. 'बदलू को किसी बात से चिढ़ थी तो काँच की चूड़ियों से' और बदलू स्वयं कहता है – "जो सुंदरता काँच की चूड़ियों में होती है लाख में कहाँ संभव है?" ये पंक्तियाँ बदलू की दो प्रकार की मनोदशाओं को सामने लाती हैं। दूसरी पंक्ति में उसके मन की पीड़ा है। उसमें व्यंग्य भी है। हारे हुए मन से, या दुखी मन से अथवा व्यंग्य में बोले गए वाक्यों के अर्थ सामान्य नहीं होते। कुछ व्यंग्य वाक्यों को ध्यानपूर्वक समझकर एकत्र कीजिए और उनके भीतरी अर्थ की व्याख्या करके लिखिए।
2. 'बदलू' कहानी की दृष्टि से पात्र है और भाषा की बात (व्याकरण) की दृष्टि से संज्ञा है। किसी भी व्यक्ति, स्थान, वस्तु विचार अथवा भाव को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा को तीन भेदों में बाँटा गया है (क) व्यक्तिवाचक संज्ञा, जैसे—लला, रज्जो, आम, काँच, गाय इत्यादि (ख) जातिवाचक संज्ञा, जैसे—चरित्र, स्वभाव, वजन, आकार, आदि द्वारा जानी जाने वाली संज्ञा। (ग) भाववाचक संज्ञा, जैसे—सुंदरता, नाजुक, प्रसन्नता इत्यादि जिसमें कोई व्यक्ति नहीं है और न आकार न वजन। परंतु उसका अनुभव होता है। पाठ से तीनों प्रकार की संज्ञाएँ चुनकर लिखिए।
3. गाँव की बोली में कई शब्दों के उच्चारण बदल जाते हैं। कहानी में बदलू वक्त (समय) को बखत, उम्र (वय/आयु) को उमर कहता है। इस तरह के अन्य शब्दों को लिखिए जिनके रूप में परिवर्तन हुआ हो, अर्थ में नहीं।

कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें तब लगता है कि भले ही उस अंतर्दामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात् अकारण ही दंडित कर दिया हो, किन्तु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नहीं किया। फिर भी हम में से कौन ऐसा मानव है, जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता। मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है। किन्तु उसे वह नतमस्तक तथा आनंदित मुद्रा में झेल रही है, विधाता को कोस कर नहीं।

उसकी कोठी का अहाता एकदम हमारे बंगले के अहाते से जुड़ा था। अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गई। कार का द्वार खुला, एक प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से एक हवील चेयर निकाल कर सामने रख दी और भीतर चली गई। मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आवागमन देखती और आश्चर्यचकित रह जाती—ठीक जैसे कोई मशीन बटन खटखटाती अपना काम किए चले जा रही हो।

धीरे—धीरे मेरा उससे परिचय हुआ। कहानी सुनी तो दंग रह गई। नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते—भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी। मैं चहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से सज्जित लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहन के यहाँ देखा था। वह आई.ए. एस. की परीक्षा देने इलाहाबाद गया। लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल बड़ी। चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में

गिरा और पहिये के नीचे हाथ पड़ गया। प्राण तो बच गए, पर दायां हाथ चला गया। उसी विच्छिन्न भुजा के साथ-साथ धीरे-धीरे मानसिक संतुलन भी खो बैठा। पहले दुःख भुलाने के लिए नशे की गोलियाँ खाने लगा और अब नूरमंज़िल की शरण की है। केवल एक हाथ खोकर ही उसने हथियार डाल दिए। इधर चंद्रा, जिसका निचला धड़ है निष्प्राण मांसपिंड मात्र, सदा उत्फुल्ल है; चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं, बुद्धिदीप्त आँखों में अदम्य उत्साह, प्रतिपल-प्रतिक्षण भरपूर जीने की उत्कट जिजीविषा और फिर कैसी-कैसी महत्त्वकांक्षाएँ।

“मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग रिसर्च इंस्टिट्यूट से पूछकर यह बताएँगी कि क्या वहाँ आने पर मेरे विषय माइक्रोबायोलॉजी से संबंधित कुछ सामग्री मिल सकेगी?”

“मैडम, आप कह रही थीं कि आपके दामाद हवाई के ईस्ट वेस्ट सेंटर में हैं। क्या आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि मुझे वहाँ की कोई फैलोशिप मिल सकती है?”

यहाँ कभी सामान्य-सी हड्डी टूटने पर या पैर में मोच आ जाने पर ही प्राण ऐसे कंठगत हो जाते हैं, जैसे विपत्ति का आकाश ही सिर पर टूट पड़ा है। और इधर यह लड़की है कि पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी-बोटी फड़क रही है। ऊँची नौकरी की एक ही नीरस करवट में उसकी प्रतिभा निरंतर डूबती जा रही है। आजकल वह आई.आई.टी. मद्रास में काम कर रही है।

जन्म के अठारहवें महीने में ही जिसकी गर्दन से नीचे का पूरा शरीर पोलियो ने निर्जीव कर दिया हो, उसने किस अद्भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा अपनी थीसिस पर डॉक्टरेट ली होगी।

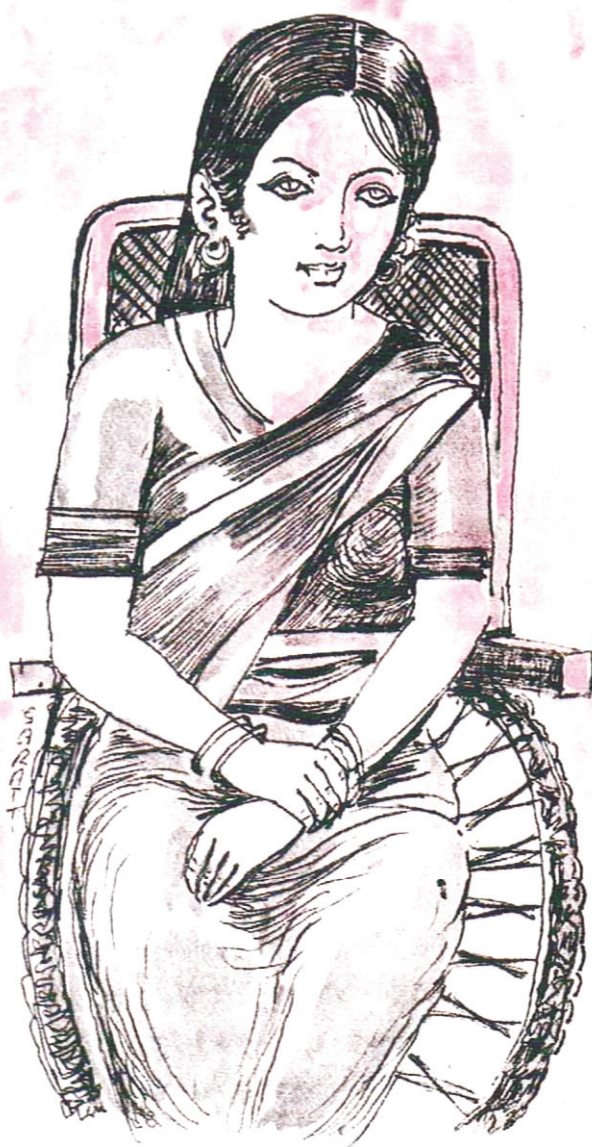
“मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा सहारा भी न दे। आप तो देखती हैं, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती है। मैंने इसी से एक ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव

बना दूँगी। यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपना संचालन कैसा सुगम बना लिया है। मैं अपना सारा काम अब स्वयं निबटा लेती हूँ।”

उसने मुझे तस्वीरें दिखाईं। समस्त सामग्री उसके हाथों की पहुँच तक ऐसे धरी थीं कि निचला धड़ ऊपर उठाए बिना ही वह मनचाही सामग्री मेज़ पर उतार सकती थी। किन्तु उसकी आज की इस पटुता के पीछे है एक सुदीर्घ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका। स्वयं डॉ. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, “हमने आज तक दो व्यक्तियों द्वारा सम्मिलित रूप में नोबेल पुरस्कार पाने के ही विषय में तो सुना था। देखा जाए तो यह डॉक्टरेट भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए – डॉ. चंद्रा और उनकी अद्भुत साहसी जननी श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम् को। पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ-साथ कैसी कठिन साधना की और इस साधना का सुखद अंत हुआ। 1976 में जब चंद्रा को डॉक्टरेट मिली—माइक्रोबायोलॉजी में। अपंग स्त्री—पुरुषों में, इस विषय में डॉक्टरेट पाने वाली डॉ. चंद्रा प्रथम भारतीय हैं।

जब इसे सामान्य ज्वर के चौथे दिन पक्षाघात हुआ तो गर्दन के नीचे इसका सर्वांग अचल हो गया। भयभीत होकर हमने इसे बड़े-से-बड़े डॉक्टर को दिखाया। सबने एक स्वर में कहा, “आप व्यर्थ पैसा बरबाद मत कीजिए। आपकी पुत्री जीवन भर केवल गर्दन ही हिला पाएगी। संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती।” सहसा श्रीमती सुब्रह्मण्यम् का कंठ अवरुद्ध हो गया, फिर वे धीमे स्वर में मुझे बताने लगीं, “मेरे गर्भ में तब इसका भाई आ गया था। इसके भयानक अभिशाप के बावजूद मैंने कभी विधाता से यह नहीं कहा कि प्रभु इसे उठा लो, इसके इस जीवन से तो मौत भली है। मैं निरन्तर इसके जीवन की भीख ही माँगती रही। केवल सिर हिलाकर यह इधर-उधर देख-भर सकती थी। न हाथों में गति थी, न पैरों में, फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी। एक आर्थोपैडिक सर्जन की बड़ी ख्याति सुनी थी, वहीं ले गई।

एक वर्ष तक कष्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके ऊपर



धड़ में गति आ गई, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं। निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया। पाँच वर्ष की हुई, तो मैं ही इसका स्कूल बनी। मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया, सरस्वती स्वयं ही जैसे आकर जिह्वाग्र पर बैठ गई थी। बेंगलूरु के प्रसिद्ध माउंट कारमेल में उसे प्रवेश दिलाने में मुझे कांवेट के द्वार पर लगभग धरना ही देना पड़ा।

“नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम्”, मदर ने कहा, “हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की व्हील चेयर लेकर कौन पूरे क्लास रूम में घुमाता फिरेगा ?”

“आप चिन्ता न करें मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी।” और फिर पूरी कक्षाओं में अपंग पुत्री की कुर्सी की परिक्रमा वे स्वयं कराती। वे पीरियड दर पीरियड उसके पीछे खड़ी रहतीं। प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चंद्रा ने स्वर्ण पदक जीते। बी—एस.सी. किया, प्राणिशास्त्र में, एम—एस.सी में प्रथम स्थान प्राप्त किया। केवल अपनी निष्ठा, धैर्य एवं साहस से पाँच वर्ष तक प्रोफेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया। इसी बीच माता—पिता ने पेंसिलवानिया से व्हील चेयर मँगवा दी, जिसे डॉ. चंद्रा स्वयं चलाती हुई पूरी प्रयोगशाला में बड़ी सुगमता से घूम सकती थी। लैदर जैकेट के कठिन जिरह—बख्तर में कसी उस हँसमुख लड़की को देख मुझे युद्धक्षेत्र में डटे राणा साँगा का ही स्मरण हो आता था। क्षत—विक्षत शरीर में घावों के असंख्य किन्तु आभामंडित भव्य मुद्रा।

“मैडम, आप तो लिखती हैं, मेरी ये कविताएँ देखिए। कुछ दम है क्या इनमें?”

मैंने जब वे कविताएँ देखीं, तो आँखें भर आईं। जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहीं आने पाई, वह अनजाने ही उसकी कविता में छलक आई थी। फिर उसने अपने कढ़ाई—बुनाई के सुंदर नमूने दिखाए। लड़की के दोनों हाथ जैसे दोनों पैरों का भी काम करते हों, निरंतर मशीनी खटखट में चलते रहते हैं। जर्मन

भाषा में माता—पुत्री दोनों ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की और बेंगलुरु के प्रख्यात इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम अपंग बालिका थी। यही नहीं, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उसकी समान रुचि है। अपने अलबम को अपनी निर्जीव टाँगों पर रख, वह मुझे अपने चित्र दिखाने लगी। पुरस्कार ग्रहण करती डॉ. चंद्रा, प्रधानमंत्री के साथ मुस्कराती खड़ी डॉ. चंद्रा, राष्ट्रपति को सलामी देती बालिका चंद्रा और व्हील चेयर में लैडर जैकेट में जकड़ी बैसाखियों का सहारा लेकर अपनी डॉक्टरेट ग्रहण करती डॉ. चंद्रा।

“मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ। मैं अपंग डॉ. मेरी वर्गीज़ के सफल जीवन की कहानी पढ़ चुकी थी। परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला। कहा गया मेरा निचला धड़ निर्जीव है, मैं एक सफल शल्य—चिकित्सक नहीं बन पाऊँगी।” किन्तु डॉ. चंद्रा के प्रोफसर के शब्दों में, “मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ. चंद्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान योगदान दिया है। चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया।”

चंद्रा के अलबम के अंतिम पृष्ठ में है उसकी जननी का बड़ा—सा चित्र जिसमें वे जे.सी. बेंगलुरु द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं— ‘वीर जननी’ का पुरस्कार। बहुत बड़ी—बड़ी उदास आँखें, जिनमें स्वयं माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी पुत्री की पहिया—लगी कुर्सी के पीछे चक्र—सी घूमती जननी की व्यथा, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लौंगें, अधरों पर विजय का उल्लास, जूड़े में पुष्पवेणी। मेरे कानों में उस अद्भुत साहसी जननी शारदा सुब्रह्मण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गूँज रहे हैं, “ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।”

—शिवानी

प्रश्न अभ्यास

बोध और विचार

- अपराजिता शब्द का निम्नांकित में से कौन—सा अर्थ है ?
(क) जो विकलांग हो (ख) जिसने हार न मानी हो
(ग) जो आपस का न हो (घ) जो दूसरों से भिन्न हो
- डॉ. चंद्रा को पहली बार देखकर लेखिका के मन में क्या—क्या भाव उठे ?
- लेखिका ने डॉ. चंद्रा को सामान्य जनों से किन बातों में भिन्न पाया ?
- अपंग चंद्रा को डॉ. चंद्रा बनाने में उसकी माता का क्या योगदान है ?
- लखनऊ के युवक को डॉ. चंद्रा से क्या प्रेरणाएँ लेनी चाहिए ?
- राणा साँगा कौन थे ? लेखिका को बरबस उनका स्मरण क्यों हो आया ?
- चिकित्सा ने जो खोया, वह विज्ञान ने कैसे पाया ?
- वीर जननी का पुरस्कार किसको मिला ? क्यों मिला ?
- पाठ के आधार पर निम्नांकित वाक्य का स्पष्टीकरण करें —
“ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल देता है।”

भाषा—अध्ययन

- “अपराजिता” शब्द की निम्नांकित में से कौन—सी व्युत्पत्ति सही है ?
(क) अपरा—जिता (ख) अ+पर+अ+जित+आ
(ग) अ+पराजित+आ (घ) अपर+अजिता

2. डॉ. चंद्रा के लिए प्रयुक्त विशेषणों का चयन करें।
3. चुने गए विशेषणों की सहायता से डॉ. चंद्रा का शब्दचित्र अंकित करें।

योग्यता—विस्तार

1. उद्यमी और पुरुषार्थी विकलांगों की जीवनियाँ पत्र—पत्रिकाओं में प्रायः छपती रहती हैं, उनका संकलन करके “विकलांग विशेषांक” निकालें।
2. विकलांगों के लिए आयोजित समारोहों को दूरदर्शन—कार्यक्रम में देखें।
3. विकलांगों की समस्याओं पर कक्षा में चर्चा करें।



4

दीवानों की हस्ती



हम दीवानों की क्या हस्ती,
है आज यहाँ, कल वहाँ चले,
मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले ।

आए बनकर उल्लास अभी,
आँसू बनकर वह चले अभी,
सब कहते ही रह गए, अरे,
तुम कैसे आए, कहाँ चले?

किस ओर चले ? यह मत पूछो,
चलना है, बस इसलिए चले,
जग से उसका कुछ लिए चले,
जग को अपना कुछ दिए चले,

दो बात कही, दो बात सुनी;
कुछ हँसे और फिर कुछ रोए ।
छककर सुख—दुख के घूंटों को



हम एक भाव से लिए चले ।

हम भिखमंगों की दुनिया में,
स्वच्छंद लुटाकर प्यार चले,
हम एक निसानी—सी उर पर,
ले असफलता का भार चले ।

अब अपना और पराया क्या ?
आबाद रहें रुकनेवाले ।
हम स्वयं बँधे थे और स्वयं
हम अपने बंधन तोड़ चले ।

—भगवतीचरण वर्मा

शब्दार्थ

हस्ती	—	अस्तित्व
आलम	—	दुनिया, माहौल
स्वच्छंद	—	अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला

प्रश्न—अभ्यास

कविता से

1. कवि ने अपने आने को 'उल्लास' और जाने को 'आँसू बनकर बह जाना' क्यों

कहा है ?

2. भिखमंगों की दुनिया में बेरोक प्यार लुटानेवाला कवि ऐसा क्यों कहता है कि वह अपने हृदय पर असफलता का एक निशान भार की तरह लेकर जा रहा है ? क्या वह निराश है या प्रसन्न है ?
3. कविता में ऐसी कौन-सी बात है जो आपको सबसे अच्छी लगी ?

कविता से आगे

- जीवन में मस्ती होनी चाहिए, लेकिन कब मस्ती हानिकारक हो सकती है? सहपाठियों के बीच चर्चा कीजिए।

अनुमान और कल्पना

- एक पंक्ति में कवि ने यह कहकर अपने अस्तित्व को नकारा है कि “हम दीवानों की क्या हस्ती, हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले।” दूसरी पंक्ति में उसने यह कहकर अपने अस्तित्व को महत्त्व दिया है कि “मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उड़ाते जहाँ चले।” यह फाकामस्ती का उदाहरण है। अभाव में भी खुश रहना फाकामस्ती कही जाती है। कविता में इस प्रकार की अन्य पंक्तियाँ भी हैं, उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और अनुमान लगाइए कि कविता में परस्पर विरोधी बातें क्यों की गई हैं?

भाषा की बात

- संतुष्टि के लिए कवि ने ‘छककर’ ‘जी भरकर’ और ‘खुलकर’ जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। इसी भाव को व्यक्त करनेवाले कुछ और शब्द सोचकर लिखिए, जैसे—हँसकर, गाकर।



चिट्ठियों की अनूठी दुनिया

5

पत्रों की दुनिया भी अजीबो-गरीब है और उसकी उपयोगिता हमेशा से बनी रही है। पत्र जो काम कर सकते हैं, वह संचार का आधुनिकतम साधन नहीं कर सकता है। पत्र जैसा संतोष फोन या एस.एम.एस. का संदेश कहाँ दे सकता है।

पत्र एक नया
सिलसिला शुरू
करते हैं और
राजनीति, साहित्य
तथा कला के क्षेत्रों
में तमाम विवाद और
नयी घटनाओं की
जड़ भी पत्र ही होता
है। दुनिया का तमाम
साहित्य पत्रों पर
केंद्रित है और मानव
सभ्यता के विकास
में इन पत्रों ने अनूठी
भूमिका निभाई है।
पत्रों का भाव सब



जगह एक—सा है, भले ही उसका नाम अलग—अलग हो। पत्र को उर्दू में ख़त, संस्कृत में पत्र, कन्नड़ में कागद, तेलुगु में उत्तरम्, जाबू और लेख तथा तमिल में 'कडिद' कहा जाता है। पत्र यादों को सहेजकर रखते हैं, इसमें किसी को कोई संदेह नहीं है। हर एक की अपनी पत्र—लेखन कला है और हर एक के पत्रों का अपना दायरा। दुनिया भर में रोज़ करोड़ों पत्र एक दूसरे को तलाशते तमाम ठिकानों तक पहुँचते हैं। भारत में ही रोज़ साढ़े चार करोड़ चिट्ठियाँ डाक में डाली जाती है जो साबित करती हैं कि पत्र कितनी अहमियत रखते हैं।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सन् 1953 में सही ही कहा था कि — “हज़ारों सालों तक संचार का साधन केवल हरकारे (रनर्स) या फिर तेज़ घोड़े रहे हैं। उसके बाद पहिए आए। पर रेलवे और तार से भारी बदलाव आया। तार ने रेलों से भी तेज़ गति से संवाद पहुँचाने का सिलसिला शुरू किया। अब टेलीफ़ोन, वायरलैस और आगे रेडार—दुनिया बदल रहा है।”

पिछली शताब्दी में पत्र—लेखन ने एक कला का रूप ले लिया। डाक व्यवस्था के सुधार के साथ पत्रों को सही दिशा देने के लिए विशेष प्रयास किए गए। पत्र संस्कृति विकसित करने के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों में पत्र—लेखन का विषय भी शामिल किया गया। भारत ही नहीं दुनिया के कई देशों में ये प्रयास चले और विश्व डाक संघ ने अपनी ओर से भी काफी प्रयास किए। विश्व डाक संघ की ओर से 16 वर्ष से कम आयुवर्ग के बच्चों के लिए पत्र—लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का सिलसिला सन् 1972 से शुरू किया गया। यह सही है कि खास तौर पर बड़े शहरों और महानगरों में संचार साधनों के तेज़ विकास तथा अन्य कारणों से पत्रों की आवाजाही प्रभावित हुई है पर देहाती दुनिया आज भी चिट्ठियों से ही चल रही है। फ़ैक्स, ई—मेल, टेलीफ़ोन तथा मोबाइल ने चिट्ठियों की

तेज़ी को रोका है, पर व्यापारिक डाक की संख्या लगातार बढ़ रही है।

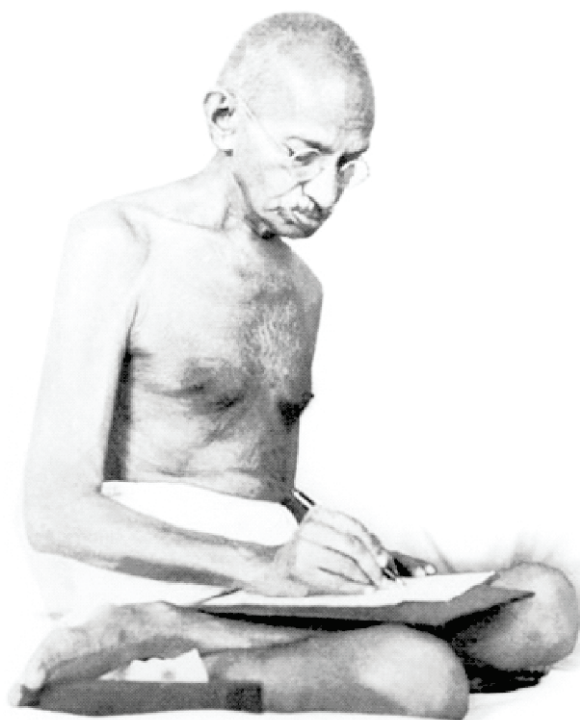
जहाँ तक पत्रों का सवाल है, अगर आप बारीकी से उसकी तह में जाएँ तो आपको ऐसा कोई नहीं मिलेगा जिसने कभी किसी को पत्र न लिखा या न लिखाया हो या पत्रों का बेसब्री से जिसने इंतज़ार न किया हो। हमारे



सैनिक तो पत्रों का जिस उत्सुकता से इंतज़ार करते हैं, उसकी कोई मिसाल ही नहीं। एक दौर था जब लोग पत्रों का महीनों इंतज़ार करते थे पर अब वह बात नहीं। परिवहन साधनों के विकास ने दूरी बहुत घटा दी है। पहले लोगों के लिए संचार का इकलौता साधन चिट्ठी ही थी पर आज और भी साधन विकसित हो चुके हैं।

आज देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अपने पुरखों की चिट्ठियों को सहेज और सँजोकर विरासत के रूप में रखे हुए हों या फिर बड़े-बड़े लेखक, पत्रकार, उद्यमी, कवि, प्रशासक, सन्यासी या किसान, इनकी पत्र-रचनाएँ तो अपने आप में अनुसंधान का विषय हैं। अगर आज जैसे संचार साधन होते तो पंडित नेहरू अपनी पुत्री इंदिरा गांधी को फोन करते, पर तब पिता के पत्र पुत्री के नाम नहीं लिखे जाते जो देश के करोड़ों लोगों को प्रेरणा देते हैं। पत्रों को तो आप

सहेजकर रख लेते हैं पर एसएमएस संदेशों को आप जल्दी ही भूल जाते हैं। कितने संदेशों को आप सहेजकर रख सकते हैं ? तमाम महान हस्तियों की तो सबसे बड़ी यादगार या धरोहर उनके द्वारा लिखे गए पत्र ही हैं। भारत में इस श्रेणी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को सबसे आगे रखा जा सकता है। दुनिया के तमाम संग्रहालय जानी मानी हस्तियों के पत्रों का अनूठा संकलन भी है। तमाम पत्र देश, काल और समाज को जानने-समझने का असली पैमाना है। भारत में आज़ादी के पहले महासंग्राम के दिनों में जो कुछ अंग्रेज़ अफसरों ने अपने परिवारजनों को पत्र में लिखा वे आगे चलकर बहुत महत्त्व की पुस्तक तक बन गए। इन पत्रों ने साबित किया कि यह संग्राम कितनी ज़मीनी मज़बूती लिए हुए था।



महात्मा गांधी के पास दुनिया भर से तमाम पत्र केवल महात्मा गांधी— इंडिया लिखे आते थे और वे जहाँ भी रहते थे वहाँ तक पहुँच जाते थे। आज़ादी के आंदोलन की कई अन्य दिग्गज हस्तियों के साथ भी ऐसा ही था। गांधीजी के पास देश-दुनिया से बड़ी संख्या में पत्र पहुँचते थे पर पत्रों का जवाब देने के मामले में उनका कोई जोड़ नहीं था। कहा जाता है कि जैसे ही उन्हें पत्र मिलता था, उसी समय वे उसका जवाब भी लिख देते थे। अपने हाथों से ही ज़्यादातर पत्रों का जवाब

देते थे। जब लिखते-लिखते उनका दाहिना हाथ दर्द करने लगता था तो वे बाएँ

हाथ से लिखने में जुट जाते थे। महात्मा गांधी ही नहीं आंदोलन के तमाम नायकों के पत्र गाँव-गाँव में मिल जाते हैं। पत्र भेजनेवाले लोग उन पत्रों को किसी प्रशस्तिपत्र से कम नहीं मानते हैं और कई लोगों ने तो उन पत्रों को फ्रेम कराकर रख लिया है। यह है पत्रों को जादू। यही नहीं, पत्रों के आधार पर ही कई भाषाओं में जाने कितनी किताबें लिखी जा चुकी हैं।

वास्तव में पत्र किसी दस्तावेज़ से कम नहीं हैं। पंत के 'दो-सौ पत्र बच्चन के नाम' और निराला के पत्र 'हमको लिख्यौ है कहा' तथा 'पत्रों के आईने में दयानंद सरस्वती' समेत कई पुस्तकें आपको मिल जाएँगी। कहा जाता है कि प्रेमचंद खासतौर पर नए लेखकों को बहुत प्रेरक जवाब देते थे तथा पत्रों के जवाब में वे बहुत मुस्तैद रहते थे। इसी प्रकार नेहरू और गांधी के लिखे गए रवींद्रनाथ टैगोर के पत्र भी बहुत प्रेरक हैं। 'महात्मा और कवि' के नाम से महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर के बीच सन् 1915 से 1941 के बीच के पत्राचार का संग्रह प्रकाशित हुआ है, जिसमें बहुत से नए तथ्यों और उनकी मनोदशा का लेखा-जोखा मिलता है।

पत्र व्यवहार की परंपरा भारत में बहुत पुरानी है। पर इसका असली विकास आज़ादी के बाद ही हुआ है। तमाम सरकारी विभागों की तुलना में सबसे ज़्यादा गुडविल डाक विभाग की ही है। इसकी एक खास वजह यह भी है कि यह लोगों को जोड़ने का काम करता है। घर-घर तक इसकी पहुँच है। संचार के तमाम उन्नत साधनों के बाद भी चिट्ठी-पत्री की हैसियत बरकरार है। शहरी इलाकों में आलीशान हवेलियाँ हों या फिर झोपड़पट्टियों में रह रहे लोग, दुर्गम जंगलों से घिरे गाँव हों या फिर बर्फ़बारी के बीच जी रहे पहाड़ों के लोग, समुद्र तट पर रह रहे मछुआरे हों या फिर रेगिस्तान की ढाँणियों में रह रहे लोग, आज भी खतों का ही

सबसे अधिक बेसब्री से इंतज़ार करते हैं। एक दो नहीं, करोड़ों लोग ख़तों और अन्य सेवाओं के लिए रोज़ भारतीय डाकघरों के दरवाज़ों तक पहुँचते हैं और इसकी बहु आयामी भूमिका नज़र आ रही है। दूर देहात में लाखों गरीब घरों में चूल्हे मनीआर्डर अर्थव्यवस्था से ही जलते हैं। गाँवों या गरीब बस्तियों में चिट्ठी या मनीआर्डर लेकर पहुँचने वाला डाकिया देवदूत के रूप में देखा जाता है।

—अरविंद कुमार सिंह

शब्दार्थ

अजीबो—गरीब	—	अनोखा
प्रशस्ति पत्र	—	प्रशंसा पत्र
एस.एम.एस	—	लघु संदेश सेवा
मुस्तैद	—	तत्पर
सिलसिला	—	आरंभ होना, रास्ता खुलना, कड़ी, शृंखला
दस्तावेज़	—	प्रमाण संबंधी कागजात, प्रमाण पत्र
अहमियत	—	महत्त्व
गुडविल	—	सुनाम, अच्छी छवि
हरकारा	—	दूत, डाकिया, संदेश पहुँचाने वाला
हैसियत	—	दरज़ा
आलीशान	—	शानदार
आवाजाही	—	आना—जाना
ढाँगी	—	अस्थायी निवास, कच्चे मकानों की बस्ती जो

गाँव से कुछ दूर बनी हो

तह — गहराई

प्रश्न—अभ्यास

पाठ से

1. पत्र जैसा संतोष फोन या एस.एम.एस. का संदेश क्यों नहीं दे सकता ?
2. पत्र को खत, कागद, उत्तरम्, जाबू, लेख, कडिद, पाती, चिट्ठी इत्यादि कहा जाता है। इन शब्दों से संबंधित भाषाओं के नाम बताइए।
3. पत्र—लेखन की कला के विकास के लिए क्या—क्या प्रयास हुए ? लिखिए।
4. पत्र धरोहर हो सकते हैं लेकिन एस.एम.एस. क्यों नहीं ? तर्क सहित अपना विचार लिखिए।
5. क्या चिट्ठियों की जगह कभी फैक्स, ई—मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल ले सकते हैं ?

पाठ से आगे

1. किसी के लिए बिना टिकट सादे लिफाफे पर सही पता लिखकर पत्र बेरंग भेजने पर कौन—सी कठिनाई आ सकती है ? पता कीजिए।
2. पिन कोड भी संख्याओं में लिखा गया एक पता है, कैसे ?
3. ऐसा क्यों होता था कि महात्मा गांधी को दुनिया भर से पत्र 'महात्मा गांधी—इंडिया' पता लिखकर आते थे ?

अनुमान और कल्पना

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'भगवान के डाकिए' आपकी पाठ्यपुस्तक में है। उसके आधार पर पक्षी और बादल को डाकिए की भांति मानकर अपनी कल्पना से लेख लिखिए।
2. संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास ने बादल को संदेशवाहक बनाकर 'मेघदूत' नाम का काव्य लिखा है। 'मेघदूत' के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।
3. पक्षी को संदेशवाहक बनाकर अनेक कविताएँ एवं गीत लिखे गए हैं। एक गीत है— 'जा—जा रे कागा विदेशवा, मेरे पिया से कहियो संदेशवा'। इस तरह के तीन गीतों का संग्रह कीजिए। प्रशिक्षित पक्षी के गले में पत्र बाँधकर निर्धारित स्थान तक पत्र भेजने का उल्लेख मिलता है। मान लीजिए आपको एक पक्षी को संदेशवाहक बताकर पत्र भेजना हो तो आप वह पत्र किसे भेजना चाहेंगे और उसमें क्या लिखना चाहेंगे।
4. केवल पढ़ने के लिए दी गई रामदरश मिश्र की कविता 'चिट्ठियाँ' को ध्यानपूर्वक पढ़िए और विचार कीजिए कि क्या यह कविता केवल लेटर बॉक्स में पड़ी निर्धारित पते पर जाने के लिए तैयार चिट्ठियों के बारे में है ? या रेल के डिब्बे में बैठी सवारी भी उन्हीं चिट्ठियों की तरह है जिनके पास उनके गंतव्य तक का टिकट है। पत्र के पते की तरह और क्या विद्यालय भी एक लेटर बॉक्स की भाँति नहीं है जहाँ से उत्तीर्ण होकर विद्यार्थी अनेक क्षेत्रों में चले जाते हैं ? अपनी कल्पना को पंख लगाइए और मुक्त मन से इस विषय में विचार—विमर्श कीजिए।

भाषा की बात

1. किसी प्रयोजन विशेष से संबंधित शब्दों के साथ पत्र शब्द जोड़ने से कुछ नए

शब्द बनते हैं, जैसे—प्रशस्ति पत्र, समाचार—पत्र। आप भी पत्र के योग से बननेवाले दस शब्द लिखिए।

2. 'व्यापारिक' शब्द व्यापार के साथ 'इक' प्रत्यय के योग से बना है। 'इक' प्रत्यय के योग से बननेवाले शब्दों को अपनी पाठ्यपुस्तक से खोजकर लिखिए।
3. दो स्वरों के मेल से होनेवाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं; जैसे—रवीन्द्र = रवि + इन्द्र, इस संधि में इ+इ = ई हुई है। इसे दीर्घ संधि कहते हैं। दीर्घ स्वर संधि के और उदाहरण खोजकर लिखिए। मुख्य रूप से स्वर संधियाँ चार प्रकार की मानी गई हैं— दीर्घ, गुण, वृद्धि और यण।

ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, आ आए तो ये आपस में मिलकर क्रमशः दीर्घ आ, ई, ऊ हो जाते हैं, इसी कारण इस संधि को दीर्घ संधि कहते हैं; जैसे— संग्रह + आलय = संग्रहालय, महा + आत्मा = महात्मा।

इस प्रकार के कम-से-कम दस उदाहरण खोजकर लिखिए और अपनी शिक्षिका/शिक्षक को दिखाइए।



चिट्ठियाँ

(केवल पढ़ने के लिए)

लेटरबक्स में पड़ी हुई चिट्ठियाँ
अनंत सुख—दुख वाली अनंत चिट्ठियाँ
लेकिन कोई किसी से नहीं बोलती
सभी अकेले—अकेले

अपनी मंजिल पर पहुँचने का इंतजार करती हैं।

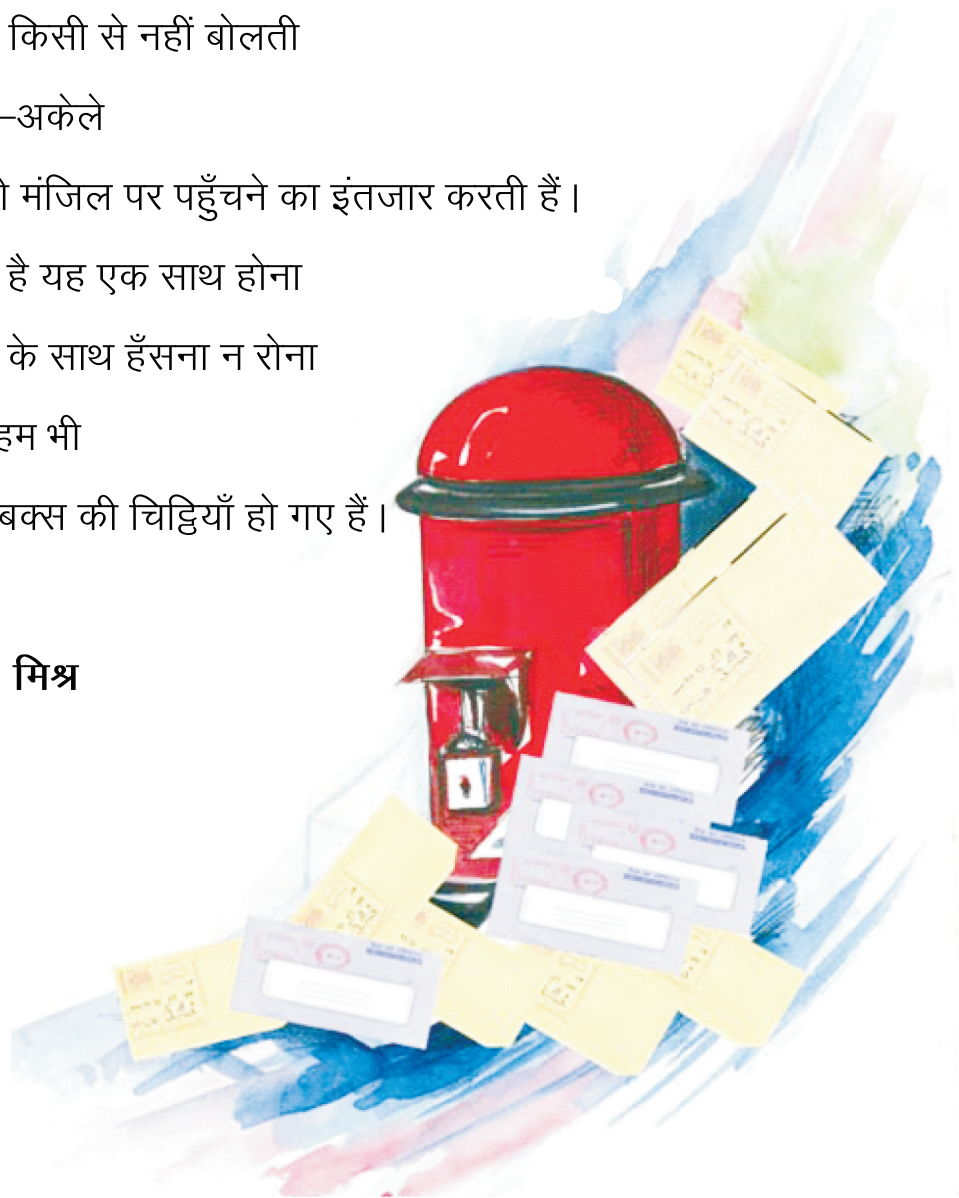
कैसा है यह एक साथ होना

दूसरे के साथ हँसना न रोना

क्या हम भी

लेटरबक्स की चिट्ठियाँ हो गए हैं।

—रामदरश मिश्र



भगवान के डाकिए

6



पक्षी और बादल,
ये भगवान के डाकिए हैं,
जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं।
हम तो समझ नहीं पाते हैं।
मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ
पेड़, पौधे, पानी और पहाड़
बाँचते हैं।
हम तो केवल यह आँकते हैं
कि एक देश की धरती
दूसरे देश को सुगंध भेजती है।
और वह सौरभ हवा में तैरते हुए
पक्षियों की पाँखों पर तिरता है।
और एक देश का भाप
दूसरे देश में पानी
बनकर गिरता है।

—रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

बाँचना	—	पढ़ना, सस्वर पढ़ना
आँकना	—	अनुमान करना
पाँख	—	पंख, पर
सौरभ	—	सुगंध, सुवास

प्रश्न—अभ्यास

कविता से

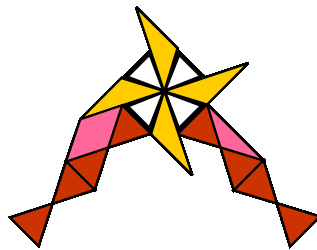
1. कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए क्यों बताया है ? स्पष्ट कीजिए।
2. पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिट्ठियों को कौन—कौन पढ़ पाते हैं ? सोचकर लिखिए।
3. किन पंक्तियों का भाव है—
 - क) पक्षी और बादल प्रेम, सद्भाव और एकता का संदेश एक देश से दूसरे देश को भेजते हैं ?
 - ख) प्रकृति देश—देश में भेदभाव नहीं करती। एक देश से उठा बादल दूसरे देश में बरस जाता है।
4. पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़—पौधे और पहाड़ क्या पढ़ पाते हैं ?
5. "एक देश की धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है"— कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

पाठ से आगे

1. पक्षी और बादल की चिट्ठियों के आदान-प्रदान को आप किस दृष्टि से देख सकते हैं ?
2. आज विश्व में कहीं भी संवाद भेजने और पाने का एक बड़ा साधन इंटरनेट है। पक्षी और बादल की चिट्ठियों की तुलना इंटरनेट से करते हुए दस पंक्तियाँ लिखिए।
3. 'हमारे जीवन में डाकिए की भूमिका' क्या है ? इस विषय पर दस वाक्य लिखिए।

अनुमान और कल्पना

डाकिया, इंटरनेट के वर्ल्ड वाइड वेब (डब्ल्यू. डब्ल्यू. डब्ल्यू. www.) तथा पक्षी और बादल – इन तीनों संवादवाहकों के विषय में अपनी कल्पना से एक लेख तैयार कीजिए। लेख लिखने के लिए आप 'चिट्ठियों की अनूठी दुनिया' पाठ का सहयोग ले सकते हैं।



7

प्लास्टिक जनित प्रदूषण

(लघु नाटिका)

दृश्य सरकारी विद्यालय का परिसर

पात्र—परिचय

प्रधानाचार्य	:	डा० भूषण
अध्यापिका	:	श्रीमती अर्चना
विद्यार्थी	:	संख्या एक
विद्यार्थी	:	संख्या दो
विद्यार्थी	:	संख्या तीन
विद्यार्थी	:	संख्या चार

विद्यालय में आज हलचल है। सभी विद्यार्थी उत्सुक हैं, क्योंकि आज उनके विद्यालय में 'मंत्री महोदय' (शिक्षा) पधार रहे हैं। सभी विद्यार्थी अपनी-अपनी तैयारी में जुटे हुए हैं।

(गीत, संगीत, नृत्य, नाटिका, वाद—विवाद आदि) सभी की उत्सुकता का एक कारण यह भी है कि आज एक नवीन विषय गम्भीर है इसलिए विद्यार्थी जी—जान से तैयारी में लगे हैं कि कहीं मंत्री महोदय के सामने उनका कार्यक्रम फीका न पड़ जाए। अध्यापक वर्ग तो विशेष रूप से तैयारी में थे।

डा० भूषण : (प्रधानाचार्य का आगमन—सारे कार्यक्रम को देखते हुए अर्चना जी (अध्यापिका) को सम्बोधित करते हुए) आप का नाटक पूरी तरह से तैयार है कि नहीं। विषय बहुत कठिन चुना है आपने 'प्लास्टिक जनित प्रदूषण'।

अर्चना : (अध्यापिका) जी जनाब, आज के दौर में समाज को प्राप्त सुविधा



को त्यागने के लिए कहना बहुत जटिल कार्य है। 'प्लास्टिक' तो आज घर-घर में विद्यमान है और सरकार को उसका फायदा भी बहुत है। आम लोगों का जीवन भी सरल हो गया है। प्लास्टिक के आने से घर की रसोई से लेकर आफिस तक, शादियों में, घरों की सजावट में इसका बहुत योगदान है। हम इसके उपयोग को कैसे नकार सकते हैं ?

प्रधानाचार्य : क्या आप का विषय समझ में आएगा सभी को ?

अर्चना : सर विषय तो गम्भीर है, कठिन भी है और लोगों को इस के दुष्परिणाम से अवगत कराना ही इस नाटिका का उद्देश्य है।

मंत्री महोदय जी के आते ही विद्यालय परिसर में हलचल शुरू हो जाती है। फूलों से प्रधानाचार्य मंत्री जी का स्वागत करते हैं। कार्यक्रम का आरम्भ नाटिका से होता है।

नाटक की प्रस्तुती विद्यालय के आठवीं कक्षा के विद्यार्थी तथा अध्यापिका अर्चना जी के द्वारा होती है, जिसमें वह विद्यार्थियों को प्लास्टिक जनित प्रदूषण के बारे में पढ़ा रही हैं।

दृश्य : कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों को पढ़ाते हुए अध्यापिका।

श्रीमती अर्चना (अध्यापिका) का मंच पर आगमन और बच्चों को सम्बोधित करते हुए वह कहती हैं कि प्यारे बच्चों आज हम प्लास्टिक से उत्पन्न प्रदूषण को लेकर एक लघु नाटिका प्रस्तुत करने जा रहे हैं।

बच्चों, आप को पता है कि रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक का अर्थ क्या है और इसके इस्तेमाल से क्या-क्या बीमारियाँ हो सकती हैं, इससे प्रदूषण कैसे फैलता है ?

विद्यार्थी (संख्या 1) : अध्यापिका जी, इस प्लास्टिक ने तो हमारी

बहुत—सी दुविधाओं को बदल दिया है, फिर यह खराब कैसे ?

श्रीमती अर्चना (अध्यापिका) आज मैं आप को इसी विषय में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी देना चाहती हूँ।

विद्यार्थी (संख्या 2) : (उत्सुकता से) अध्यापिका, जी कृपा करके यह बताएं कि यह प्लास्टिक क्या है ? इसका अर्थ तथा उससे कौन-कौन से रोग उत्पन्न हो सकते हैं ?

श्रीमती अर्चना (अध्यापिका) प्यारे बच्चों!

प्लास्टिक एक ग्रीक शब्द 'प्लास्टिकोस' से बना है, जिसका सीधा तात्पर्य है आसानी से नमनीय पदार्थ, जो किसी भी आकार में ढाला जा सकता है।

प्लास्टिक मुख्यतः पेट्रोलियम पदार्थों से निकलने वाले कृत्रिम रेजिन से बनाया जाता है। रेजिन में अमोनिया एवं बेंजीन को मिलाकर प्लास्टिक के मोनामर बनाए जाते हैं। इसमें कलोरीन, फुलुओरीन, कार्बन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, आक्सीजन एवं सल्फर के अणु होते हैं। लम्बे समय तक अपघटित न होने के अलावा भी प्लास्टिक अनेक अन्य प्रभाव छोड़ता है, जो मानव-स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

अध्यापिका : (अवश्य) उदाहरण स्वरूप पाइपों, खिड़कियों और दरवाज़ों के निर्माण में प्रयुक्त पी.वी.सी. प्लास्टिक विनाइल क्लोराइट से बनाया जाता है और इससे रसायन मस्तिष्क एवं यकृत में कैंसर पैदा कर सकता है। मशीनों की पैकिंग बनाने के लिए अत्यन्त कठोर पॉलीकार्बोनेट प्लास्टिक फॉस्जीन बिस्फेनॉल के बीच प्रतिक्रिया मौगिकों से प्राप्त किए जाते हैं। उनके एक अवयव, फॉस्जीन अत्यन्त विषैली व दमघोटू गैस है। फॉर्मैल्डिहाइड अनेक प्रकार के प्लास्टिक के निर्माण में प्रयुक्त होता है। यह रसायन त्वचा पर दाने उत्पन्न कर सकता है। कई

दिनों तक उसके सम्पर्क में बने रहने से दमा तथा सांस सम्बन्धी बीमारियाँ हो सकती हैं।

फिर भी बच्चों क्या आप जानते हैं कि इतनी बीमारियों के बाद भी विज्ञान की देन में प्लास्टिक का कम महत्त्व नहीं। 1970 के दशक से प्लास्टिक का प्रभाव इतना बढ़ गया है कि उसका औद्योगिक तथा घरेलू क्षेत्र में उपयोग अप्रत्याशित रूप से बढ़ा। इसका मुख्य कारण है—यह बहुत सुविधाजनक हो गया है। पीतल और ताँबे जैसी महँगी और कठिनता से प्राप्त होने वाली वस्तुओं की अपेक्षा प्लास्टिक अधिक सस्ता और सहज वस्तु दिखाई देता है। सस्ता, हल्का, ताप—विद्युत, कंपन—शोर—प्रतिरोधी तथा कम जगह घेरने वाला पदार्थ होने के कारण औद्योगिक कार्यों में धातुओं की जगह इसने ले ली है।

साथ ही वाहन, इलेक्ट्रॉनिक्स, दूरसंचार, कृषि उपकरण तथा अन्य आवश्यक कार्यों में भी प्लास्टिक को प्रतिनिधित्व मिला। विश्व में औसतन प्लास्टिक की खपत 15 किलो प्रतिव्यक्ति की तुलना में भारत में यह खपत प्रति व्यक्ति लगभग 1 किलो है। इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट जिसमें ईपॉक्सी प्रिंटेड सर्किट बोर्ड, चप्पल, टी. वी. कैबिनेट, टेपरिकॉर्डर के गियरबॉक्स, प्रकाश करने वाले स्त्रोत बटन इत्यादि शामिल हैं।

(विद्यार्थी बहुत ही जिज्ञासा से अध्यापिका की बात सुन रहे हैं।)

विद्यार्थी (संख्या 4) अध्यापिका जी फिर तो आप को यह भी पता होगा कि भारत और विश्व में 'प्लास्टिक' कितना निकलता होगा। कृपा करके हमें बताएँ—

(विद्यार्थियों के अलावा विद्यालय में बैठे गुरुजन, मंत्री महोदय, तथा बच्चों के माता—पिता भी इस नाटिका को बहुत ध्यान से सुन और देख रहे थे।)

अर्चना (अध्यापिका) बच्चों क्या आप जानते हैं कि भारत में प्रतिवर्ष 700

टन प्लास्टिक निकलता है, जबकि ऐसे प्लास्टिक अपशिष्ट की मात्रा विश्व में 7000 टन है। सन् 2001–2002 में भारत में प्लास्टिक की मांग 4.3 मिलीटन थी जो प्रतिवर्ष बढ़ने की सम्भावना है। वर्तमान में भारत में प्लास्टिक का बाजार 2500 करोड़ रुपए है। प्लास्टिक के उत्पादन की वृद्धि और इसकी विविध विशेषताओं के कारण आधुनिक युग में इसकी उपयोगिता बढ़ती जा रही है। टिकाऊपन, मनभावन रंगों में उपलब्धता और विविध आकार–प्रकारों में मिलने के कारण इसका प्रयोग आज जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। बाजार में खरीदारी के लिए रंग–बिरंगे केरी बैग से लेकर रसोईघर के बर्तन, कृषि के उपकरण, परिवहन–वाहन, जल–वितरण रक्षा उपकरण एवं इलेक्ट्रानिक्स, सहित अनेक क्षेत्रों में आज प्लास्टिक का बोल बाला है। यही नहीं वैज्ञानिकों ने मनुष्य का जो कृत्रिम हृदय बनाया है, वह भी प्लास्टिक से ही बनाया है।

विद्यार्थी (संख्या 1) : हैरानी है। अध्यापिका जी कि इस प्लास्टिक के उपयोग के बाद इसका क्या होता है, हमें यह जानने की बहुत उत्सुकता है। कृपा बताएँ—

अध्यापिका (श्रीमती अर्चना) क्यों नहीं ? यह आपके साथ–साथ सभी को समझना चाहिए कि प्लास्टिक की तमाम खूबियों के बावजूद उपयोग के बाद इसे फेंक दिया जाता है, जो अन्य कचरों की तरह आसानी से नष्ट नहीं होता। एक लम्बे समय तक अपघटित न होने के कारण यह लगातार एकत्रित होता जाता है और अनेक समस्याओं को जन्म देता है। इसके उपभोग के विभिन्न तरीकों से लेकर उत्पादन की प्रतिक्रियाओं के समय जिन गैसों का रिसना शुरू होता है, उससे श्रमिकों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता ही है। इसके साथ ही पर्यावरण भी दुष्प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता है।

इसके निर्माता यह भी भलीभाँति जानते हैं कि इन विषैले रसायनों से यहाँ

वातावरण भी विषैला हुए बिना नहीं रहता है, फिर भी इसका उपयोग कम नहीं है।

प्लास्टिक का कोई भी रूप चाहे वह थैलियों के रूप में क्यों न हो उपयोगोपरान्त इधर-एधर गड्ढों और नालियों में फेंक दी जाती है। इनसे प्रदूषण फैलता है। ये नालियों और गड्ढों में फंसकर उन्हें बन्द कर देती हैं। इन्हें विनष्ट करना कठिन होता है। सीवर चोक की जितनी घटनाएँ होती हैं उनमें 40 प्रतिशत पोलीथीन बैग की वजह से होती है।

विद्यार्थी (संख्या 2) : अध्यापिका जी, क्या इस प्लास्टिक कचरे को ठिकाने लगाने का कोई उपाय नहीं।

अध्यापिका : शाबाश, तुमने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। उपाय एक नहीं तीन-तीन हैं।

पहला उपाय — आमतौर पर प्लास्टिक के न सड़ने की प्रवृत्ति को देखते हुए इसे गड्ढों में भर दिया जाता है।

दूसरा उपाय — प्लास्टिक को जलाया जाता है, लेकिन यह तरीका बहुत प्रदूषणकारी है।

(प्लास्टिक जलने से कार्बन डाईऑक्साइड गैस निकलती है, जो वायुमंडल की 'ओज़ोन' परत के लिए नुकसानदायक है)

तीसरा और सर्वाधिक चर्चित उपाय — प्लास्टिक का पुनः चक्रण है। पुनः चक्रण का मतलब प्लास्टिक अपशिष्ट से पुनः प्लास्टिक प्राप्त करके प्लास्टिक की नई चीज़ें बनाना। (प्लास्टिक पुनः चक्रण की शुरुआत सर्वप्रथम 1970 में केलीफोर्निया की एक फर्म ने की)

विद्यार्थी (संख्या 3) : अध्यापिका जी क्या इससे पर्यावरण भी प्रभावित होता है ?

अध्यापिका (अर्चना जी) पर्यावरण और मानव दोनों ही एक दूसरे पर आधारित हैं और दोनों को एक दूसरे से नुकसान और फायदा भी होता है। (बच्चों विस्तार से सुनो) जर्मनी के पर्यावरण वैज्ञानिक के अनुसार यदि 5000 पोलिथीन बैग्स तैयार किए जाते हैं तो 17 किलो सल्फर डाईऑक्साइड गैस वायुमंडल में घुल जाता है। इसके अतिरिक्त मोनो ऑक्साइड, नाइट्रोजन और हाइड्रोकार्बनस का वायु से रिसाव होता है और पानी में कुछ जहरीले पदार्थ भी आकर मिलते हैं। इसी प्रकार जब फाइबर बनाये जाते हैं तो कम-से-कम 13 किलो नाइट्रोजन ऑक्साइड और 12 किलो सल्फर डाईऑक्साइड निकलकर वायुमंडल में मिलती है। गैसों से पेड़-पौधों एवं फसलों को नुकसान पहुँचता है। उनकी बाढ़ प्राकृतिक तरीके से नहीं हो पाती है। इस प्रकार प्लास्टिक के द्वारा पर्यावरण भी प्रभावित होता है।

पर्यावरण को अत्यधिक नुकसान पहुँचाने के साथ-साथ पशु धन को भी बहुत नुकसान पहुँचा है। सन् 2000 में लखनऊ शहर में गायों के पेट का ऑपरेशन कर आठ से दस किलो तक प्लास्टिक कचरा निकाला गया। कस्बों, शहरों एवं महानगरों में यहाँ प्रदूषण फैल रहा है, वहाँ नदियाँ, तालाब व झीलें भी प्रदूषित हो रही हैं। जलीय पक्षियों और मछलियों पर भी इनका प्रभाव अच्छूता नहीं है।

विद्यार्थी (संख्या 1) : अध्यापिका जी क्या भारत सरकार ने प्लास्टिक के दुष्प्रभाव पर कोई रोक या कानून नहीं बनाया है ?

अध्यापिका : बच्चों आप को जानकर बहुत प्रसन्नता होगी कि देश में विभिन्न भागों में प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति नागरिक जागृत होकर इसके इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने हेतु आन्दोलनरत हैं। भारत में केन्द्रीय सरकार ने प्लास्टिक मैन्यूफैक्चरर सैल एण्ड यूसेज रूल्स के अन्तर्गत 1999 में प्रतिबंध लगाया है, जिसमें पालन न करने पर राज्यों द्वारा छः माह की कड़ी सजा के

प्रावधान किए जाने, उद्योगों की बिजली काट दिए जाने और पालन न किए जाने की स्थिति में प्रतिष्ठान बन्द किये जाने जैसे प्रावधान हैं। (2 अक्टूबर, 2001) इन नियमों का उल्लंघन करने पर 3 महीने से एक वर्ष की कैद अथवा 25,000 रुपए का जुर्माना अथवा दोनों एक दण्ड स्वरूप दिए जा सकते हैं। हमारे देश में कानूनों की तो कमी नहीं है, कमी है तो बस उन्हें सख्ती से लागू करने की। बच्चों आशा है कि मेरी दी हुई जानकारी से आपका ज्ञान बढ़ा होगा। अब मैं आप से यह उम्मीद रखती हूँ कि आप भी प्लास्टिक का इस्तेमाल सोच-समझ कर करेंगे और अपने आस-पास के क्षेत्र में अन्य लोगों को भी जानकारी देंगे (प्लास्टिक जनित प्रदूषण की)।

धन्यवाद अध्यापिका जी, आज आप ने जो हमें ज्ञान दिया है, हम आपके आभारी हैं। हम आप को विश्वास दिलाते हैं कि इस कार्य में हम सरकार का पूरा साथ देंगे।

लघु नाटिका की समाप्ति पर सभी श्रोतागण प्रसन्न होते हैं। तालियों की गूँज से पात्रों का हौंसला बढ़ाते हैं।

मंत्री महोदय भी प्रसन्न होकर सभी पात्रों को पुरस्कार देकर उनका हौंसला बढ़ाते हैं।

(समाप्ति)

भाषा अध्ययन

शब्दार्थ

नमनीय	—	आर्द्र, गीला
कृत्रिम	—	बनावटी

प्रवृत्ति	—	स्वभाव
प्रतिबंध	—	रोक
चक्रण	—	पुनर्निर्माण

भाषा अध्ययन में अध्यापिका शब्दों के अर्थ समझा कर विद्यार्थियों को उसे वाक्य में परिवर्तित करना सिखाएगी।

प्रश्न—अभ्यास

- प्र.1 प्रस्तुत लघु नाटिका का नाम क्या है ?
- प्र.2 'प्लास्टिक' किस ग्रीक शब्द से निकला है ?
- प्र.3 'प्लास्टिक' से कौन-से रसायन निकलते हैं ? किन्हीं दो का नाम लिखें।
- प्र.4 'प्लास्टिक' के दुष्परिणाम क्या हैं ?
- प्र.5 प्लास्टिक जनित प्रदूषण को ठिकाने लगाने के कौन-कौन से उपाय हैं ?
- प्र.6 इस प्रदूषण से कौन-कौन-सी बीमारियाँ जन्म लेती हैं ?
- प्र.7 प्लास्टिक पुनः चक्रण की शुरुआत किस देश ने की थी और कब ?
- प्र.8 केन्द्र सरकार ने किस सन् में प्लास्टिक जनित प्रदूषण को रोकने के नियम बनाए और वे नियम कौन-से हैं ?

रिक्त स्थान भरो

1. विद्यालय में के आने से हलचल मची हुई थी।
2. अध्यापिका ने लघु नाटिका तैयार करवाई थी।
3. नाटक में पात्र थे।

4. प्लास्टिक एक ग्रीक शब्द से बना है ।
5. प्लास्टिक पुनः चक्रण की शुरुआत सर्वप्रथम सन्.....में
..... की एक फर्म ने की ।

योग्यता—विस्तार

इस पाठ को देखकर और सुनकर विद्यार्थी अपने—अपने मोहल्ले में प्लास्टिक के दुष्परिणामों से सबको अवगत कराएँगे ।



मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। समाचार-पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ही ऊँचे पद पर है उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं।

एक बहुत बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सुखी वही है जो कुछ नहीं करता। जो कुछ भी करेगा उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते ? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम या बिल्कुल ही नहीं। स्थिति अगर ऐसी है तो निश्चय ही चिंता का विषय है।

क्या यही भारतवर्ष है जिसका सपना तिलक और गांधी ने देखा था ? रवींद्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान संस्कृति-सभ्य भारतवर्ष किस अतीत के गह्वर में डूब गया ? आर्य और द्रविड़, हिंदू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलन-भूमि 'मानव महा-समुद्र' क्या सूख ही गया ? मेरा मन कहता है ऐसा हो नहीं सकता। हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ

तथा फरेब का रोज़गार करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया है, उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक गुण स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विचार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत बुरा आचरण है। भारतवर्ष ने कभी भी उन्हें उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के बंधन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है। परंतु भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह है कि इस देश के कोटि-कोटि दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे-कानून बनाए गए हैं जो कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति को अधिक उन्नत और सुचारु बनाने के लक्ष्य से प्रेरित है, परंतु जिन लोगों को इन कार्यों में लगना है, उनका मन सब समय पवित्र नहीं होता, प्रायः वे ही लक्ष्य को भूल जाते हैं और अपनी ही सुख-सुविधा की ओर ज़्यादा ध्यान देने लगते हैं।

भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज़ है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। समाचार पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीज़ों को गलत समझते हैं और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।

दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लिया जाता है



और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैंकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जागती है।



एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपये का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपये रख दिए और बोला, "यह बहुत गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।" उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

कैसे कहूँ कि दुनिया से सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गई है, वैसी अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं, परंतु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

एक बार मैं बस में यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी और तीन बच्चे भी थे। बस में कुछ खराबी थी, रुक-रुककर चलती थी। गंतव्य से कोई आठ किलोमीटर पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान में बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गए। कंडक्टर उतर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को संदेह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है।

बस में बैठे लोगों ने तरह-तरह की बातें शुरू कर दी। किसी ने कहा, "यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूटा गया था।" परिवार सहित अकेला मैं ही था, बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। ऊपर से आदमियों का डर समा गया था।



कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़कर मारने—पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने लगा और बोला, “हम लोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, वे लोग मारेंगे।” डर तो मेरे मन में था पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं है। परंतु यात्री इतने घबरा गए कि मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, “इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।”

मैं भी बहुत भयभीत था पर ड्राइवर को किसी तरह मार—पीट से बचाया। डेढ़—दो घंटे बीत गए। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और पत्नी की हालत बुरी थी। लोगों ने ड्राइवर को मारा तो नहीं पर उसे बस से उतारकर एक जगह घेरकर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है तो पहले ड्राइवर को समाप्त कर देना उन्हें उचित जान पड़ा। मेरे गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। इसी समय क्या देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उस पर हमारा बस कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा, “अड़्डे से नई बस लाया हूँ, इस बस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है।” फिर मेरे पास एक लोटे में पानी और थोड़ा दूध लेकर आया और बोला, “पंडित जी। बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। वहीं दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया।” यात्रियों में फिर जान आई। सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्राइवर से माफ़ी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड़्डे पहुँच गए।

कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई। कैसे कहूँ कि लोगों में दया—माया रह ही नहीं गई। जीवन में जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है, परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात

नाम की चीज मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा, परंतु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है, निराश मन को ढाँढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।

मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है, लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

मेरे मन! निराश होने की जरूरत नहीं है।

—हजारी प्रसाद द्विवेदी

शब्दार्थ

धर्मभीरु	—	जिसे धर्म छूटने का भय हो, अधर्म से डरनेवाला
पर्दाफ़ाश	—	भेद खोलना, दोष प्रकट करना
उजागर	—	प्रकट करना
ढाँढ़स	—	दिलासा, धीरज
श्रमजीवी	—	श्रम से जीविका
आचरण	—	चरित्र, चालचलन
गंतव्य	—	मंजिल, लक्ष्य
दोषोद्घाटन	—	दोष बताना

चरम — अंतिम, आखिरी

प्रश्न-अभ्यास

आपके विचार से

1. लेखक ने स्वीकार किया है कि लोगों ने उन्हें भी धोखा दिया है फिर भी वह निराश नहीं है। आपके विचार से इस बात का क्या कारण हो सकता है ?
2. समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं और टेलीविज़न पर आपने ऐसी अनेक घटनाएँ देखी-सुनी होंगी जिनमें लोगों ने बिना किसी लालच के दूसरों की सहायता की हो या ईमानदारी से काम किया हो। ऐसे समाचार तथा लेख एकत्रित करें और कम-से-कम दो घटनाओं पर अपनी टिप्पणी लिखें।
3. लेखक ने अपने जीवन की दो घटनाओं में रेलवे के टिकट बाबू और बस कंडक्टर की अच्छाई और ईमानदारी की बात बताई है। आप भी अपने या अपने किसी परिचित के साथ हुई किसी घटना के बारे में बताइए जिसमें किसी ने बिना किसी स्वार्थ के भलाई, ईमानदारी और अच्छाई के कार्य किए हों।

पर्दाफ़ाश

1. दोषों का पर्दाफ़ाश करना कब बुरा रूप ले सकता है ?
2. आजकल के बहुत से समाचार पत्र या समाचार चैनल 'दोषों का पर्दाफ़ाश' कर रहे हैं। इस प्रकार के समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता पर तर्क सहित विचार लिखिए ?

कारण बताइए

निम्नलिखित के संभावित परिणाम क्या-क्या हो सकते हैं ? आपस में चर्चा कीजिए, जैसे—“ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है।” परिणाम—भ्रष्टाचार बढ़ेगा।

1. “सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है।”
2. “झूठ और फरेब का रोज़गार करने वाले फल-फूल रहे हैं।”
3. “हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम।”

दो लेखक और बस यात्रा

आपने इस लेख में एक बस की यात्रा के बारे में पढ़ा। इससे पहले भी आप एक बस यात्रा के बारे में पढ़ चुके हैं। यदि दोनों बस-यात्राओं के लेखक आपस में मिलें तो एक-दूसरे को कौन-कौन सी बातें बताते ? अपनी कल्पना से उनकी बातचीत लिखिए।

सार्थक शीर्षक

1. लेखक ने लेख का शीर्षक ‘क्या निराश हुआ जाए’ क्यों रखा होगा ? क्या आप इससे भी बेहतर शीर्षक सुझा सकते हैं ?
2. यदि ‘क्या निराश हुआ जाए’ के बाद कोई विराम चिह्न लगाने के लिए कहा जाए तो आप दिए गए चिन्हों में से कौन सा चिह्न लगाएँगे ? अपने चुनाव का कारण भी बताइए। — , । . , ! , ? , — , ।

“आदर्शों की बातें करना तो बहुत आसान है पर उन पर चलना बहुत कठिन है।” क्या आप इस बात से सहमत हैं ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

सपनों का भारत

“हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।”

1. आपके विचार से हमारे महान विद्वानों ने किस तरह के भारत के सपने देखे थे? लिखिए।
2. आपके सपनों का भारत कैसा होना चाहिए ? लिखिए।

भाषा की बात

1. दो शब्दों के मिलने से समास बनता है। समास का एक प्रकार है – द्वंद्व समास। इसमें दोनों शब्द प्रधान होते हैं। जब दोनों भाग प्रधान होंगे तो एक-दूसरे में द्वंद्व (स्पर्धा/होड़) की संभावना होती है। कोई किसी से पीछे रहना नहीं चाहता, जैसे—चरम और परम = चरम-परम, भीरु और बेबस = भीरु-बेबस! दिन और रात = दिन-रात।
' और ' के साथ आए शब्दों के जोड़े को 'और' हटाकर (—) योजक चिह्न भी लगाया जाता है। कभी-कभी एक साथ भी लिखा जाता है। द्वंद्व समास के बारह उदाहरण ढूँढकर लिखिए।
2. पाठ से तीनों प्रकार की संज्ञाओं के उदाहरण खोजकर लिखिए।



9

कामचोर

बड़ी देर के बाद—विवाद के बाद यह तय हुआ कि सचमुच नौकरों को निकाल दिया जाए। आखिर, ये मोटे—मोटे किस काम के हैं! हिलकर पानी नहीं पीते। इन्हें अपना काम खुद करने की आदत होनी चाहिए। कामचोर कहीं के!

“तुम लोग कुछ नहीं। इतने सारे हो और सारा दिन ऊधम मचाने के सिवा कुछ नहीं करते।”

और सचमुच हमें ख्याल आया कि हम आखिर काम क्यों नहीं करते ? हिलकर पानी पीने में अपना क्या खर्च होता है ? इसलिए हमने तुरंत हिल—हिलाकर पानी पीना शुरू किया।

हिलने में धक्के भी लग जाते हैं और हम किसी के दबैल तो थे नहीं कि कोई धक्का दे, तो सह जाएँ। लीजिए, पानी के मटकों के पास ही घमासान युद्ध हो गया। सुराहियाँ उधर लुढ़कीं। मटके इधर गए। कपड़े भीगे, सो अलग।

यह भला काम करेंगे।
अम्मा ने निश्चय किया।

“करेंगे कैसे नहीं! देखो जी!
जो काम नहीं करेगा, उसे रात का
खाना हरगिज़ नहीं मिलेगा।



समझे।”

यह लीजिए बिल्कुल शाही फरमान जारी हो रहे हैं।

“हम काम करने को तैयार हैं। काम बताए जाएँ”, हमने दुहाई दी।

“बहुत—से काम हैं जो तुम कर सकते हो। मिसाल के लिए यह दरी कितनी मैली हो रही है। आँगन में कितना कूड़ा पड़ा है। पेड़ों में पानी देना है और भाई मुफ्त तो यह काम करवाए नहीं जाएँगे। तुम सबको तनख्वाह भी मिलेगी।”

अब्बा मियाँ ने कुछ काम बताए और दूसरे कामों का हवाला भी दिया—माली को तनख्वाह मिलती है। अगर सब बच्चे मिलकर पानी डालें, तो.....

‘ऐ हे! खुदा के लिए नहीं। घर में बाढ़ आ जाएगी।’ अम्मा ने याचना की।



फिर भी तनख्वाह के सपने देखते हुए हम लोग काम पर तुल गए।

एक दिन फर्शी दरी पर बहुत—से बच्चे जुट गए और चारों ओर से कोने पकड़कर झटकना शुरू किया। दो—चार ने लकड़ियाँ लेकर धुआँधार पिटाई शुरू

कर दी।

सारा घर धूल से अट गया। खाँसते-खाँसते सब बेदम हो गए। सारी धूल जो दरी पर थी, जो फर्श पर थी, सबके सिरों पर जम गई। नाकों और आँखों में घुस गई। बुरा हाल हो गया सबका। हम लोगों को तुरंत आँगन में निकाला गया। वहाँ हम लोगों ने फौरन झाड़ू देने का फैसला किया।

झाड़ू क्योंकि एक थी और तनखाह लेनेवाले उम्मीदवार बहुत, इसलिए क्षण-भर में झाड़ू के पुर्जे उड़ गए। जितनी सींके जिसके हाथ पड़ीं, वह उनसे ही उलटे-सीधे हाथ मारने लगा। अम्मा ने सिर पीट लिया। भई, ये बुजुर्ग काम करने दें तो इंसान काम करे। जब ज़रा-ज़रा सी बात पर टोकने लगे तो बस, हो चुका काम!

असल में झाड़ू देने से पहले ज़रा-सा पानी छिड़क लेना चाहिए। बस, यह ख्याल आते ही तुरंत दरी पर पानी छिड़का गया। एक तो वैसे ही धूल से अटी हुई थी। पानी पड़ते ही सारी धूल कीचड़ बन गई।

अब सब आँगन से भी निकाले गए। तय हुआ कि पेड़ों को पानी दिया जाए। बस, सारे घर की बालटियाँ, लोटे, तसले, भगौने, पतिलियाँ लूट ली गईं। जिन्हें ये चीजें भी न मिलीं, वे डोंगे-कटोरे और गिलास ही ले भागे। अब सब लोग नल पर टूट पड़े। यहाँ भी वह घमासान मची कि क्या मजाल जो एक बूँद पानी भी किसी के बर्तन में आ सके। ठूसम-ठास! किसी बाल्टी पर पतीला और पतीले पर लोटा और भगौने और डोंगे। पहले तो धक्के चले। फिर कुहनियाँ और उसके बाद बरतन। फौरन बड़े भाइयों, बहनों, मामुओं और दमदार मौसियों, फूफियों की कुमक भेजी गई, फौज मैदान में हथियार फेंककर पीठ दिखा गई।

इस धींगामुश्ती में कुछ बच्चे कीचड़ में लथपथ हो गए जिन्हें नहलाकर

कपड़े बदलवाने के लिए नौकरों की वर्तमान संख्या काफी नहीं थी। पास के बंगलों से नौकर आए और चार आना प्रति बच्चा के हिसाब से नहलवाए गए।

हम लोग कायल हो गए कि सचमुच यह सफाई का काम अपने बस की बात नहीं और न पेड़ों की देखभाल हमसे हो सकती है। कम-से-कम मुर्गियाँ ही बंद कर दें।

बस, शाम ही से जो बाँस, छड़ी हाथ पड़ी, लेकर मुर्गियाँ हाँकने लगे। 'चल दड़बे, दड़बे।'

पर साहब, मुर्गियों को भी किसी ने हमारे विरुद्ध भड़का रखा था। ऊट-पटाँग इधर-उधर कूदने लगीं। दो मुर्गियाँ खीर के प्यालों पर से जिन पर आया चाँदी के वर्क लगा रही थी, दौड़ती-फड़फड़ाती हुई निकल गईं।

तूफान गुज़रने के बाद पता चला कि प्याले खाली हैं और सारी खीर दीदी के कामदानी के दुपट्टे और ताजे धुले सिर पर लगी हुई है। एक बड़ा-सा मुर्गा अम्मा के खुले हुए पानदान में कूद पड़ा और कत्थे-चूने में लुथड़े हुए पंजे लेकर नानी अम्मा की सफेद दूध जैसी चादर पर छापे मारता हुआ निकल गया।

एक मुर्गी दाल की पतीली में छपाक मारकर भागी और सीधी जाकर मोरी में इस तेजी से फिसली कि सारी कीचड़ मौसी जी के मुँह पर पड़ी जो बैठी हुई हाथ-मुँह धो रही थीं। इधर सारी मुर्गियाँ बेनकेल का ऊँट बनी चारों तरफ दौड़ रही थीं।

एक भी दड़बे में जाने को राज़ी न थी।

इधर, किसी को सूझी कि जो भेड़ें आई हुई हैं, लगे हाथों उन्हें भी दाना खिला दिया जाए।

दिन—भर की भूखी भेड़ें दाने का सूप देखकर जो सबकी सब झपट्टीं तो भागकर जाना कठिन हो गया। लश्टम—पश्टम तख्तों पर चढ़ गईं। पर भेड़—चाल मशहूर है। उनकी नज़र तो बस दाने के सूप पर जमी हुई थी। पलंगों को फलौंगती, बरतन लुढ़काती साथ—साथ चढ़ गईं।

तख्त पर बनी दीदी का दुपट्टा फैला हुआ था, जिस पर गोखरी, चंपा और सलमा—सितारे रखकर बड़ी दीदी मुगलानी बुआ को कुछ बता रही थीं। भेड़ें बहुत निःसंकोच सबको रौंदती, मँगनों का छिड़काव करती हुई दौड़ गईं।

जब तूफान गुज़र चुका तो ऐसा लगा जैसे जर्मनी की सेना टैंकों और बमबारों सहित उधर से छापा मारकर गुजर गई हो। जहाँ—जहाँ से सूप गुजरा, भेड़ें शिकारी कुत्तों की तरह गंध सूँघती हुई हमला करती गईं।

हज्जन माँ एक पलंग पर दुपट्टे से मुँह ढाँके सो रही थीं। उन पर से जो भेड़ें दौड़ीं तो न जाने वह सपने में किन महलों की सैर कर रही थीं, दुपट्टे में उलझी 'मारो—मारो' चीखने लगीं।

इतने में भेड़ें सूप को भूलकर तरकारीवाली की टोकरी पर टूट पड़ीं। वह दालान में बैठी मटर की फलियाँ तोल—तोल कर रसोइए को दे रही थी। वह अपनी तरकारी का बचाव करने के लिए सीना तान कर उठ गई। आपने कभी भेड़ों को मारा होगा, तो अच्छी तरह देखा होगा कि बस, ऐसा लगता है जैसे रुई के तकिए को कूट रहे हों। भेड़ को चोट ही नहीं लगती। बिल्कुल यह समझकर कि आप उससे मजाक कर रहे हैं। वह आप ही पर चढ़ बैठेगी। ज़रा—सी देर में भेड़ों ने तरकारी छिलकों समेत अपने पेट की कढ़ाही में झोंक दी।

इधर यह प्रलय मची थी, उधर दूसरे बच्चे भी लापरवाह नहीं थे। इतनी बड़ी फौज थी—जिसे रात का खाना न मिलने की धमकी मिल चुकी थी। वे चार भैंसों

का दूध दुहने पर जुट गए। धुली-बेधुली बाल्टी लेकर आठ हाथ चार थनों पर पिल पड़े। भैंस एकदम जैसे चारों पैर जोड़कर उठी और बाल्टी को लात मारकर दूर जा खड़ी हुई।

तय हुआ कि भैंस की अगाड़ी-पिछाड़ी बाँध दी जाए और फिर काबू में लाकर दूध दुह लिया जाए। बस, झूले की रस्सी उतारकर भैंस के पैर बाँध दिए गए। पिछले दो पैर चाचा जी की चारपाई के पायों से बाँधे, अगले दो पैरों को बाँधने की कोशिश जारी थी कि भैंस चौकन्नी हो गई। छूटकर जो भागी तो पहले चाचा जी समझे कि शायद कोई सपना देख रहे हैं। फिर जब चारपाई पानी के झ्रम से टकराई और पानी छलककर गिरा तो समझे कि आँधी-तूफान में फँसे हैं। साथ में भूचाल भी आया हुआ है। फिर जल्दी ही उन्हें असली बात का पता चल गया और वह पलंग की दोनों पटियाँ पकड़े, बच्चों को छोड़ देनेवालों को बुरा-भला सुनाने लगे।

यहाँ बड़ा मज़ा आ रहा था। भैंस भागी जा रही थी और पीछे-पीछे चारपाई



और उस पर बैठे हुए थे चाचा जी ।

ओहो! एक भूल हो गई यानी बछड़ा तो खोला ही नहीं, इसलिए तत्काल बछड़ा भी खोल दिया गया ।

तीर निशाने पर बैठा और बछड़े की ममता में व्याकुल होकर भैंस ने अपने खुरों को ब्रेक लगा दिए । बछड़ा तत्काल जुट गया । दुहने वाले गिलास—कटोरे लेकर लपके क्योंकि बाल्टी तो छपाक से गोबर में जा गिरी थी । बछड़ा फिर बागी हो गया ।

कुछ दूध ज़मीन पर और कपड़ों पर गिरा । दो—चार धारें गिलास—कटोरों पर भी पड़ गईं । बाकी बछड़ा पी गया । यह सब कुछ, कुछ मिनट के तीन—चौथाई में हो गया ।

घर में तूफ़ान उठ खड़ा हुआ । ऐसा लगता था जैसे सारे घर में मुर्गियाँ, भेड़ें, टूटे हुए तसले, बालटियाँ, लोटे, कटोरे और बच्चे थे । बच्चे बाहर किए गए । मुर्गियाँ बाग में हँकाई गईं । मातम—सा मनाती तरकारी वाली के आँसू पोंछे गए और अम्मा आगरा जाने के लिए सामान बाँधने लगीं ।

“या तो बच्चा—राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो । नहीं तो मैं चली मायके,” अम्मा ने चुनौती दे दी ।

और अब्बा ने सबको कतार में खड़ा करके पूरी बटालियन का कोर्ट मार्शल कर दिया । “अगर किसी बच्चे ने घर की किसी चीज़ को हाथ लगाया तो बस, रात का खाना बंद हो जाएगा ।”

ये लीजिए! इन्हें किसी करवट शांति नहीं । हम लोगों ने भी निश्चय कर लिया कि अब चाहे कुछ भी हो जाए, हिलकर पानी भी नहीं पिँएँगे ।

—इस्मत चुगताई

शब्दार्थ

छबैल	—	दब्बू
घमासान	—	घोर, भयानक
फरमान	—	राजाज्ञा
तनख्वाह	—	वेतन, पगार
फर्शी	—	फर्श पर बिछी हुई
हवाला	—	उल्लेख करना, उदाहरण
धुआँधार	—	ताबड़तोड़
कुमक	—	फौजी टुकड़ी
धंगा—मुश्ती	—	धक्का—मुक्की, लड़ना—भिड़ना, शरारत
लथपथ	—	सना हुआ, तर
दड़बा	—	मुर्गियों के रहने की जगह
मोरी	—	नाली, गंदे पानी की नाली
बेनकेल	—	बिना नकेल (पशुओं की नाक में पहनाई जाने वाली रस्सी), रस्सी के बिना
दालान	—	बरामदा
तरकारी	—	सब्ज़ी
मातम	—	शोक मनाना
बटालियन	—	पलटन
कोर्ट मार्शल	—	फौजी अदालत में सजा सुनाने की तरह

प्रश्न—अभ्यास

कहानी से

1. कहानी में 'मोटे—मोटे किस काम के हैं' ? किन के बारे में और क्यों कहा गया?
2. बच्चों के ऊधम मचाने के कारण घर की क्या दुर्दशा हुई ?
3. "या तो बच्चाराज कायम कर लो या मुझे ही रख लो।" अम्मा ने कब कहा ? और इसका परिणाम क्या हुआ ?
4. 'कामचोर' कहानी क्या संदेश देती है ?
5. क्या बच्चों ने उचित निर्णय लिया कि अब चाहे—कुछ भी हो जाए, हिलकर पानी भी नहीं पिँगेंगे।

कहानी से आगे

1. घर के समान्य काम हों या अपना निजी काम, प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुरूप उन्हें करना आवश्यक क्यों है ?
2. भरा—पूरा परिवार कैसे सुखद बन सकता है और कैसे दुःखद ? कामचोर कहानी के आधार पर निर्णय कीजिए।
3. बड़े होते बच्चे किस प्रकार माता—पिता के सहयोगी हो सकते हैं और किस प्रकार भार ? कामचोर कहानी के आधार पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
4. 'कामचोर' कहानी एकल परिवार की कहानी है या संयुक्त परिवार की ? इन दोनों तरह के परिवारों में क्या—क्या अंतर होते हैं ?

अनुमान और कल्पना

1. घरेलू नौकरों को हटाने की बात किन-किन परिस्थितियों में उठ सकती है ? विचार कीजिए ।
2. कहानी में एक समृद्ध परिवार के ऊधमी बच्चों का चित्रण है । आपके अनुमान से उनकी आदत क्यों बिगड़ी होगी ? उन्हें ठीक ढंग से रहने के लिए आप क्या-क्या सुझाव देना चाहेंगे ?
3. किसी सफल व्यक्ति की जीवनी से उसके विद्यार्थी जीवन की दिनचर्या के बारे में पढ़ें और सुव्यवस्थित कार्यशैली पर एक लेख लिखें ।

भाषा की बात

“धुली-बेधुली बालटी लेकर आठ हाथ चार थनों पर पिल पड़े ।” धुली शब्द से पहले ‘बे’ लगाकर बेधुली बना है । जिसका अर्थ है ‘बिना धुली’ ‘बे’ एक उपसर्ग है । ‘बे’ उपसर्ग से बनने वाले कुछ और शब्द हैं—

बेतुका, बेईमान, बेघर, बेचैन, बेहोश आदि । आप भी नीचे लिखे उपसर्गों से बनने वाले शब्द खोजिए—

1. प्र
2. आ
3. भर
4. बद



10

जीवन नहीं मरा करता है



छिप-छिप अश्रु बहाने वालो!

मोती व्यर्थ लुटाने वालो!

कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।

सपना क्या है ? नयन-सेज पर

सोया हुआ आँख का पानी,

और टूटना है उसका ज्यों

जागे कच्ची नींद जवानी।

गीली उमर बनाने वालो

डूबे बिना नहाने वालो

कुछ पानी के बह जाने से

सावन नहीं मरा करता है।

माला बिखर गई तो क्या है ?

खुद ही हल हो गई समस्या।

आँसू गर नीलाम हुए तो

समझो पूरी हुई तपस्या।



रूठे दिवस मनाने वालों!
फटी कमीज़ सिलाने वालों!
कुछ दीपों के बुझ जाने से आँगन नहीं मरा करता है।

खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल जिल्द बदलती पोथी,
जैसे रात उतार चाँदनी
पहने सुबह धूप की धोती।

वस्त्र बदलकर आने वालों!
चाल बदलकर जाने वालों!
चंद खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है।

लाखों बार गगरियाँ फूटीं
शिकन न आई पनघट पर।
कितनी बार किशियाँ डूबीं,
चहल—पहल वो ही है तट पर।

तम की उमर बढ़ाने वालों!

लौ की आयु घटाने वालों!

लाख करे पतझड़ कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है।

लूट लिया माली ने उपवन

लूटी न लेकिन गंध फूल की।

तूफानों तक ने छेड़ा पर,

खिड़की बंद न हुई धूल की।

नफरत गले लगाने वालो!

सब पर धूल उड़ाने वालो!

कुछ मुखड़ों की नाराज़ी से दर्पण नहीं मरा करता है।

—गोपाल दास 'नीरज'

शब्दार्थ

- | | | |
|-----------|---|--|
| 1. नयन | — | आँख |
| 2. सेज | — | बिस्तर, बिछावन |
| 3. अश्रु | — | आँसू |
| 4. व्यर्थ | — | अर्थहीन, अनावश्यक |
| 5. शिकन | — | सिलवटें, सिकुड़न |
| 6. पनघट | — | पानी भरने का घाट, वह घाट जहाँ लोग पानी भरते हैं। |

प्रश्न अभ्यास

बोध और सराहना

1. इस कविता के माध्यम से कवि ने क्या कहना चाहा है ?
2. कवि ने कैसे लोगों को ललकारा है ?
नीचे हम एक के बारे में बता रहे हैं। शेष के बारे में आप बताएँ—
(क) विपत्ति में घबराकर रोने वालों की (घ)
(ख) (ङ)
(ग)
3. कवि ने क्या—क्या उदाहरण देकर हमारा हौसला बढ़ाया है ?
4. कविता के आधार पर सपने को परिभाषित करें।
5. किन स्थितियों में समस्या के समाधान मिल जाने की बात कही गई है ?
आप उससे कहाँ तक सहमत हैं ?
6. 'गीता' के निम्नांकित श्लोक का भाव इस कविता की किन पंक्तियों से मिलता है ?
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरो पराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही । (2-22)
7. पनघट पर घड़े फूटने से और जलधारा में नावों के डूबने पर भी तट पर चहल—पहल क्यों बनी रहती है ? कवि ने इन उदाहरणों के आधार पर क्या बताना चाहा है ?
8. फूल की गंध की विशेषता क्या है ?

9. निम्नांकित पदबंधों का भाव—सौन्दर्य स्पष्ट करें —

- | | |
|---------------------|-----------------------|
| (क) आँसू नीलाम होना | (घ) तम की उम्र बढ़ाना |
| (ख) गीली उमर | (ङ) लौ की आयु घटाना |
| (ग) रूठा दिवस | |

योग्यता विस्तार

1. हाव—भाव के साथ इस कविता का वाचन करें।
2. इस कविता के भाव से मिलते—जुलते भाव की कविताएँ कई कवियों ने रची है। उनका संकलन करें।
3. "हमें दुःख या विपत्ति से नहीं घबराना चाहिए" विषय पर कक्षा में चर्चा करें।

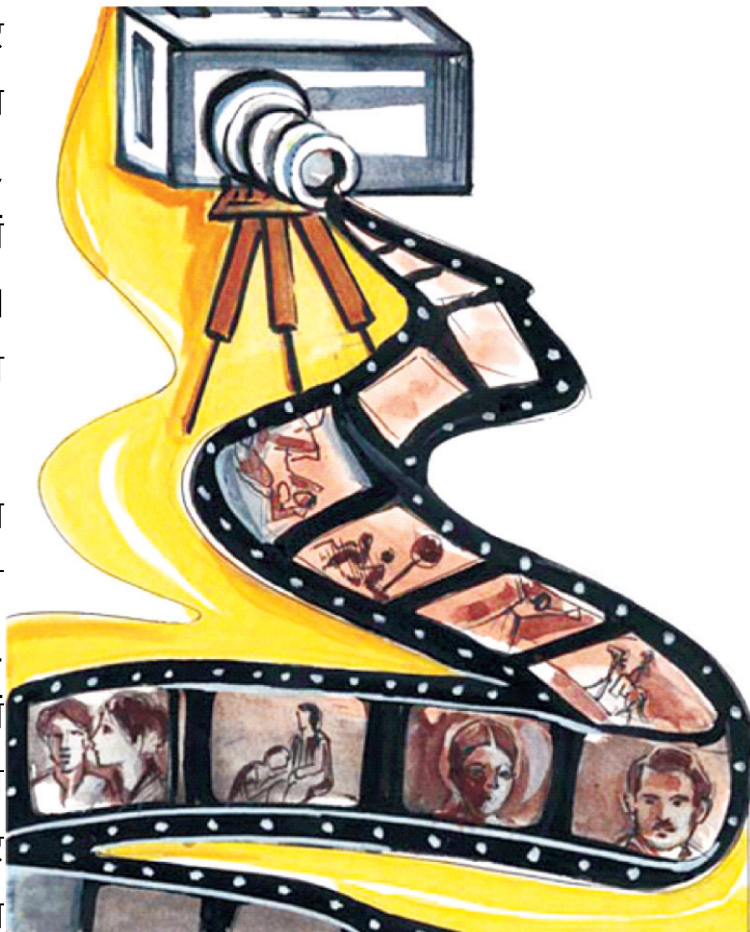


जब सिनेमा ने बोलना सीखा

11

‘वे सभी सजीव हैं, साँस ले रहे हैं, शत-प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहत्तर मुर्दा इंसान जिंदा हो गए, उनको बोलते, बातें करते देखो।’ देश की पहली सवाक् फिल्म ‘आलम आरा’ के पोस्टरों पर विज्ञापन की ये पंक्तियाँ लिखी हुई थीं। 14 मार्च 1931 की वह ऐतिहासिक तारीख भारतीय सिनेमा में बड़े बदलाव का दिन था। इसी दिन पहली बार भारत के सिनेमा ने बोलना सीखा था। हालाँकि वह दौर ऐसा था जब मूक सिनेमा लोकप्रियता के शिखर पर था। ‘पहली बोलती फिल्म जिस साल प्रदर्शित हुई, उसी साल कई मूक फिल्में भी विभिन्न भाषाओं में बनीं। मगर बोलती फिल्मों का नया दौर शुरू हो गया था।

पहली बोलती फिल्म आलम आरा बनाने वाले फिल्मकार थे अर्देशिर एम. ईरानी। अर्देशिर ने 1929 में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म ‘शो बोट’ देखी और उनके मन में बोलती फिल्म



IMPERIAL MOVITONE
PRESENTS
INDIA'S FIRST Perfect TALKIE
-ALAM-ARA-
All Using, Breathing 100%. Talking!
Master Shaligram,
the Amazing Strong
Man of Marathi,
Trainer of
Champion
and Star Fox Production
and
Master Vilhal
and
Miss Zubeda,
the ALL-ROUNDER
and Master of Marathi.
A Complete Entertainment in 19.50
CINEMA MAJESTIC
Circular - BOMBAY.

74



भविष्य के कई स्टार और तकनीशियन तो दिए ही, अर्देशिर की कंपनी तक ने भारतीय सिनेमा के लिए डेढ़ सौ से अधिक मूक और लगभग सौ सवाक् फिल्में बनाईं।

‘आलम आरा’ फिल्म ‘अरेबियन नाइट्स’ जैसी फैंटेसी थी। फिल्म ने हिंदी-उर्दू के मेलवाली ‘हिंदुस्तानी’ भाषा को लोकप्रिय बनाया। इसमें गीत, संगीत तथा नृत्य के अनोखे संयोजन थे। फिल्म की नायिका जुबैदा थीं। नायक थे विट्ठल। वे उस दौर के सर्वाधिक पारिश्रमिक पाने वाले स्टार थे। उनके चयन को लेकर भी एक किस्सा काफी चर्चित है। विट्ठल को उर्दू बोलने में मुश्किलें आती थीं। पहले उनका बतौर नायक चयन किया गया मगर इसी कमी के कारण उन्हें हटाकर उनकी जगह मेहबूब को नायक बना दिया गया। विट्ठल नाराज़ हो गए और अपना हक पाने के लिए उन्होंने मुकदमा कर दिया।

उस दौर में उनका मुकदमा मोहम्मद अली जिन्ना ने लड़ा जो तब के मशहूर वकील हुआ करते थे। विट्ठल मुकदमा जीते और भारत की पहली बोलती फिल्म के नायक बने। उनकी कामयाबी आगे भी जारी रही। मराठी और हिंदी फिल्मों में वे लंबे समय तक नायक और स्टंटमैन के रूप में सक्रिय रहे। इसके अलावा ‘आलम आरा’ में सोहराब मोदी, पृथ्वीराज कपूर, याकूब और जगदीश सेठी जैसे अभिनेता भी मौजूद रहे आगे चलकर जो फिल्मोद्योग के प्रमुख स्तंभ बने।

यह फिल्म 14 मार्च 1931 को मुंबई के ‘मैजेस्टिक’ सिनेमा में प्रदर्शित हुई। फिल्म 8 सप्ताह तक ‘हाउसफुल’ चली और भीड़ इतनी उमड़ती थी कि पुलिस के लिए नियंत्रण करना मुश्किल हो जाया करता था। समीक्षकों ने इसे ‘भड़कीली फैंटेसी’ फिल्म करार दिया था, मगर दर्शकों के लिए यह फिल्म एक अनोखा अनुभव थी। यह फिल्म 10 हजार फुट लंबी थी और इसे चार महीनों की कड़ी मेहनत से तैयार किया गया था।

सवाक् फिल्मों के लिए पौराणिक कथाओं, पारसी रंगमंच के नाटकों, अरबी प्रेम-कथाओं को विषय के रूप में चुना गया। इनके अलावा कई सामाजिक विषयों वाली फिल्में भी बनीं। ऐसी ही एक फिल्म थी 'खुदा की शान।' इसमें एक किरदार महात्मा गांधी जैसा था। इसके कारण सवाक् सिनेमा को ब्रिटिश प्रशासकों की तीखी नज़र का सामना करना पड़ा।

सवाक् सिनेमा के नए दौर की शुरुआत कराने वाले निर्माता-निर्देशक अर्देशिर इतने विनम्र थे कि जब 1956 में 'आलम आरा' के प्रदर्शन के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर उन्हें सम्मानित किया गया और उन्हें 'भारतीय सवाक् फिल्मों का पिता' कहा गया तो उन्होंने उस मौके पर कहा था "मुझे इतना बड़ा खिताब देने की ज़रूरत नहीं है। मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का ज़रूरी योगदान दिया है।"

जब पहली बार सिनेमा ने बोलना सीख लिया, सिनेमा में काम करने के लिए पढ़े-लिखे अभिनेता-अभिनेत्रियों की ज़रूरत भी शुरू हुई क्योंकि अब संवाद भी बोलने थे, सिर्फ अभिनय से काम नहीं चलने वाला था। मूक फिल्मों के दौर में तो पहलवान जैसे शरीर वाले स्टंट करनेवाले और उछल-कूद करनेवाले अभिनेताओं से काम चल जाया करता था। अब उन्हें संवाद बोलना था और गायन की प्रतिभा की कद्र भी होने लगी थी। इसलिए 'आलम आरा' के बाद आरंभिक 'सवाक्' दौर की फिल्मों में कई 'गायक-अभिनेता' बड़े पर्दे पर नज़र आने लगे। हिन्दी-उर्दू भाषाओं का महत्त्व बढ़ा। सिनेमा में देह और तकनीक की भाषा की जगह जन प्रचलित बोलचाल की भाषाओं का दाखिला हुआ। सिनेमा ज़्यादा देसी हुआ। एक तरह की नयी आज़ादी थी जिससे आगे चलकर हमारे दैनिक और सार्वजनिक जीवन का प्रतिबिंब फिल्मों में बेहतर होकर उभरने लगा।

अभिनेताओं-अभिनेत्रियों की लोकप्रियता का असर उस दौर के दर्शकों पर

भी खूब पड़ रहा था। 'माधुरी' नाम की फिल्म में नायिका सुलोचना की हेयर स्टाइल उस दौर में औरतों में लोकप्रिय थी। औरतें अपनी केशसज्जा उसी तरह कर रही थीं। अर्देशिर ईरानी की फिल्मों में भारतीय के अलावा ईरानी कलाकारों ने भी अभिनय किया था। स्वयं 'आलम आरा' भारत के अलावा श्रीलंका, बर्मा और पश्चिम एशिया में पसंद की गई।

भारतीय सिनेमा के जनक फाल्के को 'सवाक्' सिनेमा के जनक अर्देशिर ईरानी की उपलब्धि को अपनाना ही था, क्योंकि वहाँ से सिनेमा का एक नया युग शुरू हो गया था।

—प्रदीप तिवारी

शब्दार्थ

सवाक् फिल्म —	बोलती फिल्म
पार्श्वगायक —	पर्दे के पीछे से गाने वाला
पटकथा —	फिल्म के लिए लिखी जाने वाली कहानी
डिस्क फॉर्म —	रिकार्डिंग का एक रूप
किरदार —	अभिनेता की भूमिका, चरित्र, पात्र
संवाद —	फिल्म में की जाने वाली बातचीत
खिताब —	उपाधि, सम्मान

प्रश्न—अभ्यास

पाठ से

1. जब पहली बोलती फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसके पोस्टरों पर कौन-से वाक्य

- छापे गए ? उस फिल्म में कितने चेहरे थे ? स्पष्ट कीजिए ।
2. पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फिल्मकार अर्देशिर एम. ईरानी को प्रेरणा कहाँ से मिली ? उन्होंने आलम आरा फिल्म के लिए आधार कहाँ से लिया ? विचार व्यक्त कीजिए ।
 3. विट्टल का चयन आलम आरा फिल्म के नायक के रूप हुआ लेकिन उन्हें हटाया क्यों गया ? विट्टल ने पुनः नायक होने के लिए क्या किया ? विचार प्रकट कीजिए ।
 4. पहली सवाक् फिल्म के निर्माता—निर्देशक अर्देशिर को जब सम्मानित किया गया तब सम्मानकर्ताओं ने उनके लिए क्या कहा था ? अर्देशिर ने क्या कहा ? और इस प्रसंग में लेखक ने क्या टिप्पणी की है ? लिखिए ।

पाठ से आगे

1. मूक सिनेमा में संवाद नहीं होते, उसमें दैहिक अभिनय की प्रधानता होती है । पर, जब सिनेमा बोलने लगा, उसमें अनेक परिवर्तन हुए । उन परिवर्तनों को अभिनेता, दर्शक और कुछ तकनीकी दृष्टि से पाठ का आधार लेकर खोजें, साथ ही अपनी कल्पना का भी सहयोग लें ।
2. डब फिल्में किसे कहते हैं ? कभी—कभी डब फिल्मों में अभिनेता के मुँह खोलने और आवाज़ में अंतर आ जाता है । इसका कारण क्या हो सकता है ?

अनुमान और कल्पना

1. किसी मूक सिनेमा में बिना आवाज़ के ठहाकेदार हँसी कैसी दिखेगी ? अभिनय करके अनुभव कीजिए ।

2. मूक फिल्म देखने का एक उपाय यह है कि आप टेलीविजन की आवाज़ बंद करके फिल्म देखें। उसकी कहानी को समझने का प्रयास करें और अनुमान लगाएँ कि फिल्म में संवाद और दृश्य की हिस्सेदारी कितनी है ?

भाषा की बात

1. सवाक् शब्द—वाक् के पहले 'स' लगाने से बना है। स उपसर्ग से कई शब्द बनते हैं। निम्नलिखित शब्दों के साथ 'स' का उपसर्ग की भाँति प्रयोग करके शब्द बनाएँ और शब्दार्थ में होनेवाले परिवर्तन को बताएँ। हित, परिवार, विनय, चित्र, बल, सम्मान।
2. उपसर्ग और प्रत्यय दोनों ही शब्दांश होते हैं। वाक्य में इनका अकेला प्रयोग नहीं होता। इन दोनों में अंतर केवल इतना होता है कि उपसर्ग किसी भी शब्द में पहले लगता है और प्रत्यय बाद में। हिंदी के सामान्य उपसर्ग इस प्रकार हैं—अ/अन, नि, दु, क/कु, स/सु, अध, बिन, औ आदि।

पाठ में आए उपसर्ग और प्रत्यय युक्त शब्दों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं—

मूल शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय	शब्द
वाक्	स	—	सवाक्
लोचन	सु	आ	सुलोचना
फिल्म	—	कार	फिल्मकार
कामयाब	—	ई	कामयाबी

इस प्रकार के 15—15 उदाहरण खोजकर लिखिए और अपने सहपाठियों को दिखाइए।

पुडुकोट्टई (तमिलनाडु) : साइकिल चलाना एक सामाजिक आंदोलन है? कुछ अजीब-सी बात है न! लेकिन चौंकने की बात नहीं है। पुडुकोट्टई जिले की हजारों नवसाक्षर ग्रामीण महिलाओं के लिए यह अब आम बात है। अपने पिछड़ेपन पर लात मारने, अपना विरोध व्यक्त करने और उन जंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं, कोई-न-कोई तरीका लोग निकाल ही लेते हैं। कभी-कभी ये तरीके अजीबो-गरीब होते हैं।



भारत के सर्वाधिक गरीब जिलों में से एक है पुडुकोट्टई। पिछले दिनों यहाँ की ग्रामीण महिलाओं ने अपनी स्वाधीनता, आज़ादी और गतिशीलता को अभिव्यक्त करने के लिए प्रतीक के रूप में साइकिल को चुना है। उनमें से अधिकांश नवसाक्षर थीं। अगर हम दस वर्ष से कम उम्र की लड़कियों को अलग कर दें, तो इसका अर्थ यह होगा कि यहाँ ग्रामीण महिलाओं के एक-चौथाई हिस्से ने साइकिल चलाना सीख लिया है और इन महिलाओं में से

सत्तर हजार से भी अधिक महिलाओं ने 'प्रदर्शन एवं प्रतियोगिता' जैसे सार्वजनिक कार्यक्रमों में बड़े गर्व के साथ अपने नए कौशल का प्रदर्शन किया और अभी भी उनमें साइकिल चलाने की इच्छा जारी है। वहाँ इसके लिए कई 'प्रशिक्षण शिविर' चल रहे हैं।

ग्रामीण पुडुकोट्टई के मुख्य इलाकों में अत्यंत रूढ़िवादी पृष्ठभूमि से आई युवा मुस्लिम लड़कियाँ सड़कों से अपनी साइकिलों पर जाती हुई दिखाई देती हैं। जमीला बीबी नामक एक युवती ने जिसने साइकिल चलाना शुरू किया है, मुझसे कहा — "यह मेरा अधिकार है, अब हम कहीं भी जा सकते हैं। अब हमें बस का इंतज़ार नहीं करना पड़ता। मुझे पता है कि जब मैंने साइकिल चलाना शुरू किया तो लोग फ़्तियाँ कसते थे। लेकिन मैंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।"

फातिमा एक माध्यमिक स्कूल में पढ़ाती हैं और उन्हें साइकिल चलाने का ऐसा चाव लगा है कि हर शाम आधा घंटे के लिए किराए पर साइकिल लेती हैं। एक नयी साइकिल खरीदने की उनकी हैसियत नहीं है। फातिमा ने बताया कि— "साइकिल चलाने में एक खास तरह की आज़ादी है। हमें किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। मैं कभी इसे नहीं छोड़ूँगी।" ज़मीला, फातिमा और उनकी मित्र अवकन्नी — इन सबकी उम्र 20 वर्ष के आसपास है और इन्होंने अपने समुदाय की अनेक युवतियों को साइकिल चलाना सिखाया है।

इस जिले में साइकिल की धूम मची हुई है। इसकी प्रशंसकों में हैं महिला खेतिहर मज़दूर, पत्थर खदानों में मज़दूरी करने वाली औरतें और गाँवों में काम करनेवाली नर्सें। बालवाड़ी और आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, बेशकीमती पत्थरों को तराशने में लगी औरतें और स्कूल की अध्यापिकाएँ भी साइकिल का जमकर इस्तेमाल कर रही हैं। ग्राम सेविकाएँ और दोपहर का भोजन पहुँचाने वाली औरतें भी पीछे नहीं हैं। सबसे बड़ी संख्या उन लोगों की है जो अभी नवसाक्षर हुई हैं।

जिस किसी नवसाक्षर अथवा नयी-नयी साइकिल चलाने वाली महिला से मैंने बातचीत की, उसने साइकिल चलाने और अपनी व्यक्तिगत आज़ादी के बीच एक सीधा संबंध बताया।

साइकिल आंदोलन की एक अगुआ का कहना है—“मुख्य बात यह है कि इस आंदोलन ने महिलाओं को बहुत आत्मविश्वास प्रदान किया।” महत्वपूर्ण यह है कि इसने पुरुषों पर उनकी निर्भरता कम कर दी है। अब हम प्रायः देखते हैं कि कोई औरत अपनी साइकिल पर चार किलोमीटर तक की दूरी आसानी से तय कर पानी लाने जाती है। कभी-कभी साथ में उसके बच्चे भी होते हैं। यहाँ तक कि साइकिल से दूसरे स्थानों से सामान ढोने की व्यवस्था भी खुद ही की जा सकती है। लेकिन यकीन मानिए, जब इन्होंने साइकिल चलाना शुरू किया तो इन पर लोगों ने

जमकर प्रहार किया, जिसे इन्हें झेलना पड़ा। गंदी-गंदी टिप्पणियाँ की गईं लेकिन धीरे-धीरे साइकिल चलाने को सामाजिक स्वीकृति मिली। इसलिए महिलाओं ने इसे अपना लिया।

साइकिल प्रशिक्षण शिविर देखना एक असाधारण अनुभव



है। किलाकुरुचि गाँव में सभी साइकिल सीखने वाली महिलाएँ रविवार को इकट्ठी हुई थीं। साइकिल चलाने के आंदोलन के समर्थन में ऐसे आवेग देखकर कोई भी हैरान हुए बिना नहीं रह सकता। उन्हें इसे सीखना ही है। साइकिल ने उन्हें पुरुषों द्वारा थोपे गए दायरे के अंदर रोज़मर्रा की घिसी-पिटी चर्चा से बाहर निकलने का रास्ता दिखाया। ये नव-साइकिल चालक गाने भी गाती हैं। उन गानों में साइकिल चलाने को प्रोत्साहन दिया गया है। इनमें से एक गाने की पंक्ति का भाव है “ओ बहिना, आ सीखें साइकिल, घूमें समय के पहिए संग.....।”

जिन्हें साइकिल चलाने का प्रशिक्षण मिल चुका है उनमें से बहुत बड़ी संख्या में साइकिल सीख चुकी महिलाएँ अभी नयी-नयी साइकिल सीखने वाली महिलाओं को भरपूर सहयोग देती हैं। उनमें यहाँ न केवल सीखने-सिखाने की इच्छा दिखाई देती है बल्कि उनके बीच यह उत्साह भी दिखाई देता है कि सभी महिलाओं को साइकिल चलाना सीखना चाहिए।

1992 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के बाद अब यह जिला कभी भी पहले जैसा नहीं हो सकता। हैंडल पर झंडियाँ लगाए, घंटियाँ बजाते हुए साइकिल पर सवार 1500 महिलाओं ने पुडुकोट्टई में तूफ़ान ला दिया। महिलाओं की साइकिल चलाने की इस तैयारी ने यहाँ रहने वालों को हक्का-बक्का कर दिया।

इस सारे मामले पर पुरुषों की क्या राय थी ? इसके पक्ष में ‘आर. साइकिल्स’ के मालिक को तो रहना ही था। इस अकेले डीलर के यहाँ लेडीज़ साइकिल की बिक्री में साल भर के अंदर काफी वृद्धि हुई। माना जा सकता है कि इस आँकड़े को दो कारणों से कम करके आँका गया। पहली बात तो यह है कि ढेर सारी महिलाओं ने जो लेडीज़ साइकिल का इंतज़ार नहीं कर सकती थीं, जेंट्स साइकिलें खरीदने लगीं। दूसरे, उस डीलर ने बड़ी सतर्कता के साथ यह जानकारी मुझे दी थी – उसे लगा कि वह बिक्री कर विभाग का कोई आदमी है।

कुदिमि अन्नामलाई की चिलचिलाती धूप में एक अद्भुत दृश्य की तरह पत्थर के खदानों में दौड़ती-भागती बाईस वर्षीय मनोरमनी को लोगों ने साइकिल सिखलाते देखा। उसने मुझे बताया "हमारा इलाका मुख्य शहर से कटा हुआ है। यहाँ जो साइकिल चलाना जानते हैं उनकी गतिशीलता बढ़ जाती है।"

साइकिल चलाने के बहुत निश्चित आर्थिक निहितार्थ थे। इससे आय में वृद्धि हुई है। यहाँ की कुछ महिलाएँ अगल-बगल के गाँवों में कृषि संबंधी अथवा अन्य उत्पाद बेच आती हैं। साइकिल की वजह से बसों के इंतज़ार में व्यय होने



वाला उनका समय बच जाता है। खराब परिवहन व्यवस्था वाले स्थानों के लिए तो यह बहुत महत्वपूर्ण है। दूसरे, इससे इन्हें इतना समय मिल जाता है कि ये अपने सामान बेचने पर ज्यादा ध्यान केंद्रित कर पाती हैं। तीसरे, इससे ये और अधिक इलाकों में जा पाती हैं। अंतिम बात यह है कि अगर आप चाहें तो इससे आराम करने का काफी समय मिल सकता है।

जिन छोटे उत्पादकों को

बसों का इंतजार करना पड़ता था, बस स्टॉप तक पहुँचने के लिए भी पिता, भाई, पति या बेटों पर निर्भर रहना पड़ता था। वे अपना सामान बेचने के लिए कुछ गिने-चुने गाँवों तक ही जा पाती थीं। कुछ को पैदल ही चलना पड़ता था। जिनके पास साइकिल नहीं है वे अब भी पैदल ही जाती हैं। फिर उन्हें बच्चों की देखभाल के लिए या पीने का पानी लाने जैसे घरेलू कामों के लिए भी जल्दी ही भागकर घर पहुँचना पड़ता था। अब जिनके पास साइकिलें हैं वे सारा काम बिना किसी दिक्कत के कर लेती हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि अब आप किसी सुनसान रास्ते पर भी देख सकते हैं कि कोई युवा-माँ साइकिल पर आगे अपने बच्चे को बैठाए, पीछे कैरियर पर सामान लादे चली जा रही हैं। वह अपने साथ पानी से भरे दो या तीन बर्तन लिए अपने घर या काम पर जाती देखी जा सकती हैं।

अन्य पहलुओं से ज़्यादा आर्थिक पहलू पर ही बल देना गलत होगा। साइकिल प्रशिक्षण से महिलाओं के अंदर आत्मसम्मान की भावना पैदा हुई है यह बहुत महत्वपूर्ण है। फातिमा का कहना है— “बेशक, यह मामला केवल आर्थिक नहीं है।” फातिमा ने यह बात इस तरह कही जिससे मुझे लगा कि मैं कितनी मूर्खतापूर्ण ढंग से सोच रहा था। उसने आगे कहा — “साइकिल चलाने से मेरी कौन-सी कमाई होती है। मैं तो पैसे ही गँवाती हूँ। मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं कि मैं साइकिल खरीद सकूँ। लेकिन हर शाम मैं किराए पर साइकिल लेती हूँ ताकि मैं आज़ादी और खुशहाली का अनुभव कर सकूँ।” पुडुकोट्टई पहुँचने से पहले मैंने इस विनम्र सवारी के बारे में कभी इस तरह सोचा ही नहीं था। मैं कभी साइकिल को आज़ादी का प्रतीक नहीं समझता था।

एक महिला ने बताया— “लोगों के लिए यह समझना बड़ा कठिन है कि ग्रामीण महिलाओं के लिए यह कितनी बड़ी चीज़ है। उनके लिए तो यह हवाई जहाज़ जैसी बड़ी उपलब्धि है। लोग इस पर हँस सकते हैं लेकिन केवल यहाँ की

औरतें ही समझ सकती हैं कि उनके लिए यह कितना महत्वपूर्ण है। जो पुरुष इसका विरोध करते हैं, वे जाएँ और टहलें क्योंकि जब साइकिल चलाने की बात आती है, वे महिलाओं की बराबरी कर ही नहीं सकते।”

—पी. साईनाथ

शब्दार्थ

फब्ती	—	चोट करने वाली या चुभती बात
यकीन	—	विश्वास
घिसीपिटी	—	जो बहुत दिनों से चली आ रही, पुरानी

प्रश्न—अभ्यास

जंजीरें

1. “...उन जंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं, कोई—न—कोई तरीका लोग निकाल ही लेते हैं....”
आपके विचार से लेखक ‘जंजीरों’ द्वारा किन समस्याओं की ओर इशारा कर रहा है ?
2. क्या आप लेखक की इस बात से सहमत हैं ? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।

पहिया

1. ‘साइकिल आंदोलन’ से पुडुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में कौन—कौन से बदलाव आए हैं ?

2. शुरुआत में पुरुषों ने इस आंदोलन का विरोध किया परंतु आर. साइकिल्स के मालिक ने इसका समर्थन किया, क्यों ?
3. प्रारंभ में इस आंदोलन को चलाने में कौन-कौन सी बाधा आई ?

शीर्षक की बात

1. आपके विचार से लेखक ने इस पाठ का नाम 'जहाँ पहिया है' क्यों रखा होगा?
2. अपने मन से इस पाठ का कोई दूसरा शीर्षक सुझाइए। अपने दिए हुए शीर्षक के पक्ष में तर्क दीजिए।

समझने की बात

1. "लोगों के लिए यह समझना बड़ा कठिन है कि ग्रामीण औरतों के लिए यह कितनी बड़ी चीज़ है। उनके लिए तो यह हवाई जहाज़ उड़ाने जैसी बड़ी उपलब्धि है।"

साइकिल चलाना ग्रामीण महिलाओं के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों हैं ? समूह बनाकर चर्चा कीजिए।

2. "पुडुकोट्टई पहुँचने से पहले मैंने इस विनम्र सवारी के बारे में इस तरह सोचा ही नहीं था।"

साइकिल को विनम्र सवारी क्यों कहा गया है ?

साइकिल

1. फातिमा ने कहा, "...मैं किराए पर साइकिल लेती हूँ ताकि मैं आज़ादी और

खुशहाली का अनुभव कर सकूँ।”

साइकिल चलाने से फातिमा और पुडुकोट्टई की महिलाओं को ‘आज़ादी’ का अनुभव क्यों होता होगा ?

कल्पना से

1. पुडुकोट्टई में कोई महिला अगर चुनाव लड़ती तो अपना पार्टी—चिह्न क्या बनाती और क्यों ?
2. अगर दुनिया के सभी पहिए हड़ताल कर दें तो क्या होगा ?
3. “1992 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के बाद अब यह जिला कभी भी पहले जैसा नहीं हो सकता।” इस कथन का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।
4. मान लीजिए आप एक संवाददाता हैं। आपको 8 मार्च 1992 के दिन पुडुकोट्टई में हुई घटना का समाचार तैयार करना है। पाठ में दी गई सूचनाओं और अपनी कल्पना के आधार पर एक समाचार तैयार कीजिए।
5. अगले पृष्ठ पर दी गयी ‘पिता के बाद’ कविता पढ़िए। क्या कविता में और फातिमा की बात में कोई संबंध हो सकता है ? अपने विचार लिखिए।

भाषा की बात

उपसर्गों और प्रत्ययों के बारे में आप जान चुके हैं। इस पाठ में आए उपसर्गयुक्त शब्दों को छाँटिए। उनके मूल शब्द भी लिखिए। आपकी सहायता के लिए इस पाठ में प्रयुक्त कुछ ‘उपसर्ग’ और ‘प्रत्यय’ इस प्रकार हैं— अभि, प्र, अनु, परि, वि (उपसर्ग), इस, वाला, ता, ना।

अकबरी लोटा

13

लाला झाऊलाल को खाने-पीने की कमी नहीं थी। काशी के ठठेरी बाज़ार में मकान था। नीचे की दुकानों से एक सौ रुपये मासिक के करीब किराया उतर आता था। अच्छा खाते थे, अच्छा पहनते थे, पर ढ़ाई सौ रुपये तो एक साथ आँख सेंकने के लिए भी न मिलते थे।

इसलिए जब उनकी पत्नी ने एक दिन एकाएक ढ़ाई सौ रुपये की माँग पेश



की, तब उनका जी एक बार जोर से सनसनाया और फिर बैठ गया। उनकी यह दशा देखकर पत्नी ने कहा— 'डरिए मत, आप देने में असमर्थ हों तो मैं अपने भाई से माँग लूँ?'

लाला झाऊलाल तिलमिला उठे। उन्होंने रोब के साथ कहा— 'अजी हटो, ढाई सौ रुपये के लिए भाई से भीख माँगोगी, मुझसे ले लेना।'

लेकिन मुझे इसी जिंदगी में चाहिए।'

अजी इसी सप्ताह में ले लेना। 'सप्ताह से आपका तात्पर्य सात दिन से है या सात वर्ष से?'

लाला झाऊलाल ने रोब के साथ खड़े होते हुए कहा— 'आज से सातवें दिन मुझसे ढाई सौ रुपये ले लेना।'

लेकिन जब चार दिन ज्यों—त्यों में यों ही बीत गए और रुपयों का कोई प्रबंध न हो सका तब उन्हें चिंता होने लगी। प्रश्न अपनी प्रतिष्ठा का था, अपने ही घर में अपनी साख का था। देने का पक्का वादा करके अगर अब दे न सके तो अपने मन में वह क्या सोचेगी? उसकी नजरों में उसका क्या मूल्य रह जाएगा? अपनी वाहवाही की सैंकड़ों गाथाएँ सुना चुके थे। अब जो एक काम पड़ा तो चारों खाने चित्त हो रहे। यह पहली बार उसने मुँह खोलकर कुछ रुपयों का सवाल किया था। इस समय अगर दुम दबाकर निकल भागते हैं तो फिर उसे क्या मुँह दिखलाएँगे?

खैर, एक दिन और बीता। पाँचवें दिन घबराकर उन्होंने पं. बिलवासी मिश्र को अपनी विपदा सुनाई। संयोग कुछ ऐसा बिगड़ा था कि बिलवासी जी भी उस समय बिलकुल खुदख थे। उन्होंने कहा— 'मेरे पास हैं तो नहीं पर मैं कहीं से माँग—जाँचकर लाने की कोशिश करूँगा और अगर मिल गया तो कल शाम को

तुमसे मकान पर मिलूँगा।”

वही शाम आज थी। हफ़्ते का अंतिम दिन। कल ढाई सौ रुपये या तो गिन देना है या सारी हेकड़ी से हाथ धोना है। यह सच है कि कल रुपया न आने पर उनकी स्त्री उन्हें डामलफाँसी न कर देगी केवल जरा—सा हँस देगी। पर वह कैसी हँसी होगी, कल्पना मात्र से झाऊलाल में मरोड़ पैदा हो जाती थी।

आज शाम को पं. बिलवासी मिश्र को आना था। यदि न आए तो ? या कहीं रुपये का प्रबंध वे न कर सके ?

इसी उधेड़—बुन में पड़े लाला झाऊलाल छत पर टहल रहे थे। कुछ प्यास मालूम हुई। उन्होंने नौकर को आवाज़ दी। नौकर नहीं था, खुद उनकी पत्नी पानी लेकर आई।

वह पानी तो ज़रूर लाई पर गिलास लाना भूल गई थीं। केवल लोटे में पानी लिए वह प्रकट हुईं। फिर लोटा भी संयोग से वह जो अपनी बेढ़ंगी सूरत के कारण लाला झाऊलाल को सदा से नापसंद था। था तो नया, साल दो साल का ही बना पर कुछ ऐसी गढ़न उस लोटे की थी कि उसका बाप डमरू, माँ चिलम रही हो।

लाला ने लोटा ले लिया, बोले कुछ नहीं, अपनी पत्नी का अदब मानते थे। मानना ही चाहिए। इसी को सभ्यता कहते हैं। जो पति अपनी पत्नी का न हुआ, वह पति कैसा? फिर उन्होंने यह भी सोचा कि लोटे में पानी दे, तब भी गनीमत है, अभी अगर चूँ कर देता हूँ तो बाल्टी में भोजन मिलेगा। तब क्या करना बाकी रह जाएगा?

लाला अपना गुस्सा पीकर पानी पीने लगे। उस समय वे छत की मुँडेर के पास ही खड़े थे। जिन बुजुर्गों ने पानी पीने के संबंध में यह नियम बनाए थे कि

खड़े—खड़े पानी न पियो, सोते समय पानी न पियो, दौड़ने के बाद पानी न पियो, उन्होंने पता नहीं कभी यह भी नियम बनाया या नहीं कि छत की मुँडेर के पास खड़े होकर पानी न पियो। जान पड़ता है कि इस महत्त्वपूर्ण विषय पर उन लोगों ने कुछ नहीं कहा है।

लाला झाऊलाल मुश्किल से दो—एक घूँट पी पाए होंगे कि न जाने कैसे उनका हाथ हिल उठा और लोटा छूट गया।

लोटे ने दाँएँ देखा न बाएँ, वह नीचे गली की ओर चल पड़ा। अपने वेग में उल्का को लजाता हुआ वह आँखों से ओझल हो गया। किसी ज़माने में न्यूटन नाम के किसी खुराफाती ने पृथ्वी की आकर्षण शक्ति नाम की एक चीज़ ईजाद की थी। कहना न होगा कि यह सारी शक्ति इस समय लोटे के पक्ष में थी।

लाला को काटो तो बदन में खून नहीं। ऐसी चलती हुई गली में ऊँचे तिमंजिले से भरे हुए लोटे का गिरना हँसी—खेल नहीं। यह लोटा न जाने किस अधिकारी के खोपड़े पर काशीवास का संदेश लेकर पहुँचेगा।

कुछ हुआ भी ऐसा ही। गली में जोर का हल्ला उठा। लाला झाऊलाल जब तक दौड़कर नीचे उतरे तब तक एक भारी भीड़ उनके आँगन में घुस आई।

लाला झाऊलाल ने देखा कि इस भीड़ में प्रधान पात्र एक अंग्रेज है जो नखशिख से भीगा हुआ है और जो अपने एक पैर को हाथ से सहलाता हुआ दूसरे पैर पर नाच रहा है। उसी के पास अपराधी लोटे को भी देखकर लाला झाऊलाल जी ने फौरन दो और दो जोड़कर स्थिति को समझ लिया।

गिरने के पूर्व लोटा एक दुकान के सायबान से टकराया। वहाँ टकराकर उस दुकान पर खड़े उस अंग्रेज को उसने सांगोपांग स्नान कराया और फिर उसी के बूट पर आ गिरा।

उस अंग्रेज को जब मालूम हुआ कि लाला झाऊलाल ही उस लोटे के मालिक हैं तब उसने केवल एक काम किया। अपने मुँह को खोलकर खुला छोड़ दिया। लाला झाऊलाल को आज ही यह मालूम हुआ कि उसने अंग्रेजी भाषा में गालियों का ऐसा प्रकांड कोश है।

इसी समय पं. बिलवासी मिश्र भीड़ को चीरते हुए आँगन में आते दिखाई पड़े। उन्होंने आते ही पहला काम यह किया कि उस अंग्रेज को छोड़कर और जितने आदमी आँगन में घुस आए थे। सबको बाहर निकाल दिया। फिर आँगन में कुर्सी रखकर उन्होंने साहब से कहा— “आपके पैर में शायद कुछ चोट आ गई है। अब आप आराम से कुर्सी पर बैठ जाइए।”

साहब बिलवासी जी को धन्यवाद देते हुए बैठ गए और लाला झाऊलाल की ओर इशारा करके बोले— ‘आप इस शख्स को जानते हैं?’

बिलकुल नहीं। और मैं ऐसे आदमी को जानना भी नहीं चाहता जो निरीह राह चलतों पर लोटे के वार करे।’

“मेरी समझ में ‘ही इज ए डेंजरस ल्यूनाटिक’ (यानी, यह खतरनाक पागल है)।

‘नहीं, मेरी समझ में ‘ही इज ए डेंजरस क्रिमिनल’ (नहीं, यह खतरनाक मुजरिम है)।

परमात्मा ने लाला झाऊलाल की आँखों को इस समय कहीं देखने के साथ खाने की भी शक्ति दे दी होती तो यह निश्चय है कि अब तक बिलवासी जी को वे अपनी आँखों से खा चुके होते। वे कुछ समझ नहीं पाते थे कि बिलवासी जी को इस समय क्या हो गया है।

साहब ने बिलवासी जी से पूछा, ‘तो अब क्या करना चाहिए?’

‘पुलिस में इस मामले की रिपोर्ट कर दीजिए, जिससे यह आदमी फौरन हिरासत (गिरफ्तार) में ले लिया जाए।’

“पुलिस स्टेशन है कहाँ ?”

“पास ही है, चलिए मैं बताऊँ”

“चलिए।”

“अभी चला। आपकी इजाज़त हो तो पहले मैं इस लोटे को इस आदमी से खरीद लूँ। क्यों जी बेचोगे? मैं पचास रुपये तक इसके दाम दे सकता हूँ।”

लाला झाऊलाल तो चुप रहे पर साहब ने पूछा— “इस रद्दी लोटे के आप पचास रुपये क्यों दे रहे हैं ?”

“आप इस लोटे को रद्दी बताते हैं ? आश्चर्य! मैं तो आपको एक विज्ञ और सुशिक्षित आदमी समझता था।”

“आखिर बात क्या है, कुछ बताइए भी।”

“जनाब यह एक ऐतिहासिक लोटा जान पड़ता है। जान क्या पड़ता है, मुझे पूरा विश्वास है। यह वह प्रसिद्ध अकबरी लोटा है जिसकी तलाश में संसार—भर के म्यूज़ियम परेशान हैं।”

“यह बात?”

“जी, जनाब। सोलहवीं शताब्दी की बात है। बादशाह हुमायूँ शेरशाह से हार कर भागा था और सिंध के रेगिस्तान में मारा—मारा फिर रहा था। एक अवसर पर प्यास से उसकी जान निकल रही थी। उस समय एक ब्राह्मण ने इसी लोटे से पानी पिलाकर उसकी जान बचाई थी। हुमायूँ के बाद अकबर ने उस ब्राह्मण का पता लगाकर उससे इस लोटे को ले लिया और इसके बदले में उसे इसी प्रकार के दस सोने के लोटे प्रदान किए। यह लोटा सम्राट अकबर को बहुत प्यारा था। इसी

से इसका नाम अकबरी लोटा पड़ा। वह बराबर इसी से वुजू करता था। सन् 57 तक इसके शाही घराने में रहने का पता है। पर इसके बाद लापता हो गया। कलकत्ता के म्यूज़ियम में इसका प्लास्टर का मॉडल रखा हुआ है। पता नहीं यह लोटा इस आदमी के पास कैसे आया ? म्यूज़ियम वालों को पता चले तो फैंसी (अच्छा) दाम देकर खरीद ले जाएँ।

इस विवरण को सुनते-सुनते साहब की आँखों पर लोभ और आश्चर्य का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे कौड़ी के आकार से बढ़कर पकौड़ी के आकार के हो गये।



उसने बिलवासी जी से पूछा— “तो आप इस लोटे का क्या करिएगा ?”

“मुझे पुरानी और ऐतिहासिक चीज़ों के संग्रह का शौक है ।”

“मुझे भी पुरानी और ऐतिहासिक चीज़ों के संग्रह करने का शौक है । जिस समय यह लोटा मेरे ऊपर गिरा था, उस समय मैं यही कर रहा था । उस दुकान से पीतल की कुछ पुरानी मूर्तियाँ खरीद रहा था ।”

“जो कुछ हो, लोटा मैं ही खरीदूँगा ।”

“वाह, आप कैसे खरीदेंगे, मैं खरीदूँगा, यह मेरा हक है ।”

“हक है?”

“ज़रूर हक है । यह बताइए कि उस लोटे के पानी से आपने स्नान किया या मैंने ?”

“आपने ।”

“वह आपके पैरों पर गिरा या मेरे ?”

“आपके ।”

“अँगूठा उसने आपका भुरता किया या मेरा ?”

“आपका ।”

“इसलिए उसे खरीदने का हक मेरा है ।”

“यह सब बकवास है । दाम लगाइए, जो अधिक दे, वह ले जाए ।”

“यही सही । आप इसका पचास रुपया लगा रहे थे, मैं सौ देता हूँ ।”

“मैं डेढ़ सौ देता हूँ ।”

“मैं दो सौ देता हूँ ।”

“अजी मैं ढाई सौ देता हूँ”। यह कहकर बिलवासी जी ने ढाई सौ के नोट लाला झाऊलाल के आगे फेंक दिए।

साहब को भी ताव आ गया। उसने कहा— “आप ढाई सौ देते हैं, तो मैं पाँच सौ देता हूँ। अब चलिए।”

बिलवासी जी अफसोस के साथ अपने रुपये उठाने लगे, मानो अपनी आशाओं की लाश उठा रहे हों। साहब की ओर देखकर उन्होंने कहा— “लोटा आपका हुआ, ले जाइए, मेरे पास ढाई सौ से अधिक नहीं हैं।”

यह सुनना था कि साहब के चेहरे पर प्रसन्नता की कूँची गिर गई। उसने झपटकर लोटा लिया और बोला— “अब मैं हँसता हुआ अपने देश लौटूँगा। मेजर डगलस की डींग सुनते—सुनते मेरे कान पक गए थे।”

“मेजर डगलस कौन हैं?”

“मेजर डगलस मेरे पड़ोसी हैं। पुरानी चीज़ों के संग्रह करने में मेरी उनकी होड़ रहती है। गत वर्ष वे हिंदुस्तान आए थे और यहाँ से जहाँगीरी अंडा ले गए थे।”

“जहाँगीरी अंडा?”

“हाँ, जहाँगीरी अंडा। मेजर डगलस ने समझ रखा था कि हिंदुस्तान से वे ही अच्छी चीज़ें ले सकते हैं।”

“पर जहाँगीरी अंडा है क्या?”

“आप जानते होंगे कि एक कबूतर ने नूरजहाँ से जहाँगीर का प्रेम कराया था। जहाँगीर के पूछने पर कि, मेरा एक कबूतर तुमने कैसे उड़ जाने दिया, नूरजहाँ ने उसके दूसरे कबूतर को उड़ाकर बताया था कि ऐसे। उसके इस भोलेपन पर जहाँगीर दिलोजान से निछावर हो गया। उसी क्षण से उसने अपने को

नूरजहाँ के हाथ कर दिया। कबूतर का यह एहसान वह नहीं भूला। उसके एक अंडे को बड़े जतन से रख छोड़ा। एक बिल्लौर की हाँडी में वह उसके सामने टँगा रहता था। बाद में वही अंडा "जहाँगीरी अंडा" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसी को मेजर डगलस ने परसाल दिल्ली में एक मुसलमान सज्जन से तीन सौ रुपये में खरीदा।"

"यह बात?"

"हाँ, पर अब मेरे आगे दूर की नहीं ले सकते। मेरा अकबरी लोटा उनके जहाँगीरी अंडे से भी एक पुश्त पुराना है।"

"इस रिश्ते से तो आपका लोटा उस अंडे का बाप हुआ।"

साहब ने लाला झाऊलाल को पाँच सौ रुपये दे कर अपनी राह ली। लाला झाऊलाल का चेहरा इस समय देखते बनता था। जान पड़ता था कि मुँह पर छह दिन की बड़ी हुई दाढ़ी का एक-एक बाल मारे प्रसन्नता के लहरा रहा है। उन्होंने पूछा — "बिलवासी जी! मेरे लिए ढाई सौ रुपया घर से ले कर आए! पर आपके पास तो थे नहीं।"

"इस भेद को मेरे सिवाए मेरा ईश्वर ही जानता है। आप उसी से पूछ लीजिए, मैं नहीं बताऊँगा।"

"पर आप चले कहाँ? अभी मुझे आपसे काम है, दो घंटे तक।"

"दो घंटे तक?"

"हाँ, और क्या, अभी मैं आपकी पीठ ठोककर शाबाशी दूँगा, एक घंटा इसमें लगेगा। फिर गले लगाकर धन्यवाद दूँगा, एक घंटा इसमें भी लग जाएगा।" "अच्छा पहले पाँच सौ रुपये गिनकर सहेज लीजिए।"

"रुपया अगर अपना हो, तो उसे सहेजना एक ऐसा सुखद मनमोहक कार्य

है कि मनुष्य उस समय सहज में ही तन्मयता प्राप्त कर लेता है। लाला झाऊलाल ने अपना कार्य समाप्त करके ऊपर देखा। पर बिलवासी जी इस बीच अंतर्धान हो गए।”

उस दिन रात्रि में बिलवासी जी को देर तक नींद नहीं आई। वे चादर लपेटे चारपाई पर पड़े रहे। एक बजे वे उठे। धीरे, बहुत धीरे से अपनी सोई हुई पत्नी के गले से उन्होंने सोने की वह सिकड़ी निकाली जिसमें एक ताली बँधी हुई थी। फिर उसके कमरे में जाकर उन्होंने उस ताली से संदूक खोला। उसमें ढाई सौ के नोट ज्यों—के—त्यों रखकर उन्होंने उसे बंद कर दिया। फिर दबे पाँव लौटकर ताली को उन्होंने पूर्ववत् अपनी पत्नी के गले में डाल दिया। इसके बाद उन्होंने हँसकर अँगड़ाई ली। दूसरे दिन सुबह आठ बजे तक चैन की नींद सोए।

—अन्नपूर्णानंद वर्मा

शब्दार्थ

अदब	—	शिष्टाचार, लिहाज़
डामलफाँसी	—	आजीवन कारावास का दंड, देश निकाला
मुँडेर	—	छत के आस—पास बनाई जाने वाली दीवार
सायबान	—	वह छप्पर या कपड़ा आदि का परदा जो धूप और वर्षा से बचाव के लिए मकान या दुकान के आगे लगाया जाता है।
खुराफाती	—	शरारती
गढ़न	—	बनावट

सांगोपांग	—	पूरी तरह, ऊपर से नीचे तक
ईजाद	—	खोज, अन्वेषण
परसाल	—	पिछले वर्ष
तन्मयता	—	मग्न हो जाना
अंतर्धान	—	अदृश्य

प्रश्न—अभ्यास

कहानी की बात

1. “लाला ने लोटा ले लिया, बोला कुछ नहीं, अपनी पत्नी का अदब मानते थे।”
लाला झाऊलाल को बेढ़ंगा लोटा बिलकुल पसंद नहीं था। फिर भी उन्होंने चुपचाप लोटा ले लिया। आपके विचार से वे चुप क्यों रहे ? अपने विचार लिखिए।
2. “लाला झाऊलाल जी ने फौरन दो और दो जोड़कर स्थिति को समझ लिया।”
आपके विचार से लाला झाऊलाल ने कौन—कौन सी बातें समझ ली होंगी ?
3. अंग्रेज़ के सामने बिलवासी जी ने झाऊलाल को पहचानने तक से क्यों इनकार कर दिया था ? आपके विचार से बिलासी जी ऐसा अजीब व्यवहार क्यों कर रहे थे ? स्पष्ट कीजिए।
4. बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया था ? लिखिए।

अनुमान और कल्पना

1. “इस भेद को मेरे सिवाए मेरा ईश्वर ही जानता है। आप उसी से पूछ लीजिए।

मैं नहीं बताऊँगा।”

बिलवासी जी ने यह बात किससे और क्यों कही ? लिखिए।

2. “उस दिन रात्रि में बिलवासी जी को देर तक नींद नहीं आई।”

समस्या झाऊलाल की थी और नींद बिलवासी की उड़ी तो क्यों ? लिखिए।

3. “लेकिन मुझे इसी ज़िंदगी में चाहिए।”

“अजी इसी सप्ताह में ले लेना।”

“सप्ताह से आपका तात्पर्य सात दिन से है या सात वर्ष से ?”

झाऊलाल और उनकी पत्नी के बीच की इस बातचीत से क्या पता चलता है ?
लिखिए।

क्या होता यदि

1. अंग्रेज़ लोटा न खरीदता ?
2. यदि अंग्रेज़ पुलिस को बुला लेता ?
3. जब बिलवासी अपनी पत्नी के गले से चाबी निकाल रहे थे, तभी उनकी पत्नी जाग जाती ?

पता कीजिए

1. “अपने वेग में उल्का को लजाता हुआ वह आँखों से ओझल हो गया।”
उल्का क्या होती है ? उल्का और ग्रहों में कौन-कौन सी समानताएँ और अंतर होते हैं ?
2. “इस कहानी में आपने दो चीज़ों के बारे में मज़ेदार कहानियाँ पढ़ीं—अकबरी

लोटे की कहानी और जहाँगीरी—अंडे की कहानी।”

आपके विचार से वे कहानियाँ सच्ची हैं या काल्पनिक ?

3. अपने घर या कक्षा की किसी पुरानी चीज़ के बारे में ऐसी ही कोई मज़ेदार कहानी बनाइए।
4. बिलवासी जी ने जिस—तरीके से रुपयों का प्रबंध किया, वह सही था या गलत ?

भाषा की बात

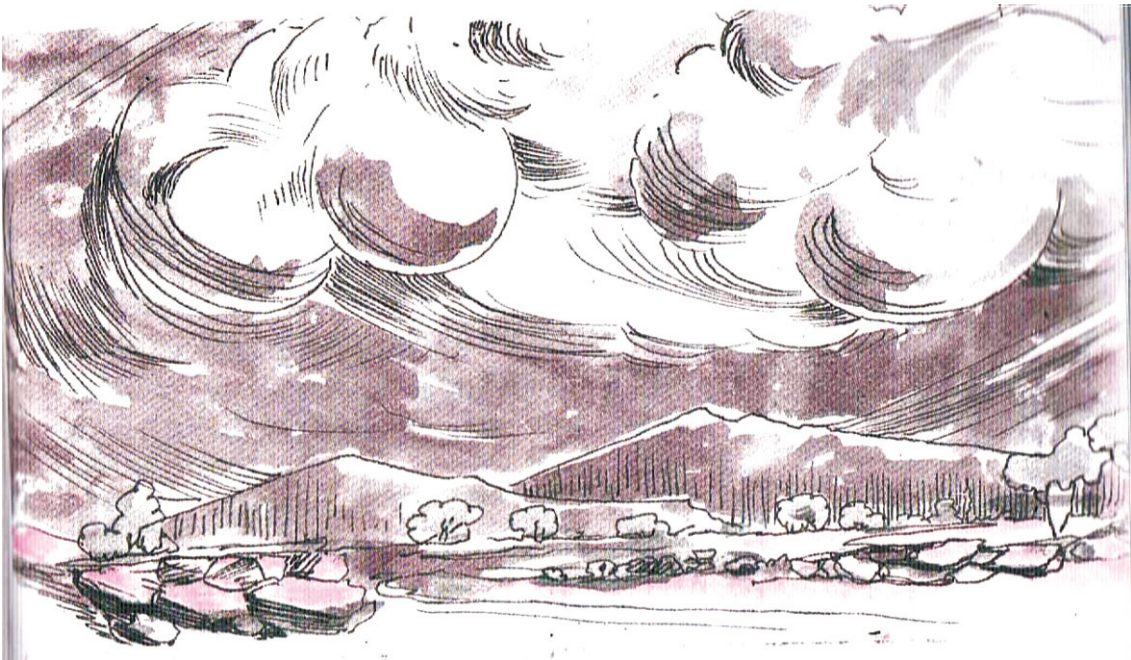
1. इस कहानी में लेखक ने जगह—जगह पर सीधी—सी बात कहने के बदले रोचक मुहावरों, उदाहरणों आदि के द्वारा कहकर अपनी बात को और अधिक मज़ेदार/रोचक बना दिया है। कहानी से वे वाक्य चुनकर लिखिए जो आपको सबसे अधिक मज़ेदार लगे।
2. इस कहानी में लेखक ने अनेक मुहावरों का प्रयोग किया है। कहानी में से पाँच मुहावरे चुनकर उनका प्रयोग करते हुए वाक्य लिखिए।



ओ नभ में मंडराते बादल

14

ओ नभ में मंडराते बादल बे—बरसे मत जा ।
मन के होंठो पर रस की बिसरी पहचान जगा ।
पुरवा की लहरों में सुख की आतुरता उमगा ।
सूखे सुमनों को हरियाली का आभास दिखा ।
खींच क्षितिज पर शीतलता की कज्जल धूम शिखा ।
आज वर्ष की पहली वर्षा का पहला झोंका
इतने दिन धरती ने प्रखर पिपासा को रोका ।
ओ नभ में मंडराते बादल बे—बरसे मत जा ।



कब से जल—बूँदों को विह्वल शैल निहार रहे,
कब से आतप— दग्ध वनों के प्राण पुकार रहे
मन जलता है, जैसे तृष्णा का क्षण जलता है,
सूखे मूल कगारों का वीरान मचलता है ।
आज मधुर स्वप्नों में पावस का आकाश भरा ।
गीतों की गूँजों से मर्मर का उल्लास हरा ।
ओ मादक उन्मादक बादल बे—बरसे मत जा ।

जाग उठी मरु—मरु में सुख की वाष्पाकुल आशा ।
इस निदाघ से जला प्रकृति का रोम—रोम प्यासा ।
थकी अनमनी धूप माँगती है जलमय बाँहें ।
डूब गई तम में नीड़ाकुल विहगों की छाँहें ।
खेतों—खलिहानों, मुँड़ेरों पर, छत पर, घर—घर ।
हेर रहे अगणित हम तुमको जल वाले जलधर ।
उमड़ बरसने वाले बादल बे—बरसे मत जा ।

है अनदेखी बान तुम्हारी, तरसाते जग को ।
पुरवा की थपकी दे—देकर भरमाते जग को ।
मन की बूँदों से कब तक जीवन को तृप्ति मिले ।
कब तक जलती बालू पर यौवन का फूल खिले ।

तुम बरसो फिर धरती का तन शीतल हो ले ।
तुम बरसो मन की थकान का मन मिश्री घोले ।
ओ नभ में मंडराते बादल बे-बरसे मत जा ।

—रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

शब्दार्थ

- | | | |
|------------|---|---|
| 1. आतुरता | — | उतावलापन, आकुलता |
| 2. पिपासा | — | प्यास, तृष्णा |
| 3. विह्वल | — | अशांत, क्षुब्ध |
| 4. पावस | — | वर्षा |
| 5. उन्मादक | — | नशा करने वाला, उन्माद उत्पन्न करने वाला |
| 6. विहग | — | पक्षी |

प्रश्न—अभ्यास

बोध और सराहना

1. इस गीत में कवि बादल से क्या-क्या आग्रह कर रहा है ?
2. वर्षा के बिना जड़-चेतन सभी किस प्रकार व्याकुल हो उठे हैं ?
3. तपती धरती और जलते मन-प्रणों में वर्षा की संभावना-मात्र से क्या-क्या परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं ?
4. गीत से उन पंक्तियों का चयन करें जिनमें जहाँ-तहाँ मेघ की ओर टकटकी लगाए लोगों का वर्णन किया गया है ।

5. इस गीत में बादल को अनेक संबोधनों से पुकारा गया है। उन्हें चुनें और बताएँ कि आपको कौन-सा संबोधन सर्वाधिक सुंदर लगा और क्यों ?
6. इस कविता में 'मन के होठ', 'मन की बूँद', 'मन की थकान' जैसे कुछ प्रयोग किए गए हैं। 'कल्पना' शब्द को लेकर इसी प्रकार के तीन प्रयोग करें।
7. भाव स्पष्ट करें—
 - (क) थकी अनमनी धूप माँगती है जलमय बाँहें।
 - (ख) मन की बूँदों से कब तक जीवन को तृप्ति मिले।
8. इस गीत में कई जगह प्रकृति और निर्जीव वस्तुओं में मनुष्य की-सी चेष्टाएँ और क्रियाकलाप दिखाए गए हैं। जैसे— "कब से जल-बूँदों को विह्वल शैल निहार रहें।" इसी प्रकार के तीन अन्य उदाहरण इस गीत से छाँटें।

योग्यता—विस्तार

1. इस कविता का हाव-भाव के साथ सस्वर वाचन करें।
2. वर्षा से संबंधित कुछ गीतों और उन्हीं से संबंधित चित्रों का चार्ट तैयार करके अपनी कक्षा में लगाएँ।
3. वर्षा पर प्रायः सभी कवियों ने कविताएँ रची हैं। उनकी कविताओं का संकलन करके 'पावन-अंक' नाम से हस्तलिखित पत्रिका निकालें।



गोरी सूरत, घनी काली भौहें, छोटी-छोटी आँखें, नुकीली नाक, बड़ी-बड़ी और गुँधी हुई विरल मूँछों वाला यह मुसकराता चेहरा किसका है ? यह चेहरा प्रेमचंद का है। लगता है, अभी हँसने वाले हैं। लगता है, अभी ज़ोरों के कहकहे लगाएँगे।

वाराणसी से छः किलोमीटर दूर लमही में शनिवार, 31 जुलाई, सन् 1880 को धनपत राय का जन्म हुआ। माँ-बाप ने नाम रखा था धनपत। चाचा लाड़-प्यार में कहा करते थे-नवाब।

पिता का नाम था अजायब राय। डाकखाने में किरानी थे, इसी से लोग उन्हें मुंशी अजायब लाल कहा करते। माता का नाम था-आनंदी। अक्सर बीमार रहतीं। पिता को दवा-दारु से फुरसत नहीं मिलती थी।

धनपत सात वर्ष का ही था कि माँ चल बसीं। माँ के बिछोह ने धनपत के बचपन का सारा रस सोख लिया। कुछ वर्ष बाद मुंशी अजायब लाल ने दूसरी शादी की। अभाव और अभियोग तो पहले से थे ही, विमाता का निष्ठुर व्यवहार भी उनमें आ मिला। नई माँ बात-बात पर डाँटती। उसे धनपत में बुराइयाँ-ही-बुराइयाँ दीखतीं।

कदाचित् प्रेमचंद अपने उपन्यास 'कर्मभूमि' के पात्र चंद्रकांत के द्वारा खुद अपनी ही व्यथा सुना रहे हैं....."बचपन वह उम्र है जब इंसान को मुहब्बत की सबसे ज़्यादा ज़रूरत पड़ती है। उस वक्त पौधे को तरी मिल जाए तो ज़िंदगी-भर के लिए उसकी जड़ें मज़बूत हो जाती हैं। मेरी माँ के देहांत के बाद मेरी रूह को



खुराक नहीं मिली। वही भूख मेरी ज़िंदगी है।”

और, यही कारण था कि बालक धनपत घर—आँगन से भागकर बाहर खुले मैदान में, अमराई में, खेतों की तरफ़ निकल जाता था। साथियों के साथ गुल्ली—डंडा खेलता था। पेड़ों पर चढ़ता था। आम की केरियाँ चुनता था। मटर की फलियाँ तोड़ता था हवाई क़िले बनाता था।

ग़रीबी, घुटन और रूखेपन से त्राण पाने के लिए बालक धनपत ने इस तरह एक सहज रास्ता निकाल लिया था। रोने—खीझने वाली परिस्थितियों पर कहकहे हावी होने लगे। प्रेमचन्द ने बचपन से ही मुसीबतों पर हँसना सीखा था।

धनपत के छात्र जीवन की आपबीती प्रेमचंद की कहानियों, उपन्यासों और आत्मकथाओं में बिखरी पड़ी है—“मेरी उम्र आठ साल की थी। अपने चचेरे भाई हलधर के साथ मैं पास के गाँव में एक मौलवी साहब के यहाँ पढ़ने जाया करता था। हम दोनों सवेरे बासी रोटियाँ खा लेते, दोपहर के लिए मटर और जौ का चबेना लेकर चल देते, फिर तो सारा दिन अपना था। मौलवी साहब के यहाँ कोई हाज़िरी का रजिस्टर तो था नहीं और न ही ग़ैर—हाज़िरी का जुर्माना ही देना पड़ता था। फिर डर किस बात का ? कभी—कभी हम हफ़्तों ग़ैरहाज़िर रहते, पर मौलवी साहब से ऐसा बहाना कर देते कि उनकी चढ़ी तयोरियाँ उतर जातीं।”

पिता का तबादला गोरखपुर हुआ। बच्चे भी साथ गए। गाँव के मदरसे से शहर का स्कूल अच्छा था। धनपत की तबीयत पढ़ने में लग गई। गुल्ली—डंडे का खेल पीछे छूट गया। शहरी नज़ारे आगे सरक आए, किताबें चाटने का चस्का इसी उम्र में लगा। हज़ारों कहानियाँ और सैंकड़ों छोटे—मोटे उपन्यास धनपत ने इसी उम्र में पढ़ डाले। यह साहित्य उर्दू का था।

हमारा कहानीकार शायद पैदा हो चुका था। रात को अकेले में ढिबरी की मद्धिम रोशनी में उसने गल्प रचना शुरू कर दी थी। बीसियों पन्ने यों ही लिख

जाना और उन्हें फाड़ डालना यह सब कितना अच्छा लगता होगा तब धनपत को!

उन्हीं दिनों पिता ने शादी करवा दी। निश्चय ही उसमें सौतेली माँ की भी राय रही होगी। जो लड़की धनपत के लिए चुनी गई थी, वह धनपत को कभी पसंद नहीं आई। पुत्र के पाँवों में 'अष्टधातु' की बेड़ियाँ डालकर मुंशी अजायब लाल ने हमेशा के लिए आँखें मूँद लीं। परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा।

अपनी इन दिनों की दशा का वर्णन प्रेमचंद ने 'जीवन सागर' में किया है, "पाँव में जूते न थे, देह पर साबुत कपड़े न थे। महँगाई अलग थी। रुपये में बीस सेर के जौ थे। स्कूल में साढ़े तीन बजे छुट्टी मिलती थी। काशी के क्वीन्स कॉलेज में पढ़ता था। हेडमास्टर ने फीस माफ़ कर दी थी। इम्तहान सिर पर था और मैं बाँस फाटक, एक लड़के को पढ़ाने जाता था। जाड़ों के दिन थे। चार बजे पहुँचता था, पढ़ाकर छः बजे छुट्टी पाता। वहाँ से मेरा घर देहात में आठ किलोमीटर पर था। तेज़ चलने पर भी आठ बजे से पहले घर न पहुँच पाता। प्रातः काल आठ बजे फिर घर से चलना पड़ता था। कभी वक्त पर स्कूल न पहुँचता। रात को खाना खाकर कुप्पी के सामने पढ़ने बैठता और न जाने कब सो जाता। फिर भी हिम्मत बाँधे रहता।"

ग़रीबी..... पिता की मृत्यु..... खर्च में बढ़ती असामान्य परिश्रम कुप्पी के सामने बैठकर रात की पढ़ाई

जैसे-तैसे द्वितीय श्रेणी में मैट्रिक पास किया। गणित से बेहद घबराते थे। इंटरमीडिएट में दो बार फ़ेल हुए। निराश होकर परीक्षा का विचार ही छोड़ दिया। आगे चलकर दस-बारह वर्ष बाद, जब गणित के विकल्प में दूसरा विषय लेना संभव हो गया तभी धनपत राय ने यह परीक्षा पास की।

हमारे भावी उपन्यास-सम्राट के पास एक फूटी कौड़ी न थी। दो दिन

एक-एक पैसे का खाकर काटे थे। महाजन ने उधार देने से इनकार कर दिया था। बड़ी विवशता से पुरानी पुस्तकों को लेकर एक पुस्तक-विक्रेता के पास पहुँचे। वहीं एक सौम्य पुरुष से, जो एक छोटे-से स्कूल के प्रधानाध्यापक थे, उनका परिचय हुआ। उन्होंने इनकी ग़रीबी और विवशता के साथ ही कुशाग्रता और लगन से प्रभावित होकर अपने यहाँ सहायक अध्यापक के रूप में नियुक्त करने का आश्वासन दिया और दूसरे दिन इन्हें दस रुपये मासिक वेतन पर नियुक्त किया।

1919 में बी.ए. भी कर लिया। विषय लिए थे अंग्रेज़ी, फ़ारसी, इतिहास। वे एम.ए. भी करना चाहते थे, क़ानून भी पढ़ना चाहते थे। लेकिन, परीक्षाओं की तरफ़ से उदास हो गए थे। जब उमंग थी तब गणित ने बाधा पहुँचाई, अब जब वह बाधा दूर हुई, तो जीवन का लक्ष्य ही बदल चुका था।

स्कूल मास्टर का उनका जीवन भारी घुटन और बेबसी का जीवन रहा तो क्या प्रेमचंद की कहानियों में इसी का उल्लेख है ? पंडित चंद्रधर के रूप में स्वयं प्रेमचंद कहते हैं "मुदरिंसी तो कर ली थी, किंतु सदा पछताया करते थे कि कहाँ से जंगल में आ फँसे ? यदि किसी अन्य विभाग में नौकरी की होती तो अब तक हाथ में चार पैसे होते, आराम से जीवन व्यतीत होता। यहाँ तो महीने-भर प्रतीक्षा करने के बाद कहीं पंद्रह रुपये देखने को मिलते हैं। वह भी इधर आए, उधर गए। न खाने का सुख न पहनने का आराम। हमसे तो मज़दूर ही भले।"

इनकी पहली शादी चाची (विमाता) और चाची के पिता की राय से रचाई गई थी। लड़की न केवल बदसूरत थी, बल्कि प्रेमचंद से उम्र में बड़ी थी, ढीठ और नासमझ भी थी। पति से भी लड़ती थी और पति की सौतेली माँ से भी।

दस-बारह वर्ष तक, यानी 1905 तक तो धनपतराय ने पहली बीबी का साथ जैसे-तैसे निभाया, किंतु जब उसके साथ एक दिन भी निभाना मुश्किल हो

गया तो शिवरानी देवी नाम की एक बाल-विधवा से शादी करके धनपतराय ने समाज के सामने भारी साहस और आत्मबल का परिचय दिया।

धनपतराय पढ़ाकू तो थे ही, कलम भी चलने लगी। मैट्रिक पास करने से पहले ही उनको लिखने का चस्का लग गया था। पढ़ाई और ट्यूशन आदि से जो वक्त बचता, वह सारा-का-सारा किस्से-कहानियाँ पढ़ने में लगाते। किस्से-कहानियों का जो भी असर दिमाग पर पड़ता, उसे अपनी सहज कल्पनाओं में घोल-घोल कर मुंशी जी नई कथावस्तु तैयार करने लगे और वह कागज़ पर उतरने भी लगी।

1901-2 में उनके एक-दो उपन्यास निकले। कहानियाँ 1907 में लिखनी शुरू कीं। अंग्रेज़ी में रवीन्द्रनाथ की नई गल्पें पढ़ी थीं, मुंशी जी ने उन गल्पों के उर्दू रूपांतर पत्रिकाओं में छपवाए। पहली कहानी थी 'संसार का सबसे अनमोल रत्न' जो 1907 में कानुपर के उर्दू मासिक 'ज़माना' में प्रकाशित हुई। 'ज़माना' में धनपतराय की अन्य रचनाओं का प्रकाशन 1903-4 से ही शुरू हो गया था। 1904 के अंत तक 'नवाब राय' ज़माना के स्थायी और विशिष्ट लेखक हो चुके थे।

1905 तक आते-आते प्रेमचंद तिलिस्मी, ऐय्यारी और काल्पनिक कहानियों के चंगुल से छूटकर राष्ट्रीय और क्रांतिकारी भावनाओं की दुनिया में प्रवेश कर चुके थे। 'ज़माना' उस समय की राष्ट्रीय पत्रिका थी। सभी को देश की गुलामी खटकती थी, विदेशी शासन की सुनहरी जंजीरों के गुण गाने वाले गद्दार देश-द्रोहियों के खिलाफ़ सभी के अंदर नफ़रत फैलती थी। शाम को 'ज़माना' के दफ़्तर में घंटों देशभक्तों का अड़्डा जमता। प्रेमचंद को राष्ट्रीयता की दीक्षा इसी अड़्डे पर मिली थी। एक साधारण कथाकार वहीं 'युगद्रष्टा साहित्यकार' के रूप में ढलने लगा। बड़ी-से-बड़ी बातों को सीधे और संक्षेप में कहना या लिखना प्रेमचंद ने यहीं सीखा।

चाचा का प्यार का नाम नवाब राय शुरू की रचनाओं के साथ वर्षों तक चलता रहा, किंतु 1910–11 में 'सोज़े वतन' की ज़ब्ती के साथ 'नवाब राय' की नवाबी खत्म हो गई, बाद में 'ज़माना' के पाठकों का प्रेमचंद से परिचय हुआ और 'नवाब राय' न जाने किस पर्दे की ओट में सदा के लिए छिप गए। बात यह थी कि 'सोज़े वतन' की ज़ब्ती के बाद अंग्रेज़ी सरकार और उसके पिढुओं की नज़र में 'नवाब राय' काँटे की तरह खटकने लगे थे। कई तरह की पाबंदियाँ लग गई नवाब राय पर।

नई पत्नी के साथ रहने लगे तब से लिखाई का सिलसिला जम गया। 1905 से 1920 के दरम्यान प्रेमचंद ने बहुत कुछ लिखा दसियों छोटे–बड़े उपन्यास, सैंकड़ों कहानियाँ, पत्र–पत्रिकाओं में निबंध और आलोचनाएँ भी कम नहीं लिखीं। मास्टरी के दिनों में भी लिखते रहे। स्कूलों के सब–डिप्टी इंस्पेक्टर थे, अक्सर दौरे पर रहना होता था, फिर भी रोज़ कुछ–न–कुछ लिख लेते थे।

1920 ई. के बाद ज़्यादातर वे हिंदी में ही लिखने लगे। 'माधुरी' (लखनऊ) के संपादक होने पर उनकी प्रतिभा और योग्यता की बूँद–बूँद हिंदी संसार को मिलने लगी। फिर भी 'ज़माना' को प्रेमचंद की मौलिक उर्दू–रचनाएँ लगातार मिलती रहीं।

1930 में प्रेमचंद की कहानियों का एक और संकलन ज़ब्त हुआ–'समर यात्रा'। प्रकाशित होते ही अंग्रेज़ी सरकार ने इस पुस्तक को आपत्तिजनक घोषित कर दिया। सरस्वती प्रेस से पुस्तक की सारी प्रतियाँ उठा ली गईं।

अब वे अपना निजी पत्र निकालना चाहते थे। पत्र–पत्रिकाएँ संपादित करने की दीक्षा दरअसल प्रेमचंद को कानपुर में ही मिल चुकी थी। सन् 1905 से ही 'ज़माना' और 'आज़ाद' के कालम उनकी कलम के लिए 'खेल का मैदान' बन चुके थे। सन् 1921–22 में काशी से निकलने वाली मासिक पत्रिका 'मर्यादा' का

संपादन बड़ी कुशलता से किया था। अब वे मँजे हुए पत्रकार थे। फलतः सन् 1930 में 'हंस' निकला और 1932 में 'जागरण'।

हृद दर्जे की ईमानदारी और अपनी ड्यूटी अच्छी तरह निभाने की मुस्तैदी, खुद तकलीफ़ झेलकर दूसरों को सुख पहुँचाने की लगन, सौ-सौ बंधनों में जकड़ी हुई भारत माता की स्वाधीनता के लिए आतुरता, बाहरी और भीतरी बुराइयों की तरफ़ से लोगों को आगाह रखने का संकल्प, हर तरह के शोषण का विरोध अपनी इन खूबियों से प्रेमचंद खूब लोकप्रिय हो उठे।

प्रेमचंद का स्वभाव बहुत विनम्र था, किंतु उनमें स्वाभिमान कूट-कूटकर भरा था। दिखावा उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था..... कुरता और धोती, 1920 के बाद गांधी टोपी अपना ली थी।

सरकारी नौकरी और स्वाभिमान में संघर्ष चलता ही रहता था। आखिर में जीत हुई स्वाभिमान की। 1920 में सरकारी सेवा से त्यागपत्र दे दिया और गाँव जाकर जम गए। कलम चलाकर 40-50 रुपये की फुटकर मासिक आमदनी होने लगी। बड़े संतोष और धीरज से वे दिन प्रेमचंद ने गुज़ारे।

1921 में काशी के नामी देशभक्त बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने 150 रुपये मासिक पर प्रेमचंद को 'मर्यादा' का संपादक बना लिया। पहले संपादक बाबू संपूर्णानंद 'असहयोग आंदोलन' में गिरफ़्तार होकर जेल पहुँच गए थे। 'मर्यादा' को सँभालने के लिए किसी सुयोग्य संपादक की आवश्यकता थी।

1922 में संपूर्णानंद जी जेल से छूटे तो उन्हें 'मर्यादा' वाला काम वापस मिला। लेकिन बाबू शिवप्रसाद गुप्त प्रेमचंद को छोड़ना नहीं चाहते थे। काशी विद्यापीठ में उन्हें स्कूल विभाग का हेडमास्टर नियुक्त कर दिया।

डेढ़-दो वर्ष प्रेमचंद काशी विद्यापीठ में रहे होंगे। आगे चलकर उन्हें

महसूस हुआ कि विद्यापीठ को पैसे की तंगी है। ऐसी स्थिति में वहाँ लदे रहना उन्हें ठीक नहीं जँचा। दूसरी बात यह भी थी कि प्रेमचंद स्वाधीनता-संग्राम में कभी जेल नहीं गए थे। विद्यापीठ जैसी राष्ट्रीय शिक्षण-संस्थाओं में जेल-यात्रा किसी शिक्षक के लिए साधारण योग्यता नहीं, विशेष योग्यता समझी जाती थी।

1930 में प्रेमचंद स्वयं राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़ना चाहते थे। सत्याग्रहियों की कतार में शामिल होकर, पुलिस की लाठियों के मुकाबले डटना चाहते थे। किंतु जेल जाने का उनका मनोरथ अधूरा ही रह गया।

पत्नी ने सोचा कमजोर हैं, अक्सर बीमार रहते हैं। इनको जेल नहीं जाने देंगी। सो वे आगे बढ़ीं। सत्याग्रही महिलाओं की कतार में शामिल हुईं। गिरफ्तार होकर अपने जत्थे के साथ जेल पहुँच गईं।

प्रेमचंद मन मसोस कर रह गए। मजबूरी थी, पर तसल्ली थी। “हर परिवार से एक आदमी को जेल जाना ही चाहिए.....” उन दिनों यह भावना जोर पकड़ चुकी थी।

यह दूसरी बात है कि वे कभी गिरफ्तार नहीं हुए, कभी जेल न गए, मगर प्रेमचंद स्वाधीनता-संग्राम के ऐसे सेनापति थे जिनकी वाणी ने लाखों सैनिकों के हृदय में जोश भर दिया था। स्वाधीनता के लिए जनता की लड़ाई का समर्थन करते समय प्रेमचंद यह कभी नहीं भूले कि आज़ादी केवल एक व्यक्ति के जीवन को सुखमय नहीं बनाएगी, मुट्ठीभर आदमियों के लिए ही ऐशो-आराम नहीं लाएगी. वह ‘बहुजन-सुखाय, बहुजन हिताय’ होगी।

1923 में ‘सरस्वती प्रेस’ चालू हुआ। प्रेमचंद की आज़ाद तबीयत को नौकरी भाती नहीं थी। स्वाधीन रहकर लिखने-पढ़ने का धंधा करना चाहते थे। प्रेस खोलते वक़्त उनके दिमाग में यही एक बात थी कि अपनी किताबें आप ही छापते रहेंगे। मगर प्रेमचंद अपने प्रेस को वर्षों तक नहीं चला सके, किताबों का

प्रकाशन करके कागज़ और छपाई—बँधाई का खर्चा निकालना मुश्किल था।

1930 तक प्रेस की हालत ख़राब रही। फिर भी वह प्रेमचंद का लहू पी—पीकर किसी तरह चलता रहा। इसमें जो कुछ कसर थी, उसको 'हंस' और 'जागरण' ने पूरा कर दिया। घाटा, घाटा, घाटा और घाटा! कर्ज़, कर्ज़ और कर्ज़!

बार—बार निश्चय करते थे कि अब दुबारा नौकरी नहीं करेंगे, अपनी किताबों में गुज़ारे लायक रकम निकल ही आएगी.....बार—बार जमकर प्रेस में बैठते थे, बार—बार पुराना कर्ज़ पटाकर नये सिरे से मशीन के पुर्जों में तेल डालते थे.....काम बढ़ता था, परेशानियाँ बढ़ती थीं, बुढ़ापा भी उसी रफ़्तार से आगे बढ़ता जाता था।

पेट की बीमारियाँ हमेशा प्रेमचंद के पीछे पड़ी रहीं। लेकिन चिंता का रोग उनका सबसे बड़ा रोग था। परिवार बड़ा था, आमदनी कम। थोड़ी—बहुत कटौती करके शिवरानी जब भी कुछ बचातीं, उसे आप प्रेस के पेट में डाल देते।

पढ़ने—लिखने का सारा काम रात को करते थे। तंदुरुस्ती बीच—बीच में टूट जाती थी, दवा—दारू के लिए शिवरानी रुपये देतीं, तो वे इस रकम को भी प्रेस में खर्च कर डालते, फिर वैद्यों और हकीमों से सस्ती दवाएँ लेते रहते। आराम बिल्कुल नहीं करते थे। पूरी नींद सोते नहीं थे। खाना भी मामूली किस्म का खाते।

1936 के बाद दशा कुछ बदली ज़रूर, मगर प्रेमचंद का परिश्रम और भी बढ़ गया। उनका जीवन ऐसा दीप था जिसकी लौ मद्धिम नहीं, तेज़ प्रकाश देने को मज़बूर थी पर उस दीप में कभी पूरा—पूरा तेल नहीं डाला गया। लौ हमेशा बत्ती के रेशे को ही जलाती रही।

उनकी बेचैनी इसीलिए थी कि वे चाहते थे कि जीवन—दीप का प्रकाश दूर—दूर तक फैले, वक्त पर फैले, अच्छी तरह फैले। अपनी सारी किताबें, अपना

सारा साहित्य, अपने प्रेस में ही छपवाकर समूचे देश में फैला देना चाहते थे। किसानों, मज़दूरों, युवकों, विद्यार्थियों, स्त्रियों और अछूतों की दर्दनाक जिंदगी को आधार बनाकर जो कोई भी लिखे, सभी कुछ छापकर जनता को सजग-सचेत बना देने का संकल्प प्रेमचंद के अंदर हिलोरे ले रहा था। अधिक-से-अधिक लिखते जाना, अधिक-से-अधिक छापते जाना, अधिक-से-अधिक लोगों को जागरूक बनाते जाना..... शोषण, गुलामी, ढोंग, दंभ, स्वार्थ, रूढ़ि, अन्याय, अत्याचार इन सबकी जड़ें खोद डालना और धरती को नई मानवता के लायक बनाना.....यही प्रेमचंद का उद्देश्य था।

1934 के बाद प्रेमचंद को लगने लगा कि अब वह दो-चार वर्ष से ज़्यादा नहीं जिएँगे, इससे उनके अंदर दिन-रात लिखने की, दिन-रात काम करने की भावना ज़ोर पकड़ती गई।

आजीवन संघर्षरत और अभावग्रस्त लेखक ने अपना स्वास्थ्य चौपट कर लिया। अंतिम दिनों में वे संतरे लेने लगे थे। पथ्य-परहेज़ पर भी थोड़ा-बहुत ध्यान दिया था, लेकिन अब तक तंदुरुस्ती बिल्कुल रूठ चुकी थी।

वे अच्छी तरह जानते थे कि दुबला-पतला, लक्कड़-सरीखा यह बीमार आदमी धनपतराय हो सकता है, प्रेमचंद कोई और होगा। प्रेमचंद कभी बीमार नहीं पड़ेगा। प्रेमचंद हमेशा स्वस्थ रहेगा। प्रेमचंद हमेशा ज़िंदा रहेगा। कहकहे लगाता रहेगा।

तभी तो हानि-लाभ की भावनाओं से निर्लिप्त रहकर प्रेमचंद अंत तक लिखते रहे। नींद नहीं आती थी। बीमारी बढ़ गई थी। प्रेस जाना बंद था। फिर भी, आप घरवालों की नज़रें बचाकर उठ जाते और क़लम तेज़ी से चल पड़ती..... इतनी तेज़ी से कि जीवन समाप्त होने से पहले ही सब कुछ लिख देना चाहते थे।

‘मंगलसूत्र’ के बीसियों सफ़े प्रेमचंद ने अपनी मृत्युशैय्या पर लिखे।

‘महाजनी सभ्यता’ और ‘कफ़न’ और प्रगतिशील लेखकों की पहली कांफ्रेंस के लिए अध्यक्ष का भाषण..... काफी कुछ उन्होंने हमें अपने अंतिम क्षणों तक दिया।

“मैं मज़दूर हूँ, जिस दिन न लिखूँ, उस दिन मुझे रोटी खाने का अधिकार नहीं है”.... ये शब्द उनके होठों के केवल आभूषण ही न थे बल्कि सच थे।

फ़िल्मों के द्वारा जनता तक अपने संदेशों को प्रभावशाली ढंग से पहुँचाने और साथ ही अभावों से मुक्ति पाने के लिए वे बंबई गए। किंतु धनपत को धनपतियों का सहवास और बंबई का प्रवास रास नहीं आया, वह उनकी अभिलाषाओं की पूर्ति नहीं कर पाया।

फिर वही प्रेस। फिर वही प्रकाशन, फिर वही घिसाई। रातों—रात जागकर प्रेमचंद ने ‘गोदान’ पूरा किया।

‘गोदान’ छपकर निकल आया था कि उनकी लेखनी ‘मंगलसूत्र’ पर तेज़ी से चल रही थी।

मरते—मरते प्रेमचंद इस उपन्यास का पूरा करना चाहते थे। चार ही अध्याय लिख पाए थे.....खाना नहीं हज़म होता था। खून की कै करने लगे थे। पेट में पानी भर गया था। दूध, बाली, फलों का रस तक नहीं पचा पाते थे। पर इतने पर भी काम करने की ललक पीछा नहीं छोड़ती थी, लिखने की अभिलाषा शांत नहीं हो पाती थी, देश को अपने जीवन, अनुभव और अपने विचारों की अंतिम बूँद तक दे जाने की इच्छा चैन नहीं लेने देती थी।

8 अक्टूबर, 1936, रात का पिछला पहर। प्रेमचंद ने हमेशा के लिए अपनी आँखें मूँद लीं। अभी साठ के भी नहीं हुए थे। 56 वर्ष की आयु क्या कोई लंबी आयु थी ?

संयोग तो देखिए, विश्व के तीन महान् उपन्यासकारों.....प्रेमचंद,
मैक्सिम गोर्की और शरत्चंद्र.....का देहावसान उसी वर्ष हुआ ।

—नागार्जुन

प्रश्न—अभ्यास

- बचपन में प्रेमचंद घर से भागकर खेतों, बगीचों और मैदानों में क्यों चले जाते थे ?
 - वे घर की चारदीवारी में बँधकर बैठना नहीं चाहते थे ?
 - वे स्वभाव से चंचल और खिलाड़ी थे ।
 - वहाँ जाकर अपनी कहानियों और उपन्यासों के लिए कथानक सोचते थे ।
 - वे घर पर सौतेली माँ से परेशान हो जाते थे ।
 - खुली हवा में घूमना उन्हें बेहद पसंद था ।
- प्रेमचंद को महान लेखक बनाने में निम्नांकित में से सबसे अधिक योगदान किसका था ?

(क) तीव्र लगन	(ग) घोर ग़रीबी
(ख) उनका युग	(घ) हिंदी में अच्छे कथाकारों की कमी
- "लगन है..... हैं ।" "लगता है,लगाएँगे ।"
—इन पंक्तियों से प्रेमचंद के स्वभाव की किस विशेषता का पता चलता है ?
- प्रेमचंद के बचपन की कठिनाइयों का वर्णन करें ।

5. "उनकी दूसरी पत्नी शिवरानी उनके लिए वरदान जैसी साबित हुई।" कैसे ?
6. स्वतंत्रता आंदोलन में प्रेमचंद की कृतियाँ उनके योगदान जैसी साबित हुई। कैसे ?
7. प्रेमचंद के व्यक्तित्व की कोई तीन विशेषताएँ उनके जीवन की उपयुक्त घटनाएँ उद्धरित करके बताइए।
8. प्रेमचंद के साहित्य का संक्षिप्त परिचय दें।
9. प्रेमचंद की असामयिक मृत्यु के निम्नांकित कारण हो सकते हैं। तुम्हारी दृष्टि से सबसे प्रमुख कारण क्या था, तर्कपूर्ण उत्तर दें।
 - (क) बिना विश्राम किए वे दिन-रात लिखते रहते थे।
 - (ख) उनका बचपन घोर गरीबी और उपेक्षा में बीता।
 - (ग) उन्हें कभी पौष्टिक आहार नहीं मिला।
 - (घ) वे आजीवन आर्थिक संकट से जूझते रहे।
 - (ङ) उनका इलाज सही ढंग से नहीं हुआ।

भाषा-अध्ययन

1. जिस प्रकार लेखक ने नपे-तुले शब्दों में प्रेमचंद का शब्दचित्र अंकित किया है, वैसे ही किसी कवि या लेखक का शब्दचित्र अंकित करें।
जैसे-प्रसाद, पंत, निराला, दिनकर, हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामचंद्र शुक्ल आदि।
2. निम्नांकित वाक्य-युग्मों से जो वाक्य प्रभावशाली लगे वैसे ही एक-एक वाक्य लिखें:-
(क) पिता का नाम था अजायब राय।

पिता का नाम अजायब राय था ।

(ख) फिर डर किस बात का ?

मुझे किसी बात का डर न था ।

(ग) वहीं एक सौम्य पुरुष से, जो एक छोटे-से स्कूल के प्रधानाध्यापक थे, उनका परिचय हुआ ।

—वहीं एक सौम्य पुरुष से उनका परिचय हुआ, जो एक छोटे-से स्कूल में प्रधानाध्यापक थे ।

योग्यता—विस्तार

1. प्रेमचंद का कोई उपन्यास पढ़ें और उसका सारांश तीन पृष्ठों में लिखें तथा अपने साथियों को सुनाएँ ।
2. प्रेमचंद के उपन्यासों और उनकी बहुचर्चित कहानियों की सूची बनाएँ ।
3. प्रेमचंद पर अधिक जानकारी के लिए निम्नांकित पुस्तकें पठनीय हैं:
 - (क) प्रेमचंद घर में
 - (ख) कलम का सिपाही
 - (ग) प्रेमचंद (एन.सी.ई.आर.टी. प्रकाशन)
 - (घ) पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशित नागार्जुन द्वारा लिखित प्रेमचंद की जीवनी ।



समुद्र के किनारे ऊँचे पर्वत की अँधेरी गुफा में एक साँप रहता था। समुद्र की तूफानी लहरें धूप में चमकतीं, झिलमिलातीं और दिन भर पर्वत की चट्टानों से टकराती रहती थीं।

पर्वत की अँधेरी घाटियों में एक नदी भी बहती थी। अपने रास्ते पर बिखरे पत्थरों को तोड़ती, शोर मचाती हुई यह नदी बड़े जोर से समुद्र की ओर लपकती जाती थी। जिस जगह पर नदी और समुद्र का मिलाप होता था, वहाँ लहरें दूध के झाग—सी सफ़ेद दिखाई देती थीं।

अपनी गुफा में बैठा हुआ साँप सब कुछ देखा करता। लहरों का गर्जन, आकाश में छिपती हुई पहाड़ियाँ, टेढ़ी—मेढ़ी बलखाती हुई नदी की गुस्से से भरी आवाज़ें। वह मन ही मन खुश होता था कि इस गर्जन—तर्जन के होते हुए भी वह सुखी और सुरक्षित है। कोई उसे दुख नहीं दे सकता। सबसे अलग, सबसे दूर, वह अपनी गुफा का स्वामी है। न किसी से लेना, न किसी से देना। दुनिया की भाग—दौड़, छीना—झपटी से वह दूर है। साँप के लिए यही सबसे बड़ा सुख था।

एक दिन एकाएक आकाश में उड़ता हुआ खून से लथपथ एक बाज साँप की उस गुफा में आ गिरा। उसकी छाती पर कितने ही ज़ख्मों के निशान थे, पंख खून से सने थे और वह अधमरा—सा ज़ोर—ज़ोर से हाँफ रहा था। ज़मीन पर गिरते ही उसने एक दर्द भरी चीख मारी और पंखों को फड़फड़ाता हुआ धरती पर लोटने लगा। डर से साँप अपने कोने में सिकुड़ गया। किंतु दूसरे ही क्षण उसने भाँप लिया कि बाज जीवन की अंतिम साँसें गिन रहा है और उससे डरना बेकार है।



यह सोचकर उसकी हिम्मत बँधी और वह रेंगता हुआ उस घायल पक्षी के पास जा पहुँचा। उसकी तरफ कुछ देर तक देखता रहा, फिर मन ही मन खुश होता हुआ बोला— “क्यों भाई, इतनी जल्दी मरने की तैयारी कर ली?”

बाज़ ने एक लंबी आह भरी “ऐसा ही दिखता है कि आखिरी घड़ी आ पहुँची है लेकिन मुझे कोई शिकायत नहीं है। मेरी जिंदगी भी खूब रही भाई, जी भरकर उसे भोगा है। जब तक शरीर में ताकत रही, कोई सुख ऐसा नहीं बचा जिसे न

भोगा हो। दूर-दूर तक उड़ानें भरी हैं, आकाश की असीम ऊँचाइयों को अपने पंखों से नाप आया हूँ। तुम्हारा बड़ा दुर्भाग्य है कि तुम जिंदगी भर आकाश में उड़ने का आनंद कभी नहीं उठा पाओगे।”

साँप बोला—“आकाश! आकाश को लेकर क्या मैं चाटूँगा! आकाश में आखिर रखा क्या है? क्या मैं तुम्हारे आकाश में रेंग सकता हूँ। ना भाई, तुम्हारा आकाश तुम्हें ही मुबारक, मेरे लिए तो यह गुफा भली। इतनी आरामदेह और सुरक्षित जगह और कहाँ होगी?”

साँप मन ही मन बाज की मूर्खता पर हँस रहा था। वह सोचने लगा कि आखिर उड़ने और रेंगने के बीच कौन-सा भारी अंतर है। अंत में तो सबके भाग्य में मरना ही लिखा है। शरीर मिट्टी का है, मिट्टी में ही मिल जाएगा।

अचानक बाज ने अपना झुका हुआ सिर ऊपर उठाया और उसकी दृष्टि साँप की गुफा के चारों ओर घूमने लगी। चट्टानों में पड़ी दरारों से पानी गुफा में टपक रहा था। सीलन और अँधेरे में डूबी गुफा में एक भयानक दुर्गंध फैली हुई थी, मानो कोई चीज़ वर्षों से पड़ी-पड़ी सड़ गई हो।

बाज के मुँह से एक बड़ी ज़ोर की करुण चीख फूट पड़ी “आह! काश, मैं सिर्फ एक बार आकाश में उड़ पाता।”

बाज की ऐसी करुण चीख सुनकर साँप कुछ सितपिटा-सा गया। एक क्षण के लिए उसके मन में उस आकाश के प्रति इच्छा पैदा हो गई जिसके वियोग में बाज इतना व्याकुल होकर छटपटा रहा था। उसने बाज से कहा— “यदि तुम्हें स्वतंत्रता इतनी प्यारी है तो इस चट्टान के किनारे से ऊपर क्यों नहीं उड़ जाने की कोशिश करते। हो सकता है कि तुम्हारे पैरों में अभी इतनी ताकत बाकी हो कि तुम आकाश में उड़ सको। कोशिश करने में क्या हर्ज है?”

बाज में एक नयी आशा जग उठी। वह दूने उत्साह से अपने घायल शरीर को घसीटता हुआ चट्टान के किनारे तक खींच लाया। खुले आकाश को देखकर उसकी आँखें चमक उठीं। उसने एक गहरी, लंबी साँस ली और अपने पंख फैलाकर हवा में कूद पड़ा।

किंतु उसके टूटे पंखों में इतनी शक्ति नहीं थी कि उसके शरीर का बोझ सँभाल सकें। पत्थर—सा उसका शरीर लुढ़कता हुआ नदी में जा गिरा। एक लहर ने उठकर उसके पंखों पर जमे खून को धो दिया, उसके थके—माँदे शरीर को सफेद फेन से ढक दिया, फिर अपनी गोद में समेटकर उसे अपने साथ सागर की ओर ले चली।

लहरें चट्टानों पर सिर धुनने लगीं मानो बाज की मृत्यु पर आँसू बहा रही हों। धीरे—धीरे समुद्र के असीम विस्तार में बाज आँखों से ओझल हो गया।

चट्टान की खोखल में बैठा हुआ साँप बड़ी देर तक बाज की मृत्यु और आकाश के लिए उसके प्रेम के विषय में सोचता रहा।

“आकाश की असीम शून्यता में क्या ऐसा आकर्षण छिपा है जिसके लिए बाज ने अपने प्राण गँवा दिए ? वह खुद तो मर गया लेकिन मेरे दिल का चैन अपने साथ ले गया। न जाने आकाश में क्या खजाना रखा है ? एक बार तो मैं भी वहाँ जाकर उसके रहस्य का पता लगाऊँगा चाहे कुछ देर के लिए ही हो। कम से कम उस आकाश का स्वाद तो चख लूँगा।”

यह कहकर साँप ने अपने शरीर को सिकोड़ा और आगे रेंगकर अपने को आकाश की शून्यता में छोड़ दिया। धूप में क्षणभर के लिए साँप का शरीर बिजली की लकीर—सा चमक गया।

किंतु जिसने जीवन भर रेंगना सीखा था, वह भला क्या उड़ पाता ? नीचे

छोटी-छोटी चट्टानों पर धप्प से साँप जा गिरा। ईश्वर की कृपा से बेचारा बच गया, नहीं तो मरने में क्या कसर बाकी रही थी। साँप हँसते हुए कहने लगा— “सो उड़ने का यही आनंद है— भर पाया मैं तो! पक्षी भी कितने मूर्ख हैं। धरती के सुख से अनजान रहकर आकाश की ऊँचाइयों को नापना चाहते थे। किंतु अब मैंने जान लिया कि आकाश में कुछ नहीं रखा। केवल ढेर-सी रोशनी के सिवा वहाँ कुछ भी नहीं, शरीर को सँभालने के लिए कोई स्थान नहीं, कोई सहारा नहीं। फिर वे पक्षी किस बूते पर इतनी डींगें हाँकते हैं, किसलिए धरती के प्राणियों को इतना छोटा समझते हैं। अब मैं कभी धोखा नहीं खाऊँगा, मैंने आकाश देख लिया और खूब देख लिया। बाज तो बड़ी-बड़ी बातें बनाता था, आकाश के गुण गाते थकता नहीं था। उसी की बातों में आकर मैं आकाश में कूदा था। ईश्वर भला करे, मरते-मरते बच गया। अब तो मेरी यह बात और भी पक्की हो गई है कि अपनी खोखल से बड़ा सुख और कहीं नहीं है। धरती पर रेंग लेता हूँ, मेरे लिए यह बहुत कुछ है। मुझे आकाश की स्वच्छंदता से क्या लेना-देना ? न वहाँ छत है, न दीवारें हैं, न रेंगने के लिए ज़मीन है। मेरा तो सिर चकराने लगता है। दिल काँप-काँप जाता है। अपने प्राणों को खतरे में डालना कहाँ की चतुराई है ?”

साँप सोचने लगा कि बाज़ अभागा था जिसने आकाश की आजादी को प्राप्त करने में अपने प्राणों की बाजी लगा दी।

किंतु कुछ देर बाद साँप के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उसने सुना, चट्टानों के नीचे से एक मधुर, रहस्यमय गीत की आवाज़ उठ रही है। पहले उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। किंतु कुछ देर बाद गीत के स्वर अधिक साफ़ सुनाई देने लगे। वह अपनी गुफा से बाहर आया और चट्टान से नीचे झाँकने लगा। सूरज की सुनहरी किरणों में समुद्र का नीला जल झिलमिला रहा था। चट्टानों को भिगोती हुई समुद्र की लहरों में गीत के स्वर फूट रहे थे। लहरों का यह गीत

दूर—दूर तक गूँज रहा था ।

साँप ने सुना, लहरें मधुर स्वर में गा रही हैं ।

हमारा यह गीत उन साहसी लोगों के लिए है जो अपने प्राणों को हथेली पर रखे हुए घूमते हैं ।

चतुर वही है जो प्राणों की बाज़ी लगाकर ज़िंदगी के हर खतरे का बहादुरी से सामना करे ।

ओ निडर बाज! शत्रुओं से लड़ते हुए तुमने अपना कीमती रक्त बहाया है । पर वह समय दूर नहीं है, जब तुम्हारे खून की एक—एक बूँद ज़िंदगी के अँधेरे में प्रकाश फैलाएगी और साहसी, बहादुर दिलों में स्वतंत्रता और प्रकाश के लिए प्रेम पैदा करेगी ।

तुमने अपना जीवन बलिदान कर दिया किंतु फिर भी तुम अमर हो । जब कभी साहस और वीरता के गीत गाए जाएँगे, तुम्हारा नाम बड़े गर्व और श्रद्धा से लिया जाएगा ।

“हमारा गीत ज़िंदगी के उन दीवानों के लिए है जो मर कर भी मृत्यु से नहीं डरते ।”

—निर्मल वर्मा

शब्दार्थ

शिखर	—	पहाड़ की चोटी
असीम	—	जिसकी कोई सीमा न हो, अपार
सरिता	—	नदी

सिटपिटाना — भय या घबड़ाहट से सहम जाना

खोखल — खोखली जगह, बड़ा छेद

प्रश्न अभ्यास

शीर्षक और नायक

- लेखक ने इस कहानी का शीर्षक कहानी के दो पात्रों के आधार पर रखा है। लेखक ने बाज और साँप को ही क्यों चुना ? आपस में चर्चा कीजिए।

कहानी से

- घायल होने के बाद भी बाज ने यह क्यों कहा, "मुझे कोई शिकायत नहीं है।" विचार प्रकट कीजिए।
- बाज ज़िंदगी भर आकाश में ही उड़ता रहा फिर घायल होने के बाद भी वह उड़ना क्यों चाहता था ?
- साँप उड़ने की इच्छा को मूर्खतापूर्ण मानता था। फिर उसने उड़ने की कोशिश क्यों की ?
- बाज के लिए लहरों ने गीत क्यों गाया था ?
- घायल बाज को देखकर साँप खुश क्यों हुआ होगा ?

कहानी से आगे

- कहानी में से वे पंक्तियाँ चुनकर लिखिए जिनसे स्वतंत्रता की प्रेरणा मिलती हो।
- लहरों का गीत सुनने के बाद साँप ने क्या सोचा होगा ? क्या उसने फिर से

उड़ने की कोशिश की होगी ? अपनी कल्पना से आगे की कहानी पूरी कीजिए ।

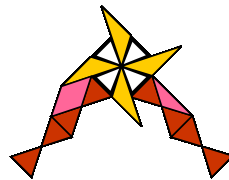
3. क्या पक्षियों को उड़ते समय सचमुच आनंद का अनुभव होता होगा या स्वाभाविक कार्य में आनंद का अनुभव होता ही नहीं ? विचार प्रकट कीजिए ।
4. मानव ने भी हमेशा पक्षियों की तरह उड़ने की इच्छा की है । आज मनुष्य उड़ने की इच्छा किन साधनों से पूरी करता है ।

अनुमान और कल्पना

- यदि इस कहानी के पात्र बाज और साँप न होकर कोई और होते तब कहानी कैसी होती ? अपनी कल्पना से लिखिए ।

भाषा की बात

1. कहानी में से अपनी पसंद के पाँच मुहावरे चुनकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।
2. 'आरामदेह' शब्द में 'देह' प्रत्यय है । यहाँ 'देह' 'देनेवाला' के अर्थ में प्रयुक्त है । देनेवाला के अर्थ में 'द', 'प्रद', 'दाता', 'दाई' आदि का प्रयोग भी होता है, जैसे—सुखद, सुखदाता, सुखदाई, सुखप्रद । उपर्युक्त समानार्थी प्रत्ययों को लेकर दो-दो शब्द बनाइए ।



एक थी गवरइया (गौरैया) और एक था गवरा (नर गौरैया)। दोनों एक दूजे के परम संगी। जहाँ जाते, जब भी जाते, साथ ही जाते। साथ हँसते, साथ ही रोते, एक साथ खाते—पीते, एक साथ सोते। भिनसार होते ही खोंते से निकल पड़ते



दाना चुगने और झुटपुटा होते ही खोंते में आ घुसते। थकान मिटाते और सारे दिन के देखे—सुने में हिस्सेदारी बँटाते। एक शाम गवरइया बोली,

“आदमी को देखते हो ? कैसे रंग—बिरंगे कपड़े पहनते हैं! कितना फबता है उन पर कपड़ा!”

“खाक फबता है!” गवरा तपाक से बोला, “कपड़ा पहन लेने के बाद तो आदमी और बदसूरत लगने लगता है।”

“लगता है आज लटजीरा चुग गए हो ?” गवरइया बोल पड़ी।

“कपड़े पहन लेने के बाद आदमी की कुदरती खूबसूरती ढँक जो जाती है।” गवरा बोला, “अब तू ही सोच! अभी तो तेरी सुघड़ काया का एक—एक कटाव मेरे सामने है, रोंवें—रोवें की रंगत मेरी आँखों में चमक रही है। अब अगर तू मानुस की

तरह खुद को सरापा ढँक ले तो तेरी सारी खूबसूरती ओझल हो जाएगी कि नहीं?"

"कपड़े केवल अच्छा लगने के लिए नहीं, गवरइया बोली, "मौसम की मार से बचने के लिए भी पहनता है आदमी।"

"तू समझती नहीं।" गवरा हँसकर बोला, "कपड़े पहन-पहनकर जाड़ा-गरमी-बरसात सहने की उनकी सकत भी जाती रही है। और इस कपड़े में बड़ा लफड़ा भी है। कपड़ा पहनते ही पहननेवाले की औकात पता चल जाती है..... आदमी-आदमी की हैसियत में भेद पैदा हो जाता है।"

"फिर भी आदमी कपड़ा पहनने से बाज नहीं आता।" गवरइया बोली। "नित नए-नए लिबास सिलवाता रहता है।"

"यह निरा पोंगापन है।" गवरा बोला, "आदमी तो लिबास से फकत लाज ही नहीं ढँकता, हाथ-पैर जो चलने-फिरने, काम करने के वास्ते हैं, उन्हें भी दस्ताने और मोजे से ढँक लेता है। सिर पर लटें हैं, उन्हें भी टोपी से ढँक लेता है। अपन तो नंगे ही भले।"

"उनके सिर पर टोपी कितनी अच्छी लगती है।" गवरइया बोली, "मेरा भी मन टोपी पहनने का करता है।"

"टोपी तू पाएगी कहाँ से?" गवरा बोला, "टोपी तो आदमियों का राजा पहनता है। जानती है, एक टोपी के लिए कितनों का टाट उलट जाता है। ज़रा-सी चूक हुई नहीं कि टोपी उछलते देर नहीं लगती। अपनी टोपी सलामत रहे, इसी फिकर में कितनों को टोपी पहनानी पड़ती है। मेरी मान तो तू इस चक्कर में पड़ ही मत।"

गवरा था तनिक समझदार, इसलिए शक्की। जबकि गवरइया थी जिद्दी और धुन की पक्की। ठान लिया सो ठान लिया, उसको ही जीवन का लक्ष्य मान

लिया। कहा गया है—
जहाँ चाह, वहीं राह।
मामूल के मुताबिक
अगले दिन दोनों घूरे
पर चुगने निकले।
चुगते—चुगते उसे
रुई का एक फाहा
मिला। “मिल गया.....



मिल गया..... मिल गया.....” गवरइया मारे खुशी के घूरे पर लोटने लगी।

“अरे..... क्या मिल गया, रे!” गवरे ने चिहाकर पूछा।

“मिल गया..... मिल गया..... टोपी का जुगाड़ मिल गया.....” गवरइया ने गवरे के सामने रुई का फाहा धर दिया।

“तेरे जैसा ही एक बावरा और था।” गवरा बोला, “रास्ता चलते—चलते उसे अचानक एक दिन पड़ा हुआ चाबुक मिल गया। चाबुक था बड़ा उम्दा और लचकदार। किसी घुड़सवार के हाथ से छूटकर गिर गया होगा। चाबुक हाथ लगते ही वह बावरा चीखने लगा— ‘चाबुक तो मिल गया, बाकी बचा तीन घोड़ा—लगाम—जीन’। अब ये तीनों तो रास्ते में पड़े मिलने से रहे। सब काम—धंधा छोड़ वह बावरा ताउम्र यह रटता रहा— ‘बाकी बचा तीन घोड़ा—लगाम—जीन’।” गवरा उसे समझाते हुए बोला, “इस रुई के फाहे से लेकर टोपी तक का सफर तुझे कुछ अता—पता है?”

“बस देखते जाओ अब कैसे बनती है टोपी।” गवरइया रुई का फाहा लिए एक धुनिया के पास चली गई और बड़े मनुहार से बोली, “धुनिया भइया—धुनिया भइया! इस रुई के फाहे को धुन दो।”

धुनिया बेचारा बूढ़ा था। जाड़े का मौसम था। उसके तन पर वर्षों पुरानी तार-तार हो चुकी एक मिर्जई पड़ी हुई थी। वह काँपते हुए बोला, "तू जाती है कि नहीं! देखती नहीं, अभी मुझे राजा जी के लिए रजाई बनानी है। एक तो यहाँ का राजा ऐसा है जो चाम का दाम चलाता है। ऊपर से तू आ गई फोकट की रुई धुनवाने।"

"उज्र न करो भइए!" गवरइया बोली, "मैं तुम्हें पूरी उजरत दूँगी। इसे धुन दो, भइया! आधा तू ले ले, आधा मैं ले लूँगी।"

धुनिए को अपनी जिंदगी में आज तक इतनी खरी मजूरी कभी न मिली थी। सोलह आने में आठ आने मजूरी तो इसके लिए सपना थी। वह झट तैयार हो गया। 'घर-चों, घर-चों' उसकी ताँती बज उठी। उसने बड़े मन से रुई धुनी, "लो

इसे।" उसमें से आधा धुनिया ने ले लिया और आधा गवरइया ने।

इससे उत्साहित गवरा-गवरइया एक कोरी के यहाँ गए और कहने लगे, "कोरी भइया-कोरी भइया, इस धुनी रुई से सूत कात दो।"

कोरी की कमर झुकी हुई थी। उसने बदन पर धज्जी-धज्जी



हो चुका एक धुस्सा डाल रखा था। वह बड़ी अनिच्छा से बोला, "तुम लोग यहाँ से भागते हो कि नहीं। देखते नहीं, अभी मुझे राजा जी के अचकन के लिए सूत कातने हैं। मुझे फुर्सत नहीं है मुफ्त में मल्लार गाने की।"

"भइया, इस मुलुक में सब काम क्या राजा जी के लिए ही होता है?" गवरइया अचरज से बोली।

"तू किस मुलुक से आई है?" कोरी ने उसे भर आँख देखा, "जानती नहीं यहाँ का चलन खट मरे बरधा, बैठा खाय तुरंग। यहाँ सब काम राजा जी के नाम पर और राजा जी के लिए होता है। राजा जी के लगुए—भगुए भी तो बहुत हैं..... इसी में उनका भी काम होता है।"

"मुकरो मत, भइया! हम तुम्हें माकूल मुआवजा देंगे।" गवरइया बोल पड़ी, "इसे कात दो आधा तुम ले लो, आधा मैं ले लूँगी।"

कोरी भी तैयार हो गया। इतनी वाजिब मजूरी पर काम न करना मूर्खता होती। 'तन्न तन्न' करके उसकी तकली चरखी ताता—थैया करने लगी। काफी महीन और लच्छेदार सूत कात दिए उसने।

कदम—कदम पर मिलते कामगारों के सहयोग ने गवरइया को आगे बढ़ने पर उकसा दिया। इसके बाद वे दोनों एक बुनकर के पास गए और इसरार करने लगे, "बुनकर भइया, बुनकर भइया, इस कते सूत से कपड़ा बुन दो।"

बुनकर इन्हें अगबग होकर देखने लगा, "हटते हो कि नहीं यहाँ से! देखते नहीं, अभी मुझे राजा जी के लिए बागा बुनना है। अभी थोड़ी देर बाद ही राजा जी के कारिंदे हाजिर हो जाएँगे। साव करे भाव तो चबाव करे चाकर।" इतना कहकर बुनकर अपने काम में मशगूल हो गया।

"इसे बुन दे भइया!" गवरइया ने साहस सँजोकर कहा, "हम सेंट—मेंत का

काम नहीं करवाते। इसे बुन दे और आधा तू ले ले, आधा हम ले लेंगे।”

बुनकर ने देखा कि सौदा बुरा नहीं है। वह तैयार हो गया। सूत अपनी ओर खींचकर ताना-बाना पसार दिया। उसका करघा चलने लगा, ढरकी ढुलकने लगी। थोड़ी ही देर में उसने काफी गफश और दबीज कपड़ा बुन दिया। आधा उसने ले लिया और आधा इन्होंने।

गवरइया ने तीन चौथाई मंजिल मार ली थी। कपड़ा लिए-दिए वह एक दर्जी के पास जा पहुँची, “दर्जी भइया-दर्जी भइया, इसकी टोपी सिल दो।”

“खिसकती हो कि नहीं यहाँ से।” दर्जी रोष से बोला, “देखते नहीं, राजा जी की सातवीं रानी से नौ बेटियों के बाद दसवाँ बेटा पैदा हुआ है। अब उस दसरतन के लिए मुझे ढेरों झब्बे सिलने हैं।” दर्जी ने माथे का पसीना पोंछते हुए ठंडी आह भरी, “कुछ देना, न लेना..... भर माथे पसीना।”

“हम तो भइए, बेगार में कुछ करवाते नहीं।” गवरइया बोली, “इस बुने कपड़े की टोपी सिल दे। बल्कि दो टोपियाँ सिल दे। एक तू ले ले, एक हम ले लेंगे।”

मुँहमाँगी मजूरी पर कौन मूजी तैयार न होता। ‘कच्च-कच्च’ उसकी कैंची चल उठी और चूहे की तरह ‘सर्र-सर्र’ उसकी सूई कपड़े के भीतर-बाहर होने लगी। बड़े मनोयोग से उसने दो टोपियाँ सिल दीं। खुश होकर दर्जी ने अपनी ओर से एक टोपी पर पाँच फुँदने भी जड़ दिए। फुँदनेवाली टोपी पहनकर तो गवरइया जैसे आपे में न रही। डेढ़ टाँगों पर ही लगी नाचने, फुदक-फुदककर लगी गवरा को दिखाने, “देख मेरी टोपी सबसे निराली पाँच फुँदनेवाली।”

“वाकई तू तो रानी लग रही है।” गवरे को भी आखिरकार कहना पड़ा।

“रानी, नहीं, राजा कहो, मेरे राजा!” गवरइया ऊँचा उड़ने लगी, “अब कौन राजा मेरा मुकाबला करेगा।”

टोपी पहनते ही उसके मन में एक नए हुलस ने ज़ोर मारा कि क्यों न इस मुलुक के राजा का भी एक बार जायज़ा लिया जाए जिसके लिए इत्ते सारे काम होते हैं।

उड़ते-उड़ते वह राजा के महल के कंगूरे पर जा बैठी।

उसी वक्त राजा अपने चौबारे पर टहलुओं से खुली धूप में फुलेल की मालिश करवा रहा था। राजा उस वक्त अधनंगा बदन और नंगे सिर था। एक टहलुआ सिर पर चंपी कर रहा था, तो दूसरा हाथ-पाँव की उँगलियाँ फोड़ रहा था, तो तीसरा पीठ पर मुक्की मार रहा था तो चौथा पिंडली पर गुद्दी काढ़ रहा था।

गवरइया कंगूरे पर से ही चिल्लाई, "मेरे सिर पर टोपी, राजा के सिर पर टोपी नहीं..... राजा के सिर पर टोपी नहीं।"

मालिश करवाते राजा की नज़र गवरइया से टकरा गई। गवरइया के सिर पर फुँदनेदार टोपी देखकर उसकी अक्ल चकरा गई। वह तो लगातार रटे जा रही



थी, "मेरे सिर पर टोपी, राजा के सिर पर टोपी नहीं।"

"अरे कोई मेरी टोपी लाओ..... ज़रा जल्दी।" राजा दोनों हाथों से अपना सिर ढँकते हुए चिल्लाया।

टोपी आ गई। राजा ने झट पहन भी ली, "देख री फदगुद्दी।"

"मेरी टोपी में पाँच फुँदने", गवरइया ने अब दूसरा ही राग अलापना शुरू कर दिया। "राजा की टोपी में एक भी नहीं..... मेरी टोपी में पाँच फुँदने, राजा की टोपी में फुँदने नहीं।"

राजा को बेहद हेठी महसूस हुई। इस मुलुक के महाबली राजा के सामने एक चिड़िया की यह मजाल! वह बुरी तरह बिगड़ गया, "इस फदगुद्दी की गर्दन मसल दो..... पखने नोच लो.... सिपाहियों, देर न करो।"

"खमा करें महाराज!" मंत्री ने हाथ जोड़ दिए, "मच्छर मारकर हाथ क्यों गंदा करना! अपने आप चली जाएगी।"

तब राजा सिपाहियों से बोला, "यह ऐसे नहीं मानेगी। इसकी टोपी छीन ले आओ.....उसे मैं पैरों से ठोकर मारूँगा।"

एक सिपाही ने गुलेल मारकर गवरइया की टोपी नीचे गिरा दी, तो दूसरे सिपाही ने झट वह टोपी लपक ली और राजा के सामने पेश कर दिया। राजा टोपी को पैरों से मसलने ही जा रहा था कि उसकी खूबसूरती देखकर दंग रह गया। कारीगरी के इस नायाब नमूने को देखकर वह जड़ हो गया "मेरे राज में मेरे सिवा इतनी खूबसूरत टोपी दूसरे के पास कैसे पहुँची!" सोचते हुए राजा उसे उलट-पुलटकर देखने लगा।

"इतनी नगीना टोपी इस मुलुक में बनाई किसने?" राजा के मन में खयाल आया। अब तो उस हुनरमंद कारीगर की खोज होने लगी। राजा चाहे और पता न

चले!

गिरते—पड़ते दर्जी हाजिर हुआ, “दुहाई अन्नदाता।”

“इतनी बढ़िया टोपी तुमने कभी हमारे लिए क्यों नहीं बनाई?” मेघों की गड़गड़ाहट की मानिंद राजा की आवाज़ निकली।

“दुहाई अन्नदाता!”

“हमें दुहाई नहीं..... वजह बताओ।”

“कपड़ा बहुत उम्दा था सरकार! एकदम गफश और दबीज।”

“ऐसा उम्दा कपड़ा किसने बुना?” नाग की मानिंद राजा फूंक मारने लगा। गिरते—पड़ते बुनकर हाजिर हुआ, “माफी बख्शें, सरकार।”

“माफी नहीं..... वजह बताओ।”

“सूत बड़ा उम्दा था सरकार। एकदम महीन और लच्छेदार।”

“इतना महीन सूत किसने काता?” शेर की मानिंद राजा ने दहाड़ मारी। गिरते—पड़ते कोरी हाजिर हुआ, “जान बख्शें, महाराज!”

“जान नहीं.... वजह बताओ।”

“रुई बड़ी बेहतरीन थी, सरकार! एकदम बादलों की तरह धुनी हुई।”

“इतनी बेहतरीन रुई किसने धुनी?” बिजली की तरह राजा की आवाज़ कड़की।

हाँफते—छाती पीटते धुनिया हाजिर हुआ, “खमा अन्नदाता!”

“खमा नहीं..... वजह बताओ।” राजा गुस्से से काँप रहा था, “तुम चारों ने मिलकर इस गवरइया का काम किया। हमारे लिए आज तक ऐसा काम क्यों नहीं किया?”

“आपके लिए भी किया है, सरकार।” धुनिए ने ज़मीन पर लेटकर कहा,
“आगे भी आपके लिए करेंगे, सरकार?”

“हमारे लिए अब तक जो काम हुआ है उसमें इतनी नफासत क्यों नहीं थी?”

“अभय दान दें, तो बोलूँ, सरकार!” धुनिया बोला।

“चलो दिया,” राजा बोले, “अब बताओ।”

“महाराज! इस गवरइया ने जो भी काम करवाया उसमें आधा हिस्सा दे देती थी। जिसके पास बहुत कुछ है, वह कुछ भी नहीं देता। इसके पास कुछ भी नहीं था फिर भी यह आधा दे देती थी। इसीलिए इसके काम में अपने—आप नफासत आती गई, सरकार।” धुनिया दंडवत पर दंडवत किए जा रहा था।

“देख ले—देख ले, राजा!..... आँख में अँगुली डालकर देख ले। इसके लिए पूरे मोल चुकाए हैं। बेगार की नहीं है यह।” गवरइया फिर चिल्लाने लगी, “यह राजा तो कंगाल है। निरा कंगाल। इसका धन घट गया लगता है। इसे टोपी तक नहीं जुरती तभी तो इसने मेरी टोपी छीन ली।”

राजा तो वाकई अकबका गया था। एक तो तमाम कारीगरों ने उसकी मदद की थी। दूसरे, इस टोपी के सामने अपनी टोपी की कमसूरती। तीसरे, खजाने की खुलती पोल। इस पाखी को कैसे पता चला कि धन घट गया है? तमाम बेगार करवाने, बहुत सख्ती से लगान वसूलने के बावजूद राजा का खजाना खाली ही रहता था। इतना ऐशोआराम, इतनी लशकरी, इतने लवाजिमे का बोझ खजाना सँभाले भी तो कैसे!”

तमाम लोग निकल आए थे..... यह अनोखा तमाशा देखने।

मंत्री ने हौले से कहा, “यह मुँहफट तो महाराज को बेपरदा ही करके दम लेगी।”

राजा तो खुद घबरा रहा था, झट से बोल पड़ा, "इसकी टोपी वापस कर दो।"

सिपाहियों ने कहना माना। टोपी वापस कंगूरे की ओर हवा में उछाल दी गई। गवरइया ने फिर से टोपी पहन ली और उड़-उड़कर कहने लगी, "यह राजा तो डरपोक है। निरा डरपोक! मुझसे डर गया। तभी तो इसने मेरी टोपी लौटा दी।"

"कौन इस मुँहफट के मुँह लगे ? क्यों मंत्री जी!" कहकर राजा ने अपनी टोपी कसकर पकड़ ली।

—सृजय

शब्दार्थ

भिनसार	—	प्रातः काल, सवेरा
खोंते	—	घोंसले
झुटपुटा	—	सवेरे या शाम का समय जब प्रकाश इतना कम हो कि कोई चीज़ साफ़ दिखाई न दे, वह समय जब कुछ — कुछ अँधेरा और कुछ-कुछ उजाला हो
लटजीरा	—	चिचड़ा, एक पौधा
सरापा	—	सिर से पाँव तक पहना जाने वाला वस्त्र
सकत	—	शक्ति, सामर्थ्य
लफड़ा	—	उलझन, झंझट
फकत	—	केवल
अपन	—	अपना

फिकर	—	चिंता, फिक्र
मत	—	नहीं
मामूल	—	वह बात जो रोज की जाए, हमेशा की तरह
घूरा	—	कूड़े—करकट का ढेर
चिहाकर	—	चौंककर, चकित होकर
जुगाड़	—	उपाय
मनुहार	—	मनाना
चाम	—	त्वचा, चमड़ा
फोकट	—	मूल्यरहित, मुफ्त
उजरत	—	मजदूरी, मेहनत का बदला, पारिश्रमिक
मल्लार	—	मल्हार, संगीत का एक राग
मुलुक	—	मुल्क, देश
लगुए—भगुए	—	पीछे चलने वाले, मेल—जोल के व्यक्ति
मशगूल	—	व्यस्त
सेंत—मेंत	—	वह काम जिस काम के लिए कुछ देना न पड़ा हो, बिना लाभ
ढरकी	—	कपड़ा बुनते हुए जुलाहे जिससे बाने का सूत फेंकते हैं
गफश	—	गफ्स, घना बुना हुआ
दबीज	—	मोटा, मजबूत
बेगार	—	बिना मजदूरी का काम
मूजी	—	दुष्ट

फुँदने	—	सूत, उफन आदि का फूल या फूलगेंदा
हुलस	—	उल्लास, खुशी
इत्ते—सारे	—	इतने सारे
टहलुआ	—	नौकर
फुलेल	—	खुशबूदार तेल
फुँदनेदार	—	फूलगेंदेवाला / गुच्छेदार
फदगुद्दी	—	एक छोटी चिड़िया, गौरैया
पखने	—	पंख
खमा	—	क्षमा
नायाब	—	बहुमूल्य, बेशकीमती
हुनरमंद	—	कुशल, गुणी कारीगर
मानिंद	—	जैसा, अनुरूप, सरीखा
नफासत	—	सज्जा, सजा—सँवरा
जुरती	—	जुटना, एकत्र होना, प्राप्त होना
पाखी	—	पक्षी, चिड़िया
लशकरी	—	पलटन, सेना
लवाजिमा	—	यात्रा आदि में साथ रहने वाला सामान
नगीना	—	सुंदर / नग
अकबकाना	—	भौंचक्का होना, घबराना

प्रश्न—अभ्यास

कहानी से

1. गवरइया और गवरा के बीच किस बात पर बहस हुई और गवरइया को अपनी इच्छा पूरी करने का अवसर कैसे मिला ?
2. गवरइया और गवरे की बहस के तर्कों को एकत्र करें और उन्हें संवाद के रूप में लिखें।
3. टोपी बनवाने के लिए गवरइया किस-किस के पास गई ? टोपी बनने तक के एक-एक कार्य को लिखें।
4. गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने क्यों जड़ दिए ?

कहानी से आगे

1. किसी कारीगर से बातचीत कीजिए और परिश्रम का उचित मूल्य नहीं मिलने पर उसकी प्रतिक्रिया क्या होगी ? ज्ञात कीजिए और लिखिए।
2. गवरइया की इच्छापूर्ति का क्रम घूरे पर रुई के मिल जाने से प्रारंभ होता है। उसके बाद वह क्रमशः एक-एक कर कई कारीगरों के पास जाती है और उसकी टोपी तैयार होती है। आप भी अपनी कोई इच्छा चुन लीजिए। उसकी पूर्ति के लिए योजना और कार्य-विवरण तैयार कीजिए।
3. गवरइया के स्वभाव से यह प्रमाणित होता है कि कार्य की सफलता के लिए उत्साह आवश्यक है। सफलता के लिए उत्साह की आवश्यकता क्यों पड़ती है, तर्क सहित लिखिए।

अनुमान और कल्पना

1. टोपी पहनकर गवरइया राजा को दिखाने क्यों पहुँची जबकि उसकी बहस गवरा से हुई और वह गवरा के मुँह से अपनी बड़ाई सुन चुकी थी। लेकिन राजा से उसकी कोई बहस हुई ही नहीं थी। फिर भी वह राजा को चुनौती देने पहुँची। कारण का अनुमान लगाइए।
2. यदि राजा के राज्य के सभी कारीगर अपने-अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त कर रहे होते तब गवरइया के साथ उन कारीगरों का व्यवहार कैसा होता ?
3. चारों कारीगर राजा के लिए काम कर रहे थे। एक रजाई बना रहा था। दूसरा अचकन के लिए सूत कात रहा था। तीसरा बागा बुन रहा था। चौथा राजा की सातवीं रानी की दसवीं संतान के लिए झब्बे सिल रहा था। उन चारों ने राजा का काम रोककर गवरइया का काम क्यों किया ?

भाषा की बात

1. गाँव की बोली में कई शब्दों का उच्चारण अलग होता है। उनकी वर्तनी भी बदल जाती है। जैसे गवरइया गौरैया का ग्रामीण उच्चारण है। उच्चारण के अनुसार इस शब्द की वर्तनी लिखी गई है। फुँदना, फुलेंदा का बदला हुआ रूप है। कहानी में अनेक शब्द हैं जो ग्रामीण उच्चारण में लिखे गए हैं, जैसे—मुलुक—मुल्क, खमा—क्षमा, मजूरी—मजदूरी, मल्लार—मल्हार इत्यादि। आप क्षेत्रीय या गाँव की बोली में उपयोग होनेवाले कुछ ऐसे शब्दों को खोजिए और उनका मूल रूप लिखिए, जैसे—टेम—टाइम, टेसन/टिसन—स्टेशन।
2. मुहावरों के प्रयोग से भाषा आकर्षक बनती है। मुहावरे वाक्य के अंग होकर प्रयुक्त होते हैं। इनका अक्षरशः अर्थ नहीं बल्कि लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है। पाठ में अनेक मुहावरे आए हैं। टोपी को लेकर तीन मुहावरे हैं; जैसे—कितनों को टोपी पहनानी पड़ती है। शेष मुहावरों को खोजिए और उनका अर्थ ज्ञात करने का प्रयास कीजिए।

सूरदास के पद

18

भैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी ?
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी ।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों, है है लाँबी—मोटी ।
काढ़त—गुहत न्हावत जैहै, नागिन—सी भुईँ लोटी ।
काँचौ दूध पियावत पचि—पचि, देति न माखन—रोटी ।
सूर चिरजीवौ दोउ भैया, हरि—हलधर की जोटी ।



तेरैं लाल मेरौ माखन खायौ ।
दुपहर दिवस जानि घर सूनो ढूँढ़ि—ढँढ़ोरि आपही आयौ ।
खोलि किवारि, पैठि मंदिर मैं, दूध—दही सब सखनि
खवायौ ।
ऊखल चढ़ि, सींके कौ लीन्हौ, अनभावत भुईँ मैं ढरकायौ ।
दिन प्रति हानि होति गोरस की, यह ढोटा कौनैं ढँग लायौ ।
सूर स्याम कौं हटकि न राखे तैं ही पूत अनोखौ जायौ ।



शब्दार्थ

अजहूँ	—	आज भी	हरि—हलधर	—	कृष्ण—बलराम
बल	—	बलराम	जोटी	—	जोड़ी
बेनी	—	चोटी	पैठि	—	घुसकर
है	—	होगी	सींके	—	छींका जिसमें दूध —दही आदि रखा
काढ़त	—	बाल बनाना			जाता है
गुहत	—	गूँथना	गोरस	—	गाय के दूध से बने
भुईँ	—	पृथ्वी, भूमि			पदार्थ दही, मक्खन, घी
लोटी	—	लौटने लगी			आदि
ढोटा	—	लड़का	पचि—पचि	—	बार—बार

प्रश्न—अभ्यास

पदों से

1. बालक श्रीकृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए ?
2. श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या—क्या सोच रहे थे ?
3. दूध की तुलना में श्रीकृष्ण कौन—से खाद्य पदार्थ को अधिक पसंद करते हैं ?
4. 'तैं ही पूत अनोखौ जायौ' — पंक्तियों में ग्वालन के मन के कौन—से भाव मुखरित हो रहे हैं ?
5. मक्खन चुराते और खाते समय श्रीकृष्ण थोड़ा—सा मक्खन बिखरा क्यों देते

हैं?

6. दोनों पदों में से आपको कौन-सा पद अधिक अच्छा लगा और क्यों ?

अनुमान और कल्पना

1. दूसरे पद को पढ़कर बताइए कि आपके अनुसार उस समय श्रीकृष्ण की उम्र क्या रही होगी ?
2. ऐसा हुआ हो कभी कि माँ के मना करने पर भी घर में उपलब्ध किसी स्वादिष्ट वस्तु को आपने चुपके-चुपके थोड़ा-बहुत खा लिया हो और चोरी पकड़े जाने पर कोई बहाना भी बनाया हो। अपनी आपबीती की तुलना श्रीकृष्ण की बाल लीला से कीजिए।
3. किसी ऐसी घटना के विषय में लिखिए जब किसी ने आपकी शिकायत की हो और फिर आपके किसी अभिभावक (माता-पिता, बड़ा भाई-बहिन इत्यादि) ने आपसे उत्तर माँगा हो।

भाषा की बात

1. श्रीकृष्ण गोपियों का माखन चुरा-चुराकर खाते थे, इसलिए उन्हें माखन चुरानेवाला भी कहा गया है। इसके लिए एक शब्द दीजिए।
2. श्रीकृष्ण के लिए पाँच पर्यायवाची शब्द लिखिए।
3. कुछ शब्द परस्पर मिलते-जुलते अर्थवाले होते हैं, उन्हें पर्यायवाची कहते हैं। और कुछ विपरीत अर्थवाले भी। समानार्थी शब्द पर्यायवाची कहे जाते हैं और विपरीतार्थक शब्द विलोम, जैसे—

पर्यायवाची — चंद्रमा-शशि, इंदु, राकेश

मधुकर—भ्रमर, भौंरा, मधुप

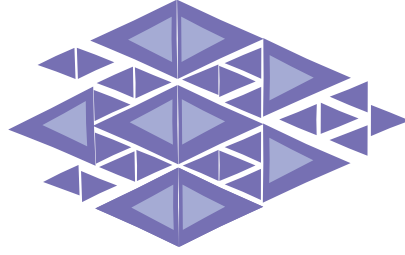
सूर्य—रवि, भानु, दिनकर

विपरीतार्थक — दिन—रात

श्वेत—श्याम

शीत—उष्ण

पाठों से दोनों प्रकार के शब्दों को खोजकर लिखिए।



विद्यार्थी जीवन में योग का महत्त्व

19

योग एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे स्वस्थ तन में स्वस्थ मन का वास होता है स्वस्थ मन से स्वस्थ व्यक्तित्व का निर्माण होता है, अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण हम योग शिक्षा से ही कर सकते हैं इससे हमारे राष्ट्र का विकास, समृद्धि और पूरे वैभव को वापस कर सकते हैं। अगर हमारा तन और मन स्थिर होंगे तो हमारा मन इंद्रियों को नियंत्रित करने में सक्षम होगा और मन विकारों में नहीं भटकेगा तथा शारीरिक तौर पर ऊर्जा का संचार होगा। योग क्रिया हमारे देश में आदि अनादि काल से चलती आ रही है। हम सौभाग्यशाली हैं हमें उस देश में जन्म लेने का सौभाग्य मिला, जिस देश में योग क्रियाएँ अनादि काल से चलती आ रही है। हमारे पूर्वजों ने योग के माध्यम से अपने आप को चिरकाल तक युवा, स्वस्थ, आलस्य रहित और स्फूर्तिवान बनाए रखा। अगर कहा जाए यह झूठ नहीं होगा समस्त रोगों का विनाश अगर कोई कर सकता है तो वह योग है। तन की शुद्धि और मन की शुद्धि योग के अभ्यास के द्वारा ही हो सकती है। नियमित योगाभ्यास हमारे शरीर के सभी दोषों को ठीक करने में सक्षम है। योग मन को शांत कर विद्यार्थियों की एकाग्रता तथा कार्य करने की क्षमता को बढ़ाने में बहुत प्रभावी सिद्ध होता है। वर्तमान समय में हमारी जीवन शैली में अनेक परिवर्तन आए हैं, जिसका प्रभाव शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर देखा जा सकता है। आजकल विद्यार्थी शारीरिक

भागदौड़ कम करते हैं और टी.वी. व मोबाइल से चिपके रहते हैं। अतः मोबाइल व टी. वी. देखने तथा व्यायाम ना करने के कारण किशोरों व युवाओं में शारीरिक एवं मानसिक दोष पैदा हो जाते हैं और वे अपने लक्ष्य से चूक जाते हैं।

विद्यार्थी को अपने जीवन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शारीरिक व मानसिक दोषों को योग व व्यायाम के माध्यम से दूर करना चाहिए।

अत्यधिक विद्यार्थियों में अक्सर निम्नलिखित समस्याएँ देखने को मिलती हैं।

1. पाचनतंत्र की दुर्बलता

विद्यार्थी बहुत बार ठीक से भोजन नहीं करते और ना ही योग की क्रियाएँ करते हैं जिसके कारण उनके शरीर में अनेकों रोग पनपते हैं। कभी कुछ बच्चे आधी रोटी खा लेते हैं तो कुछ बच्चे कम खाते हैं, जिसके कारण उनके पाचन क्रिया पर प्रभाव पड़ता है।

थकान, सिर दर्द, गर्दन में अकड़न, आँखों में दर्द आदि युवाओं में असमानताएँ देखने को मिलती हैं। इन्हीं शारीरिक रोगों के कारण बच्चा मानसिक तनाव में आ जाता है जिसके कारण विद्यार्थियों की पढ़ाई में अड़चन आने से वे पीछे चूक जाते हैं।

2. उचित दिनचर्या का अभाव

वर्तमान समय में बच्चे देर रात तक जागते हैं और सुबह देर से उठते हैं, बाहर का भोजन खाना अधिक पसंद करते हैं। जंक फूड जैसे खाद्य पदार्थों का अधिक सेवन करते हैं जिससे उनका शरीर और मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ने लगता है।

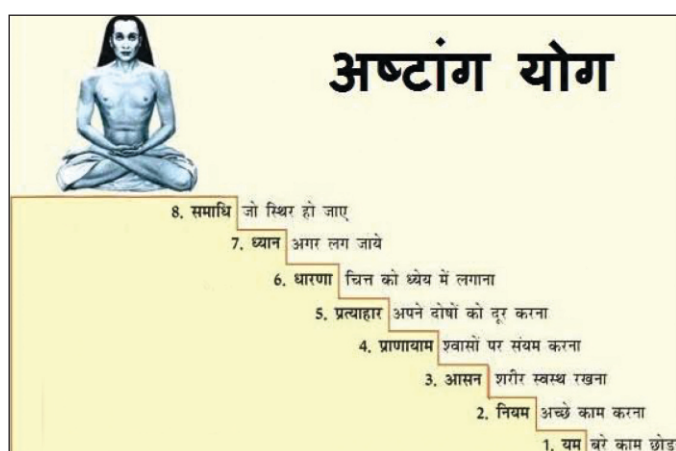
3. परीक्षा का भय

विद्यार्थी अनुचित कार्यों में अपना समय व्यर्थ घुमाते हैं और जैसे ही परीक्षा के पल नज़दीक आने लगते हैं मानसिक स्तर पर भयभीत होने लगते हैं और परीक्षा के दबाव में अपना संतुलन बिगाड़ देते हैं।

4. एकाग्रता का अभाव

आजकल के समय में युवाओं में एकाग्रता का अभाव देखा जाने लगा है क्योंकि भौतिक सुविधाओं के कारण बच्चों की एकाग्रता में कमी आना निश्चित है ऐसे में जब टी.वी., इंटरनेट, मोबाइल आदि की उपलब्धता के कारण बच्चे अधिकतर समय बर्बाद कर देते हैं और जब पढ़ाई की बात आती है, उनका ध्यान फिर इन्हीं उपकरणों की ओर चला जाता है जिसके कारण उनकी एकाग्रता में कमी आती है। क्योंकि बच्चे इनका उपयोग नकारात्मक रूप से अधिक करते हैं जिससे उनकी मानसिक क्षमता में भारी गिरावट आ जाती है तथा पुस्तक हाथ में लेते ही मन इधर-उधर भटकने लगता है।

योग को ही अष्टांग योग या राजयोग कहा जाता है। योग के उक्त आठ अंगों में ही सभी तरह के योग का समावेश हो जाता है। योग के आठ अंग होते हैं



इसलिए इसको अष्टांग योग भी कहते हैं— अष्टांग योग अर्थात् योग के आठ अंग। यह आठ अंग हैं— (1) यम, (2) नियम, (3) आसन, (4) प्राणायाम, (5) प्रत्याहार, (6) धारणा, (7) ध्यान,

(8) समाधि । उक्त आठ अंगों के अपने-अपने उप अंग होते हैं ।

1) यम — वाचिक तथा मानसिक इस संयम के लिए अहिंसा, सत्य, असत्य, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य जैसे अपरिग्रह आदि पाँच आचार निहित हैं । इनका पालन न करने से व्यक्ति का जीवन और समाज दोनों ही दुष्प्रभावित होते हैं ।

(2) नियम — मनुष्य को कर्तव्य परायण बनाने तथा जीवन को सुव्यवस्थित करने हेतु नियमों का विधान किया गया है । इनके अंतर्गत शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर परिधान का समावेश है । इसमें बाह्य तथा आंतरिक दोनों ही प्रकार की शुद्धि का वर्णन है ।

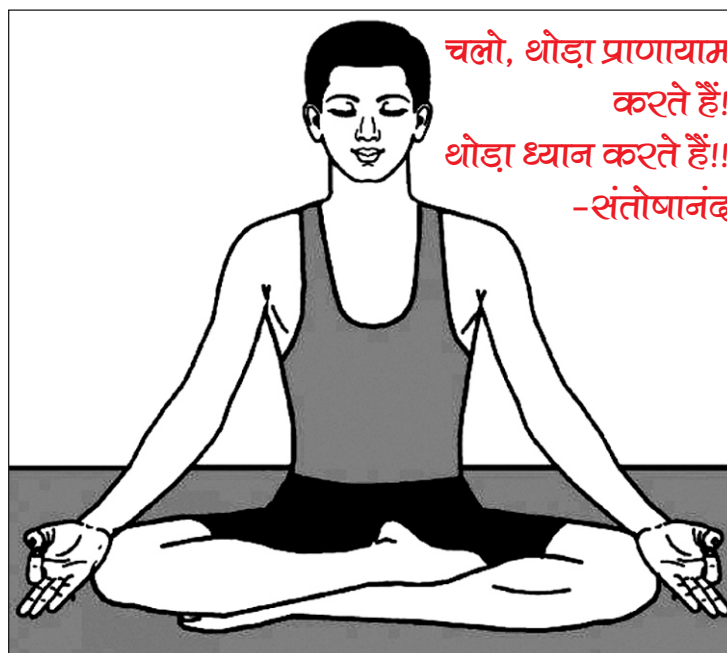
(3) आसन — स्थिर तथा सुखपूर्वक बैठने की क्रिया को आसन कहा है । प्राचीन विचारकों ने अनेक आसनों की कल्पना की है ।

(4) प्राणायाम — प्राणायाम मन की चंचलता पर विजय प्राप्त करने के लिए बहुत सहायक है ।

(5) प्रत्याहार — इंद्रियों को विषयों से हटाने का नाम ही प्रत्याहार है ।

इंद्रियाँ मनुष्य को विमुख

किया करती हैं । प्रत्याहार के इस नियमित अभ्यास से साधक अंतर्ध्यान की स्थिति



प्राप्त करता है।

(6) धारणा — चित्त को एक स्थान विशेष पर केंद्रित करना ही धारणा है।

(7) ध्यान — जब ध्येय वस्तु का चिंतन करते हुए मन स्थिर हो जाता है तो उसे ध्यान कहते हैं। पूर्ण ध्यान की स्थिति में किसी अन्य वस्तु का ज्ञान अथवा उसकी स्मृति मन में प्रविष्ट नहीं होती।

(8) समाधि — यह मन की अवस्था है जिसमें मन ध्येय वस्तु के चिंतन में पूरी तरह लीन हो जाता है। योग दर्शन समाधि के द्वारा ही मोक्ष प्राप्ति को संभव मानता है।

यम नियम से हम मानसिक और शारीरिक तैयारी करते हैं। शारीरिक शुद्धि और मानसिक शुद्धि यम नियम द्वारा आती है। आसन से शारीरिक अभ्यास होता है। प्राणायाम होता है साँसों के द्वारा मन को स्थिर करने का अभ्यास, साँसों के द्वारा मन को ध्यान की ओर केंद्रित करना। यम नियम आसन और प्राणायाम के द्वारा प्रत्याहार का निर्माण होता है। ध्यान केंद्रित करने का अभ्यास योग से ही आता है। धारणा का मतलब संकल्प से है, जिस चीज़ के बारे में सोच कर संकल्प ले लेते हैं तब ध्यान केंद्रित हो जाता है, तब कोई विकल्प नहीं रहता है जब कोई विकल्प नहीं रहता है तब मन नियंत्रित हो जाता है। जब मन बिलकुल ध्यानिस्ट हो जाता है तभी समाधि लगती है। योग सिर्फ आसन, ध्यान या प्राणायाम नहीं है यह जीवन जीने की कला है। जिनकी जीवन शैली दोषपूर्ण है उनके जीवन का विकास संतुलित नहीं हो सकता। समय पर उठना, सोना, खाना, पीना सब योग की क्रियाएँ हैं।

विद्यार्थियों के लिए योग इतना आवश्यक है जितना के छोटे पौधे के लिए हवा

और पानी। बाल्यावस्था में अगर बच्चे को योग शिक्षा दी जाती है तो उस पर उसका प्रभाव अधिक पड़ेगा। उतना ही शरीर को अधिक लाभ पहुँचेगा और वैसे भी बच्चों का शरीर बड़ों की तुलना में ज्यादा लचकदार होता है इसलिए बच्चे चीज़ों को जल्दी और आसानी से ग्रहण कर सकते हैं। ध्यान केंद्रित करने का अभ्यास योग से ही आता है। जब ध्यान केंद्रित हो जाता है तो पाठ को सरलता से याद किया जा सकता है।

1. बाल्यावस्था से ही योग की शिक्षा देने से किशोर अवस्था तक विद्यार्थी अभ्यस्त हो जाता है, निपुणता आ जाती है। योग से चिंतन मनन करने से विद्यार्थी स्मरण में जाता है और अगर चिंतन मनन ना हो तो स्मरण ना के बराबर होता है। नियमित योग के द्वारा चिंतन और मनन बढ़ता है। किशोरावस्था में योग की शिक्षा दी जाती है तो सीखने में पाँच छः वर्ष लग जाते हैं और बाल्यावस्था में मन के भटकाव के विषय बहुत कम होते हैं क्योंकि उनकी आवश्यकताएँ बहुत कम होती हैं। लेकिन किशोरावस्था में आते-आते उसकी आवश्यकताएँ बढ़ जाती हैं और मन का भटकाव भी बढ़ जाता है। क्योंकि किशोरावस्था एक ऐसी कड़ी है जिस कड़ी में बच्चे के शरीर और मन में अनेकों बदलाव आते हैं नए सपने जन्म लेते हैं। पढ़ाई का बोझ भी बढ़ जाता है कभी-कभी विपरीत परिस्थितियों से भी गुजरना पड़ता है ऐसे में मन को सकारात्मक दिशा देने में योग शिक्षा अहम भूमिका निभाती है। किशोर अवस्था में बच्चा हमउम्र समूहों के साथ रहना अधिक पसंद करता है, संगति अच्छी ना हो तो जीवन चौपट हो सकता है। लेकिन बाल्यावस्था से ही अगर बच्चा योग शिक्षा ग्रहण करता है तो किशोरावस्था तक पहुँचते अभ्यस्त हो

जाता है उसके मन में भटकाव नहीं होता। उसके मानोभाव बदल जाते हैं। उसके मन के भीतर सकारात्मक ऊर्जा के बहाव की हिलोरें लेना शुरू हो जाती हैं क्योंकि इस अवस्था में किशोर शैक्षणिक दबाव, प्रतिस्पर्धा, व्यक्तिगत शंकाएँ, क्रोध, आवेग किशोरों को चिंतित और कुंठित कर निराशा में बदल देते हैं और कभी-कभी विद्यार्थी मानसिक रोगों का शिकार हो जाता है। इस अवस्था से बचने का एक ही सूत्र है वो है योग। योग से ही प्रतिस्पर्धाओं से लड़ने में शक्ति मिलती है। यौगिक जीवन शैली विद्यार्थी जीवन के लिए बहुत ही उपयोगी है। इसी को देखते हुए आजकल सरकारी और निजी स्कूलों में योग शिक्षकों की नियुक्ति की गई है और हर साल सभी स्कूलों और कॉलेजों में इक्कीस जून को योग दिवस मनाया जाता है। यह अच्छा संकेत है, आज भारतवासी योग को लेकर सजग हो रहे हैं।

शब्दकोश

- | | | |
|---------------|---|---|
| 1. स्वास्थ्य | — | सेहत, तंदरुस्ती, तबीयत |
| 2. व्यक्तित्व | — | व्यक्ति का गुण या भाव |
| 3. समृद्धि | — | सम्पन्नता, धनधान्यपूर्णता, खुशहाली |
| 4. वैभव | — | धन—दौलत, नियामत, नेमत |
| 5. एकाग्रता | — | तल्लीनता, तल्लीन होने की अवस्था या भाव |
| 6. पाचनतंत्र | — | शरीर में अंगों का वह समूह जो भोजन पचाता है। |
| 7. दिनचर्या | — | दैनिक क्रियाकलाप, रोज का काम |

प्रश्न—अभ्यास

- प्र1. विद्यार्थी जीवन में योग का क्या महत्व है ?
- प्र2. वर्तमान समय में विद्यार्थियों में कौन—सी समस्याएँ देखने को मिलती हैं ?
- प्र3. 'अष्टांग' शब्द का अर्थ स्पष्ट करें।
- प्र4. 'अष्टांग' शब्द के कितने अंग / भाग हैं ? विस्तार से उनको स्पष्ट करें।
- प्र5. योग से विद्यार्थियों को क्या लाभ होगा ?
- प्र6. योग का आरम्भ कौन—सी अवस्था में कर देना चाहिए ?

योग्यता विस्तार

1. आप सब विद्यार्थी योग को अपनी दिनचर्या में लायें। अपने मित्रों को भी योग करने के लिए प्रेरित करें।
2. योग के आठ अंगों के बारे में और विस्तार से पढ़ें तथा अपने परिवार के सदस्यों से इस बारे में बात करें।

सीस पगा न झँगा तन में, प्रभु! जाने को आहि बसे केहि ग्रामा ।
 धोती फटी—सी लटी दुपटी, अरु पाँय उपानह को नहिं सामा ।।
 द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक, रह्यो चकिसों बसुधा अभिरामा ।
 पूछत दीनदयाल को धाम ? बतावत आपनो नाम सुदामा ।।

ऐसे बेहाल बिवाइन सों, पग कंटक जाल लगे पुनि जोए ।
 हाय! महादुख पायो सखा, तुम आए इतै न कितै दिन खोए ।।
 देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोए ।
 पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए ।।

कछु भाभी हमको दियो, सो तुम काहे न देत ।
 चाँपि पोटरी काँख में, रहे कहो केहि हेतु ।।

आगे चना गुरुमातु दए ते, लए तुम चाबि हमें नहिं दीने ।
 स्याम कह्यो मुसकाय सुदामा सों, "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने ।।
 पोटरि काँख में चाँपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधा रस भीने ।

पाछिलि बानि अजौ न तजो तुम, तैसई भाभी के तंदुल कीन्हें ।।”

वह पुलकनि, वह उठि मिलनि, वह आदर की बात ।

वह पठवनि गोपाल की, कछू न जानी जात ।।

घर—घर कर ओड़त फिरे, तनक दही के काज ।

कहा भयो जो अब भयो, हरि को राज—समाज ।

हौं आवत नाहीं हुतौ, वाही पठयो ठेलि ।।

अब कहिहौं समुझाय कै, बहु धन धरौ सकेलि ।।

वैसोई राज—समाज बने, गज, बाजि घने मन संभ्रम छायो ।

कैधों परयो कहूँ मारग भूलि, कि फैरि कै मैं अब द्वारका आयो ।।

भौन बिलोकिबे को मन लोचत, अब सोचत ही सब गाँव मझायो ।

पूँछत पाँडे फिरे सब सों पर, झोपरी को कहूँ खोज न पायो ।।

कै वह टूटी—सी छानी हती, कहँ कंचन के अब धाम सुहावत ।

कै पग में पनही न हती, कहँ लै गजराजहु ठाढ़े महावत ।।

भूमि कठोर पै रात कटै, कहँ कोमल सेज पर नींद न आवत ।

कै जुरतों नहिं कोदो—सवाँ, कहँ प्रभु के परताप तें दाख न भावत ।।

—नरोत्तमदास

शब्दार्थ

पगा	—	पगड़ी	परात	—	थाली की तरह का
झँगा	—	ढीला कुरता			पीतल आदि धातु से
आहि	—	है			बना एक बड़ा और
लटी	—	लटकना			गहरा बरतन
दुपटी	—	अंगोछा, गमछा	पाछिली	—	पिछला
उपानह	—	जूता	पुलकनि	—	खुशी, उमंग
द्विज	—	ब्राह्मण	पठवनि	—	भेजना, विदाई
चकिसों	—	चकित, विस्मित	बिलोकिबे	—	देखना
वसुधा	—	पृथ्वी	मझायो	—	बीच में
बिवाइन	—	पाँव की एड़ी का	सुहावत	—	सुंदर/भला लगना
		फटना	पनही	—	जूता
अभिरामा	—	सुंदर	महावत	—	हाथीवान
जोए	—	ढूँढना	जूरत	—	जुटना, प्राप्त होना

प्रश्न—अभ्यास

कविता से

1. सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई ? अपने शब्दों में लिखिए।

2. "पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए ।" पंक्ति में वर्णित भाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।
3. "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने ।"
 - (क) उपर्युक्त पंक्ति कौन, किससे कह रहा है ?
 - (ख) इस कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए ।
 - (ग) इस उपालंभ (शिकायत) के पीछे कौन-सी पौराणिक कथा है ?
4. द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा मार्ग में क्या-क्या सोचते जा रहे थे ? वह कृष्ण के व्यवहार से क्यों खीझ रहे थे ? सुदामा के मन की दुविधा को अपने शब्दों में प्रकट कीजिए ।
5. अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नहीं खोज पाए तब उनके मन में क्या-क्या विचार आए ? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।
6. निर्धनता के बाद मिलनेवाली संपन्नता का चित्रण कविता की अंतिम पंक्तियों में वर्णित है । उसे अपने शब्दों में लिखिए ।

कविता से आगे

7. द्रुपद और द्रोणाचार्य भी सहपाठी थे, इनकी मित्रता और शत्रुता की कथा महाभारत से खोजकर सुदामा के कथानक से तुलना कीजिए ।
8. उच्च पद पर पहुँचकर या अधिक समृद्ध होकर व्यक्ति अपने निर्धन माता-पिता-भाई — बंधुओं से नजर फेरने लग जाता है, ऐसे लोगों के लिए सुदामा चरित्र कैसी चुनौती खड़ी करता है ? लिखिए ।

अनुमान और कल्पना

1. अनुमान कीजिए यदि आपका कोई अभिन्न मित्र आपसे बहुत वर्षों बाद मिलने आए तो आपको कैसा अनुभव होगा ?
2. कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीति ।
विपति कसौटी जे कसे तेई साँचे मीत ।।
इस दोहे में रहीम ने सच्चे मित्र की पहचान बताई है। इस दोहे से सुदामा चरित की समानता किस प्रकार दिखती है? लिखिए।

भाषा की बात

“पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सो पग धोए”

ऊपर लिखी गई पंक्ति को ध्यान से पढ़िए। इसमें बात को बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ाकर चित्रित किया गया है। जब किसी बात को इतना बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है तो वहाँ पर अतिशयोक्ति अलंकार होता है। आप भी कविता में से एक अतिशयोक्ति अलंकार का उदाहरण छाँटिए।

कुछ करने को

1. इस कविता को एकांकी में बदलिए और उनका अभिनय कीजिए।
2. कविता का उच्च सस्वर वाचन का अभ्यास कीजिए।
3. ‘मित्रता’ संबंधी दोहों का संकलन कीजिए।

शब्दकोश

इस शब्दकोश से आपको इस पुस्तक के पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ समझने में सहायता मिलेगी। नीचे बाईं ओर कठिन शब्द तथा दाईं ओर उसका अर्थ दिया गया है।

कहीं—कहीं शब्दों के अनेक पर्याय भी दिए गए हैं। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे। यह शब्दकोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में मदद करेगा अपितु शब्दों की सही वर्तनी भी सिखाएगा। शब्द का अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया गया है। व्याकरण की दृष्टि से कोई शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि शब्दों में से किस भेद का है, यह सूचना आपको इस संकेताक्षर से मिलेगी। यहाँ जो संकेताक्षर अथवा रूप प्रयुक्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं—

अ.	—	अव्यय	अ.क्रि.	—	अकर्मक क्रिया
क्रि.	—	क्रिया	क्रि.वि.	—	क्रिया विशेषण
पु.	—	पुलिंग	फा.	—	फारसी
मु.	—	मुहावरा	वि.	—	विशेषण
सं.	—	संज्ञा	स.क्रि.	—	सकर्मक क्रिया
सर्व.	—	सर्वनाम	स्त्री.	—	स्त्रीलिंग

इस शब्दकोश में अपेक्षित शब्द का अर्थ ढूँढ़ना शुरू करने से पहले यह उचित होगा कि शब्दकोश देखने की सही विधि आप जान लें। इसके लिए नीचे लिखे बिंदुओं को ध्यान में रखना होगा—

1. जिस शब्द के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है, उसके प्रारंभ का वर्ण देखा जाता है। उसके आधार पर ही शब्द ढूँढा जाता है।
2. शब्दकोश में शब्दों को इस वर्ण-अनुक्रम में दिया जाता है—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ के पश्चात क से ह तक के सही वर्ण क्रम अनुसार।
3. क्ष, त्र, ज्ञ को ह के बाद नहीं ढूँढना चाहिए। क्ष, क् और ष का संयुक्त रूप है। अतः क से शुरू होने वाले शब्दों के समाप्त होने पर क्ष से प्रारंभ होने वाले शब्द देखे जा सकते हैं।
4. त्र, त् और र का संयुक्त रूप है। अतः त्र से शुरू होने वाले शब्द त से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढे जाने चाहिए। 'त' से संबंधित शब्द जब समाप्त हो जाते हैं तब त्र से आरंभ होनेवाले शब्द देखे जा सकते हैं।
5. ज्ञ, ज और ञ का संयुक्त रूप है। अतः ज्ञ से शुरू होने वाले शब्दों को ज से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढना चाहिए। ज से संयुक्त होकर बनने वाला पहला वर्ण ज्ञ ही है। अतः जौहरी के बाद ही ज्ञ से बनने वाले शब्द देखे जा सकते हैं। ज्ञ के बाद ज्य से बनने वाले शब्द आते हैं।

शब्दार्थ

अंत्येष्टि	—	स्त्री. (सं.) मृतक कर्म, दाह कर्म
अकबकाना	—	वि. भौंचक्का होना, घबराना
अजीबो—गरीब	—	वि. अनोखा
अपन	—	सर्व. अपना
असीम	—	वि. जिसकी कोई सीमा न हो, अपार

अहमियत	—	वि. (अ.) महत्त्व
आँकना	—	क्रि. अनुमान लगाना
आपा	—	पु. (सं.) अहं
आलम	—	पु. (अ.) दुनिया, माहौल
आलीशान	—	(वि.) शानदार
आवाजाही	—	(स्त्री.) आना—जाना
आदि	—	अ.क्रि है
इत्ते सारे	—	वि. इतने सारे
ईज़ाद	—	क्रि. खोज, अन्वेषण
उजरत	—	वि. (अ.) मज़दूरी, मेहनत का बदला, पारिश्रमिक
उजागर	—	वि. प्रकट करना
उपानह	—	पु. जूता
एसएमएस	—	अ. लघु संदेश सेवा
कर	—	पु. (सं.) हाथ, टैक्स
कसर	—	स्त्री. (अ.) घाटा पूरा करना, कमी
काढ़त	—	अ.क्रि. बाल बनाना
किरदार	—	पु. अभिनेता की भूमिका, चरित्र
कुमक	—	स्त्री. (फा.) फौजी टुकड़ी
कोर्ट मार्शल	—	पु. फौजी अदालत में सज़ा सुनाने की तरह

खपत	—	स्त्री. माल की बिक्री
खमा	—	स्त्री. क्षमा
खयाल	—	पु. (फा.) विचार
खिताब	—	पु. (अ.) उपाधि, सम्मान
खुराफाती	—	वि. शरारती
खोंते	—	पु. घोंसले
गंतव्य	—	वि. (सं.) स्थान जहाँ किसी को जाना हो
गफश	—	वि. गफ्स, घना बुना हुआ
गात	—	पु. शरीर
गारी	—	स्त्री. माली, अपशब्द
गुडविल	—	अ. सुनाम, अच्छी छवि
गुहत	—	स.क्रि. गूँथना
गोता	—	पु. (अ.) पानी में डूबना
गोरस	—	पु. दूध, दही, मक्खन, घी आदि
घमासान	—	पु. घोर, भयानक
घिसीपिटी	—	वि. जो बहुत दिनों से चला आ रहा हो, पुरानी
घूरा	—	पु. कूड़े—करकट का ढेर
चकिसों	—	वि. चकित, विस्मित
चाम	—	पु. त्वचा, चमड़ा
चाव	—	स्त्री. चाह, तीव्र इच्छा

चारपाई	—	स्त्री. खाट, छोटा पलंग
चिहाकर	—	स.क्रि. चौंककर, चकित होकर
जायजा	—	पु. (अ.) जाँच—परख
जुगाड़	—	पु. उपाय
जुरत (जुरअत)	—	स्त्री. बहादुरी, साहस
जुरती	—	अ.क्रि. जुटना, एकत्र होना, प्राप्त होना
जोए	—	पु. ढूँढना, देखना, खोजना
जोटी	—	स्त्री. जोड़ी
झँगा	—	पु. ढीला कुरता
झुटपुटा	—	पु. सवेरे या शाम का समय जब प्रकाश इतना कम हो कि कोई चीज़ साफ़ दिखाई न दे, वह समय जब कुछ—कुछ अँधेरा और कुछ—कुछ उजाला हो
टहलुआ	—	पु. नौकर
डलिया	—	स्त्री. बाँस का बना एक छोटा पात्र
डमलफाँसी	—	पु. आजीवन कारावास का दंड, देश निकाला
डिस्क फॉर्म	—	रिकॉर्डिंग का एक रूप
ढरकी	—	स्त्री. कपड़ा बुनते हुए जुलाहे जिससे बाने का सूत फेंकते हैं, भरनी
ढँढोरि	—	(नारी जाति संज्ञा) अस्थायी निवास, कच्चे मकानों की बस्ती जो गाँव से कुछ दूर बनी हो

ढाँढस	—	पु. दिलासा, धीरज
ढोटा	—	पु. लड़का
तंद्रालस	—	स्त्री. (सं.), वि. (सं.) नींद से अलसाया हुआ
तनख्वाह	—	स्त्री. (फा.) वेतन, पगार
तरकारी	—	स्त्री. सब्जी
तह	—	स्त्री. (फा.) गहराई
ताउम्र	—	पु. (सं.) स्त्री, (अ.) उम्र भर
दड़बे	—	पु. मुर्गियों के रहने की जगह
दबीज	—	वि. (फा.) मोटा, मजबूत
दबैल	—	वि. दब्बू
दस्तावेज़	—	स्त्री. (फा.) प्रमाण संबंधी कागज़ात, प्रमाण पत्र
दहुँ	—	पु. दस
दालान	—	पु. बरामदा
दुपटी	—	स्त्री. अंगोछा, गमछा
दुहेली	—	स्त्री. दुख, दुख में पड़ा हुआ, कष्ट साध्य
दिसि	—	स्त्री. दिशा
द्विज	—	पु. (सं.) ब्राह्मण
धर्मभीरु	—	पु. (वि.) जिसे धर्म छूटने का भय हो, अधर्म से डरने वाला
धींगा—मुश्ती	—	वि. (स्त्री.) धक्का—मुक्की, लड़ना—भिड़ना,

शरारत

धुआँधार	—	पु. (वि.) ताबड़तोड़
नगीना	—	सं. (पु.) सुंदर, नग
नफासत	—	स्त्री. सज्जा, सजा—सँवरा
न्योता	—	पु. निमंत्रण
नाजुक	—	वि. (फा.) कोमल
नायाब	—	वि. बहुमूल्य, बेशकीमती
निद्रित	—	वि. (सं.) सोया हुआ
निमित्त	—	पु. (सं.) कारण
पखने	—	पु. पंख
पगड़ी	—	स्त्री. सिर पर लपेटी जाने वाली कपड़े की लंबी पट्टी
पगा	—	पु. पगड़ी
पचि—पचि	—	पु. बार—बार
पटकथा	—	पु. फिल्म के लिए लिखी जाने वाली कहानी
पठवनि	—	स.क्रि. भेजना, विदाई
पनही	—	स्त्री. जूता
परात	—	स्त्री. थाली की शक्ल का पीतल आदि का एक बड़ा और गहरा बरतन
पर्दाफाश	—	पु. भेद खोलना, दोष प्रकट करना

पाँख	—	पु. पंख, पर
पाखी	—	पु. पक्षी, चिड़िया
पाछिली	—	वि. पिछला
पात	—	पु. पत्ता
पार्श्वगायक	—	वि. (सं), पु. (सं.) पर्दे के पीछे से गाने वाला
पैतृक	—	वि. (सं.) पूर्वजों का, पिता से प्राप्त
प्रत्यूष	—	पु. (सं.) प्रातः काल, भोर
प्रयाण	—	पु. (सं.) प्रस्थान, मरना
प्रशस्ति पत्र	—	स्त्री. (सं.) पु. प्रशंसा पत्र
फकत	—	वि.(अ.) केवल
फदगुद्दी	—	स्त्री. एक छोटी चिड़िया, गौरैया
फबना	—	अ. क्रि. सजना, शोभा देना
फब्ती	—	स्त्री. चोट करने वाली या चुभती बात
फरमान	—	पु. (फा.) राजाज्ञा
फिकर	—	स्त्री. चिंता, फिक्र
फुँदने	—	पु. सूत, ऊन आदि का फल या गुच्छा
फुँदनेदार	—	पु. गुच्छेदार
फुलेल	—	पु. खुशबूदार तेल
फैंटसी	—	व. काल्पनिक
फोकट	—	वित्र मूल्यरहित, मुफ्त

बटालियन	—	स्त्री. (सं.) पलटन
बल	—	पु. (सं.) बलराम, ताकत
बाँचना	—	स.क्रि. चढ़ना, सस्वर पढ़ना
बियाबान	—	पु. जंगल, उजाड़खंड
बिलोकिबे	—	स. क्रि. देखना, अवलोकन करना
बिवाइन	—	स्त्री. पाँव की चमड़ी का फटना
बेगार	—	स्त्री. (फा.) बिना मजदूरी का काम
बेनी	—	स्त्री. (सं.) चोटी
बैरी	—	पु. दुश्मन
भगोने—डोंगे	—	पु. भोजन पकाने के बर्तन
भिनसार	—	पु. प्रातः काल, सवेरा
भुई	—	स्त्री. (सं.) पृथ्वी, भूमि
मचिया	—	स्त्री. सुतली
मत	—	पु. नहीं
मनुहार	—	पुत्र मनाना
मरहम—पट्टी	—	पु. (अ.) स्त्री. ज़ख्म का इलाज़, घाव पर दवा लगाकर पट्टी बाँधना
मल्लार	—	पु. (अ.) मल्हार, संगीत का एक राग
मशगूल	—	वि. (अ.) व्यस्त
महावत	—	पु. हाथीवान

मातम	—	पु. (अ.) शोक मनाना
मानिंद	—	वि. (फा.) जैसा, अनुरूप, सरीखा
मामूल	—	वि. (अ.) वह बात जो रोज़ की जाए, हमेशा की तरह
मुँगरी	—	सं. गोल, मुठियादार लकड़ी जो ठोकने—पीटने के काम आती है
मुँडेर	—	पु. (सं.) छत के आस—पास बनाई जाने वाली दीवार
मुखातिब	—	वि. (अ.) देखकर बात करना
मुलुक	—	पु. मुल्क, देश
मुस्तैद	—	वि. तत्पर, तैयार रहना
मूजी	—	वि. (सं.) दुष्ट
म्यान	—	पु. (फा.) तलवार रखने का कोष
मोरी	—	स्त्री. नाली, गंदे पानी की नाली
यकीन	—	पु. (अ.) विश्वास
लगुए—भगुए	—	वि. पीछे चलने वाले, मेल—जोल के व्यक्ति
लटजीरा	—	पु. चिचड़ा, एक पौधा
लटी	—	स्त्री. लटकी हुई, लटकना
लथपथ	—	वि. सना हुआ , तर
लफड़ा	—	पु. उलझन, झंझट

लवाजिमा	—	पु. (अ.) यात्रा आदि में साथ रहने वाला सामान
लशकरी	—	पु. (फा.) पलटन, सेना
लश्टम—पश्टम	—	अ. अंट—शंट, अव्यवस्थित रूप
लोटी	—	क्रि. लोटने लगेगी
वर्णनातीत	—	वि. जिसका वर्णन न किया जा सके
वसुधा	—	स्त्री. पृथ्वी
वाकई	—	क्रि.वि. बिल्कुल, सचमुच
विनिमय	—	पु. (सं.) अदल—बदल, वस्तुओं की अदल—बदल
वियोग	—	पु. (सं.) बिछुड़ना, विरह, विछोह, विच्छेद
शिखर	—	पु. पहाड़ की चोटी
संवाद	—	पु. (सं.) फिल्म में की जाने वाली बातचीत
सकत	—	स्त्री. शक्ति, सामर्थ्य
सरापा	—	अ. (फा.) सिर से पाँव तक पहना जाने वाला वस्त्र
सलाख	—	स्त्री. सलाई, धातु की छड़
सवाक् फिल्म	—	पु. (सं.) मूक फिल्म के बाद बनी बोलती फिल्म
साँसत	—	कठिनाई में पड़ना, बहुत बड़ा कष्ट
सांगोपांग	—	वि. (सं.) पूरी तरह, ऊपर से नीचे तक
सिटपिटाना	—	अ.क्रि. भय या घबराहट से सहम जाना

सिलसिला	—	वि. संबंध, कड़ी
सिवा	—	अ. (अ.) सिवाय, अलावा, अतिरिक्त
सींके	—	पु. छींका जिसमें दूध—दही आदि रखा जाता है
सुमिरन	—	क्रि. ईश्वर के नाम का जप (भक्ति का एक प्रकार), स्मरण
सुहावत	—	वि. सुंदर, भला लगना
सूरज	—	पु. सूर्य, रवि, दिनकर
सेंत—मेंत का काम	—	स्त्री. (अ.) वह काम जिसके लिए कुछ देना न पड़ा हो, बिना लाभ का काम
सौरभ	—	पु. सुगंध, सुवास
स्वच्छंद	—	पु. अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला
हटकि	—	स्त्री. मनाही
हरकारा	—	पु. दूत, डाकिया, संदेश पहुँचाने वाला
हरि—हलधर	—	पु. (सं.) कृष्ण—बलराम
हस्ती	—	वि. (सं.) अस्तित्व
हवाला	—	पु. (सं.) उल्लेख करना, उद्धरण
हुलस	—	अ.क्रि. उल्लास
हुनरमंद	—	पु. (फा.) वि. कुशल, गुणी कारीगर
हैसियत	—	स्त्री. (सं.) दरजा
हौले से	—	अ. धीरे से

